अपराधों को जानिए, सुरक्षित रहिए

मनोहर कहानियां

Ⓜ

मार्च, 2021 ₹ 40/-

5 लाख का
ईनामी पपला
और
प्यार की कच्ची डोर

रंगीन सपनों का
संगीन जहर

गोली पर लिखा प्यार

रोनित रॉय का
टीवी पर
नया शो
जुर्म और जज़्बात

shemaroo TV
बदलते आज के लिए

लालच की इंतहा

कलेजे की कील

VISIT…

LANZAROTE
Caliente.com

Piramal

टेटमोसोल से रोज़ नहाना मतलब त्वचा के इन्फेक्शन^ को दूर भगाना!

खुजली
चकत्ते
फोड़े
पपड़ी
से राहत दे
Monosulfiram Medicated Soap
TETMOSOL®
contains Monosulfiram 5% w/w
Prescribed by Doctors
डॉक्टर का सुझाया
No.1
ब्रैंड#
Monosulfiram Medicated Soap
TETMOSOL®
contains Monosulfiram 5% w/w
Prescribed by Doctors
नींबू जैसी ताज़ी महक

CMAC - TE/20210125-34

अपने सुझावों तथा सवालों के लिए, हमारे कंस्यूमर केयर अफसर से इस टोल फ्री नंबर 1800 22 9898 पर या consumercare@piramal.com पर सम्पर्क करें।
सूचना: ^खुजली (स्केबीज़) के कणो द्वारा हुए संक्रमण के लिए। स्थिति में सुधार न होने पर, डॉक्टर से सलाह ले। संक्रमन की संभावना तक रोज़ाना स्नान करें।
#खाज और खुजली की दवाइयों की श्रेणी में डॉक्टरो द्वारा निर्धारित किया गया, MAT May 2020 में किये गए IMS प्रिस्क्रिप्शन ऑडिट पर आधारित।

सभी प्रमुख मेडिकल स्टोर्स पर उपलब्ध।

STOMAFIT®

Tablets & Liquid

SUNCARE

A WHO GMP COMPANY
SURE SAFE SECURE

सुनो जी, दही भल्ला, पापड़ी, गुजिया, पकौड़े बनवा तो लिए हो इतना पकवान! पेट का भी करो थोड़ा ध्यान! कल छुट्टी लेके मत कर लेना अपना नुकसान।
खाएँगे, पीयेंगे, खेलेंगे रंग, टेन्शन काहे की जब स्टोमाफिट है संग!

Instant Relief from Indigestion & Acidity
SUNCARE
BISMUTH TABLETS
STOMAFIT®
CHEWABLE
PROTECTIVE COATING ACTION
60 CHEWABLE TABLETS
ANTACID LIQUID WITH BISMUTH & BELLADONNA
STOMAFIT
LIQUID
PROTECTIVE COATING ACTION

SUNCARE
हेमोकॉल
आयरन टोनीक फोलिक ऐसीड के साथ
HAEMOCAL
Iron & Folic Acid Tonic
300 ml

Delicious Orange Taste

हेमोकॉल

बेहतरीन स्वाद

ग्लूकोज़ से भरपूर आयरन टॉनिक

- भूख न लगना
- अनीमिया (शरीर में खून की कमी)
- त्वचा का सफेद दिखना
- जीभ, नाखूनो के अंदर सफेदी।
- कमजोरी एवं बहुत अधिक थकावट
- सांस फूलना व हृदयगति का तेज होना।

उपरोक्त लक्षणों में तुरंत इस्तेमाल में लीजिए

हेमोकॉल आपके शरीर में खून की कमी को दूर करता है, इसका ओरेंज फ्लेवर काफी स्वादिष्ट है। इसमें आयरन व फोलिक ऐसिड का भंडार है जो कि कमज़ोरी को आपकी जिंदगी से बाहर कर देता है। पहली खुराक से ही फायदा मिलेगा

Now Available on 1mg

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें:

सनकेयर फार्मूलेशन्स प्रा. लि.

फोन:8447977889/999, 011-46108735, मेल:info@stomafit.com फ्री होम डिलीवरी 8447977999

मार्च
2021

मनोहर कहानियां

टिप्पणी, घटना की सूचना, समाचार, रिपोर्ट, जौब्स के लिए : manoharkahaniyanmonthly@gmail.com
☎ 08527666775
08527750077

वार्षिक ग्राहक : subscription@delhipress.in Phone : 08488843408 (Mon to Saturday 10 AM to 6 PM)

06. **रंगीन सपनों का संगीन जहर**
सुनील वर्मा

14. **5 लाख का ईनामी पपला बंधा प्यार की कच्ची डोर से**
निखिल

22. **लौकडाउन ने खोली पौर्न फिल्मों की राह**
प्रतिनिधि

32. **आशुतोष पांडेय अलग सोच, अलग राह**
सुनील वर्मा

38. **मौज मजे में चली कटार**
विजय सोनी

46. **गोली पर लिखा प्यार**
आर. के. राजू

50. **सुधार के लिए दुनिया की बेहतरीन जेल**
पुष्कर पुष्प

54. **लालच की इंतहा**
विजय पांडेय/श्वेता पांडेय

62. **बेहाल प्रेमी**
नितिन कुमार शर्मा

66. **रवि पुजारी : एक बड़बोला डौन**
वीरेंद्र बहादुर सिंह

72. **सीमा ढाका दिल्ली की साइलैंट सिंघम**
सुनील वर्मा

74. **कलेजे की कील**
अशोक शर्मा

78. **रिश्तों से बड़ी मोहब्बत**
सुरेशचंद्र मिश्र

जानकारी

45. **36 करोड़ का मालिक कुत्ता**

06 रंगीन सपनों का संगीन जहर

गौरव हलधर डाक्टरी की पढ़ाई कर रहा था. जैसे दूसरे युवा रंगीन सपने देखते हैं, गौरव भी देखता था, सोचता था उस की भी कोई गर्लफ्रैंड हो. फोन के माध्यम से जब डा. प्रीति उस से जुड़ी तो उसे लगा कि उस के सपनों की रानी मिल गई. डा. अभिषेक जानता था कि गौरव के पिता एक प्रतिष्ठित डाक्टर हैं और उन से बेटे के बदले मोटी रकम मिल सकती है. जब डा. अभिषेक के कहने पर डा. प्रीति ने रंगीन सपनों में अपनी जवानी का रस घोलना शुरू किया तो गौरव उस का दीवाना हो कर ट्रैप में फंस गया. गौरव का अपहरण कर के उसे नोएडा ले आया गया. लेकिन भला हो नोएडा एसटीएफ का जिस ने...

14 प्यार की कच्ची डोर

22 लौकडाउन ने खोली पौर्न फिल्मों की राह

आवश्यकता है: राजधानियों और बड़े शहरों में 'मनोहर कहानियां/सत्यकथा' के लिए फ्रीलांस संवाददाताओं की. संपर्क करें : editor@delhipress.biz

शोभिका मीडिया प्राइवेट लिमिटेड के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक परेशनाथ द्वारा ई-8, दिल्ली प्रैस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, नई दिल्ली-110055 से प्रकाशित एवं पीएसपीसी प्रैस प्राइवेट लिमिटेड, दिल्ली प्रैस, डीएलएफ 50, इंडस्ट्रीयल एरिया, फेस-1, फरीदाबाद हरियाणा-121003 से मुद्रित. संपादक:परेशनाथ (वौ-6, अंक-5)
संपादकीय, वितरण एवं एजेंसी कार्यालय : ई-8, दिल्ली प्रैस बिल्डिंग, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055, **संपादकीय विभाग :** पुष्कर पुष्प

वार्षिक ग्राहक: दिल्ली प्रकाशन वितरण प्रा.लि., ई-8, झंडेवालान एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली- 110055. फोन: 91-11-41398888 Extn. No. 119, 221, 264 **मुंबई कार्यालय:** बी-3, वडाला उद्योग भवन, नायगांव क्रौस रोड, वडाला, मुंबई. फोन: 91-22-24122661/43473050

मनोहर कहानियां

संपादकीय

इधर एक साल में साइबर क्राइम तेजी से बढ़ा है, ठगी और जबरन वसूली के ऐसेऐसे रूप सामने आ रहे हैं, जिस की कल्पना भी नहीं की जा सकती. लालच दे कर अथवा बैंकों या अन्य जानीमानी कंपनियों से मिलतेजुलते ऐसे लिंक भेजे जाते हैं कि कुछ लोग समझ ही नहीं पाते और जाल में फंस जाते हैं. इधर लिंक पर क्लिक किया और उधर खाता खाली. पिछले दिनों एक चीनी ऐप खूब चर्चाओं में रहा जो जरूरतमंद लोगों को मोटे ब्याज पर 4-6 या 10-12 हजार रुपए देता था और एक्सटोर्शन की तर्ज पर हजारों यहां तक कि लाख से ज्यादा वसूली करता था. इस मामले में कई लड़केलड़कियों ने तो आत्महत्या तक कर ली.

एक्सटोर्शन यानी जबरन वसूली की तर्ज पर साइबर खिलाड़ियों ने एक नया रास्ता निकाला है सैक्सटोर्शन (सैक्सुअल ब्लैकमेलिंग से वसूली) का. सैक्सटोर्शन ने दिल्ली और एनसीआर में पैर पसारने शुरू कर दिए हैं. इस के जाल में कितने लोग फंसे या फंसेंगे, यह तो नहीं कहा जा सकता लेकिन साइबरसेल के पास सैक्सटोर्शन की दरजन भर से ज्यादा शिकायतें दर्ज हो चुकी हैं.

सैक्सटोर्शन में दरअसल होता यह है कि जब कोई नियमित रूप से या कभीकभी पोर्न साइट या अश्लील कंटेंट देखता है तो उस पर हैकर्स की नजर जम जाती है. वह उस व्यक्ति की सर्फिंग डिटेल्स बैकअप सौफ्टवेयर के जरिए रिकौर्ड करते रहते हैं. फिर वह ऐसी साइटों के विजिटर्स की सोशल मीडिया एकाउंट से ईमेल खोज कर उस पर मेल भेजते हैं, जिस में ब्राउजिंग हिस्ट्री होती है कि उस ने अश्लील साइट पर क्या देखा, कब देखा. बस यहीं से एक्सटोर्शन शुरू होता है.

इस के लिए किसी सुंदर महिला की तसवीर लगा कर फरजी प्रोफाइल बनाई जाती है. फिर फेसबुक पर फ्रैंड रिक्वेस्ट, मैसेंजर पर मैसेज और वाट्सऐप पर हाय लिख कर भेजते हैं. इस के लिए अपोजिट सैक्स बन कर एप्रोच की जाती है, जो अधिकांशतः फीमेल बन कर मेल को भेजते हैं. कुछ मामलों में फीमेल को हाईप्रोफाइल शख्सियत बन कर मैसेज भेजे जाते हैं ताकि वह झांसे में आ जाए.

अगर सोशल मीडिया प्लैटफार्म पर किसी के पास अनजान फ्रैंड रिक्वेट आती है और प्रोफाइल में दिख रही सुंदर महिला की रिक्वेस्ट एक्सेप्ट कर ली जाती है तो चैट शुरू हो जाती है. यही चैट कुछ दिनों में घुलमिल कर न्यूड फोटो, वीडियोज तक पहुंच जाती है. सैक्सटोर्शन गिरोह इस का पूरा रिकौर्ड अपने पास रखता है. मसलन, उस ने कब कितने न्यूड फोटो भेजे, कितनी सैक्स चैट की. अच्छाभला संग्रह करने के बाद सैक्सटोर्शन की शुरुआत होती है. इस सब को सोशल मीडिया पर वायरल कर के या पब्लिकली करने की धमकी दे कर पैसे मांगे जाते हैं, मोटी रकम के रूप में. कई बार सैक्सुअल डिमांड भी होती है. वैसे ज्यादातर पैसा ही मांगा जाता है, वह भी औनलाइन.

पिछले दिनों साइबर सैल ने भरतपुर, राजस्थान के रहने वाले 6 युवकों को गिरफ्तार किया था. ये लोग सोशल मीडिया पर फेक फीमेल एकाउंट बना कर दोस्ती करने के बाद लोगों को फांसते थे. वीडियो रिकौर्ड करते थे. फिर उसे एडिट कर के ब्लैकमेलिंग करते थे. इन के एकाउंट में एक्सटोर्शन से प्राप्त 25 लाख रुपए मिले. यह गिरोह अब तक 40 लोगों को अपना शिकार बना चुका था.

दिल्ली साइबर सैल के डीसीपी अन्येष राय के अनुसार, सोशल मीडिया पर शुरुआत अश्लील चैटिंग से होती है जो जल्दी ही वीडियो कालिंग तक पहुंच जाती है. वीडियो कालिंग के समय हैकर दूसरे डिवाइस से रिकौर्ड करते हैं. फिर उसे एडिट कर के पोर्न फिल्म में तब्दील कर देते हैं.

दिल्ली एनसीआर की एक लड़की जिसका नाम नहीं दिया जा सकता, एक सैक्सटोर्शन गिरोह के जाल में फंस गई. जब दोनों ओर से बात आगे बढ़ी तो वीडियो काल पर सैक्स ऐक्ट होने लगा. लड़की की आंखें तब फटी रह गईं जब उसे उस की एक न्यूड वीडियो भेजी गई, जिस में वह सैक्स ऐक्ट कर रही थी. इस वीडियो के साथ धमकी दे कर उस से मोटी रकम मांगी गई थी. उस की समझ में नहीं आया क्या करे. बस पुलिस की शरण ही बची थी, वहीं गई भी.

साइबर सैल के डीसीपी अन्येष राय का कहना है कि सैक्सटोर्शन तेजी से फैल रहा है, इस समय साइबर सैल के पास ऐसे एक दरजन से ज्यादा केस हैं, जिन पर इनवैस्टीगेशन चल रहा है. ऐसे जाल में फंसे लोग संकोच न करें और पैसे देने के बजाय पुलिस के पास आएं. अगर रकम दे भी दी गई तो उस वीडियो का दोबारा इस्तेमाल हो सकता है.

नोएडा, उत्तर प्रदेश

रंगीन सपनों का संगीन जहर

❑ सुनील वर्मा

गौरव हलधर डाक्टरी की पढ़ाई करतेकरते प्रीति मेहरा के जाल में ऐसा फंसा कि जान के लाले पड़ गए. डा. प्रीति को गौरव को रंगीन सपने दिखाने की जिम्मेदारी उस के ही साथी डा. अभिषेक ने सौंपी थी. भला हो नोएडा एसटीएफ का जिस ने समय रहते...

अपहृत डाक्टरी का छात्र गौरव हलधर

छायांकन: मॉडलिंग

एसटीएफ औफिस नोएडा में एसपी कुलदीप नारायण सिंह डीएसपी विनोद सिंह सिरोही के साथ बैठे किसी का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे. तभी अचानक दरवाजा खुला और सामने वर्दी पर 3 स्टार लगाए एक इंसपेक्टर प्रकट हुए. उन्होंने अंदर आने की इजाजत लेते हुए पूछा, ''मे आई कम इन सर.''

''इंसपेक्टर सुधीर...'' कुलदीप सिंह ने सवालिया नजरों से आगंतुक की तरफ देखते हुए पूछा.

''यस सर.''

''आओ सुधीर, हम लोग आप का ही इंतजार कर रहे थे.'' एसपी कुलदीप सिंह ने सामने बैठे विनोद सिरोही का परिचय कराते हुए कहा, ''ये हैं हमारे डीएसपी विनोद सिरोही. आप के केस को यही लीड करेंगे. जो भी इनपुट है आप इन से शेयर करो फिर देखते हैं क्या करना है.''

कुछ देर तक उन सब के बीच बातें होती रहीं. उस के बाद कुलदीप सिंह अपनी कुरसी से खड़े होते हुए बोले, ''विनोद, मैं एक जरूरी मीटिंग के लिए मेरठ जा रहा हूं. आप दोनों केस के बारे में डिस्कस करो. हम लोग लेट नाइट मिलते हैं.''

इस बीच उन्होंने एसटीएफ के एएसपी राजकुमार मिश्रा को भी बुलवा लिया था. कुलदीप सिंह ने उन्हें निर्देश दिया कि गौरव अपहरण कांड में अपहर्त्ताओं को पकड़ने में वह इस टीम का मार्गदर्शन करें.

एसपी के जाते ही वे एक बार फिर बातों में मशगूल हो गए. सुधीर कुमार सिंह डीएसपी विनोद सिरोही और एएसपी मिश्रा को उस केस के बारे में हर छोटीबड़ी बात बताने लगे, जिस के कारण उन्हें पिछले 24 घंटे में यूपी के गोंडा से ले कर दिल्ली के बाद नोएडा में स्पैशल टास्क फोर्स के औफिस का रुख करना पड़ा था.

इस से 2 दिन पहले 19 जनवरी, 2021 की बात है. उत्तर प्रदेश के गोंडा जिले के एसपी शैलेश पांडे के औफिस में सन्नाटा पसरा हुआ था. क्योंकि मामला बेहद गंभीर था और पेचीदा भी.

पड़ोसी जिले बहराइच के पयागपुर थाना क्षेत्र के काशीजोत की सत्संग नगर कालोनी के रहने वाले डा. निखिल हलधर का बेटा गौरव हलधर गोंडा के हारीपुर स्थित एससीपीएम कालेज में बीएएमएस प्रथम वर्ष का छात्र था. वह कालेज के हौस्टल में रहता था.

गौरव 18 जनवरी की शाम तकरीबन 4

बजे से गायब था. इस के बाद गौरव को न तो हौस्टल में देखा गया न ही कालेज में.

18 जनवरी की रात को गौरव के पिता डा. निखिल हलधर के मोबाइल फोन पर रात करीब 10 बजे एक काल आई. काल उन्हीं के बेटे के फोन से थी, लेकिन फोन पर उन का बेटा गौरव नहीं था.

फोन करने वाले ने बताया कि उस ने गौरव का अपहरण कर लिया है. गौरव की रिहाई के लिए आप को 70 लाख रुपए की फिरौती देनी होगी. जल्द पैसों का इंतजाम कर लें, वह उन्हें बाद में फोन करेगा.

डा. निखिल हलधर ने कालबैक किया तो फोन गौरव ने नहीं, बल्कि उसी शख्स ने उठाया, जिस ने थोड़ी देर पहले बात की थी.

डा. निखिल ने बेटे से बात कराने के लिए कहा तो उस ने उन्हें डांटते हुए कहा, ''डाक्टर, लगता है सीधी तरह से कही गई बात तेरी समझ में नहीं आती. तू क्या समझ रहा है कि हम तुझ से मजाक कर रहे हैं? अभी तेरे बेटे की लेटेस्ट फोटो वाट्सऐप कर रहा हूं देख लेना उस की क्या हालत है. और हां, एक बात कान खोल कर सुन ले, यकीन करना है या नहीं ये तुझे देखना है. यह समझ लेना कि पैसे का इंतजाम जल्द नहीं किया तो बेटा गया तेरे हाथ से. ज्यादा टाइम नहीं है अपने पास.''

अभी तक इस बात को मजाक समझ रहे निखिल हलधर समझ गए कि उस ने जो कुछ कहा, सच है. कुछ देर बाद उन के वाट्सऐप पर गौरव की फोटो आ गई, जिस में वह बेहोशी की हालत में था.

जैसे ही परिवार को इस बात का पता चला कि गौरव का अपहरण हो गया है तो सब हतप्रभ रह गए. निखिल हलधर संयुक्त परिवार में रहते थे. उन के पूरे घर में चिंता का माहौल बन गया.

बात फैली तो डा. निखिल के घर उन के रिश्तेदारों और परिचितों का हुजूम लगना शुरू हो गया. डा. निखिल हलधर शहर के जानेमाने फिजिशियन थे, शहर के तमाम प्रभावशाली लोग उन्हें जानते थे. उन्होंने शहर के एसपी डा. विपिन कुमार मिश्रा से बात की.

उन्होंने बताया कि गौरव गोंडा में पढ़ता था और घटना वहीं घटी है, इसलिए वह तुरंत गोंडा जा कर वहां के एसपी से मिलें.

डा. निखिल हलधर रात को ही अपने कुछ परिचितों के साथ गोंडा रवाना हो गए. 19 जनवरी की सुबह वह गोंडा के एसपी शैलेश पांडे से मिले. शैलेश पांडे को पहले ही डा. निखिल हलधर के बेटे गौरव के अपहरण की जानकारी एसपी बहराइच से मिल चुकी थी.

डा. निखिल हलधर ने शैलेश पांडे को शुरू से अब तक की पूरी बात बता दी. एसपी पांडे ने परसपुर थाने के इंचार्ज सुधीर कुमार सिंह को अपने औफिस में बुलवा लिया था. क्योंकि गौरव जिस एससीपीएम मैडिकल कालेज में पढ़ता था, वह परसपुर थाना क्षेत्र में था.

नालेज पार्क थाना क्षेत्र में एसटीएफ की टीम ने डिजायर कार को ओवरटेक कर के रुकने पर मजबूर कर दिया. खुद को फंसा देख कार में सवार 3 लोग तेजी से उतरे और अलगअलग दिशाओं में भागने लगे. तब तक एसटीएफ तथा गोंडा पुलिस की दूसरी टीम भी वहां पहुंच चुकी थी.

सारी बात जानने के बाद एसपी शैलेश पांडे ने कोतवाली प्रभारी आलोक राव, सर्विलांस टीम के इंचार्ज हृदय दीक्षित तथा स्वाट टीम के प्रभारी अतुल चतुर्वेदी के साथ हैडकांस्टेबल श्रीनाथ शुक्ल, अजीत सिंह, राजेंद्र , कांस्टेबल अमित, राजेंद्र, अरविंद व राजू सिंह की एक टीम गठित कर के उन्हें जल्द से गौरव हलधर को बरामद करने के काम पर लगा दिया.

एसपी पांडे ने टीम का नेतृत्व एएसपी को सौंप दिया. पुलिस टीम तत्काल सुरागरसी में लग गई. पुलिस टीमें सब से पहले गौरव के कालेज पहुंची, जहां उस के सहपाठियों तथा हौस्टल में छात्रों के अलावा कर्मचारियों से जानकारी हासिल की गई.

नहीं मिली कोई जानकारी

मगर गौरव के बारे में पुलिस को कालेज से कोई खास जानकारी नहीं मिल सकी. इंसपेक्टर सुधीर सिंह डा. निखिल हलधर के साथ परसपुर थाने पहुंचे और उन्होंने निखिल हलधर की शिकायत के आधार पर 19 जनवरी, 2021 की सुबह भादंसं की धारा 364ए के तहत फिरौती के लिए अपहरण का मामला दर्ज कर लिया.

एसपी शैलेश पांडे के निर्देश पर इंसपेक्टर सुधीर कुमार सिंह ने खुद ही जांच की जिम्मेदारी संभाली. साथ ही उन की मदद के लिए बनी 6 पुलिस टीमों ने भी अपने स्तर से काम शुरू कर दिया. चूंकि मामला एक छात्र के अपहरण का था, वह भी फिरौती की मोटी रकम वसूलने के लिए. इसलिए सर्विलांस टीम को गौरव हलधर के मोबाइल की काल डिटेल निकालने के काम पर लगा दिया गया.

मोबाइल की सर्विलांस में उस की पिछले कुछ घंटों की लोकेशन निकाली गई तो पता चला कि इस वक्त उस की लोकेशन दिल्ली में है. पुलिस टीमें यह पता करने की कोशिश में जुट गईं कि गौरव का किसी से विवाद या दुश्मनी तो नहीं थी. लेकिन ऐसी कोई जानकारी नहीं मिली.

गौरव और उस से जुड़े लोगों के मोबाइल नंबर को सर्विलांस पर ले लिया गया था. पुलिस की टीमें लगातार एकएक नंबर की

डिटेल्स खंगाल रही थीं. गौरव के फोन की लोकेशन संतकबीर नगर के खलीलाबाद में भी मिली थी.

पुलिस की एक टीम बहराइच तो 2 टीमें खलीलाबाद व गोरखपुर रवाना कर दी गईं. खुद इंसपेक्टर सुधीर सिंह एक पुलिस टीम ले कर दिल्ली रवाना हो गए.

20 जनवरी की सुबह दिल्ली पहुंचने के बाद उन्होंने सर्विलांस टीम की मदद से उस इलाके में छानबीन शुरू कर दी, जहां गौरव के फोन की लोकेशन थी. लेकिन अब उस का फोन बंद हो चुका था इसलिए इंसपेक्टर सुधीर सिंह को सही जगह तक पहुंचने में कोई मदद नहीं मिली.

इस दौरान गोंडा में मौजूद गौरव के पिता डा. निखिल हलधर को अपहर्त्ता ने एक और फोन कर दिया था. उस ने अब फिरौती की रकम बढ़ा कर 80 लाख कर दी थी और चेतावनी दी थी कि अगर 22 जनवरी तक रकम का इंतजाम नहीं किया गया तो गौरव की हत्या कर दी जाएगी.

दूसरी तरफ जब गोंडा एसपी शैलेश पांडे को पता चला कि दिल्ली पहुंची पुलिस टीम को बहुत ज्यादा कामयाबी नहीं मिल रही है तो उन की चिंता बढ़ गई. अंततः उन्होंने एसटीएफ के एडीजी अमिताभ यश को लखनऊ फोन कर के गौरव अपहरण कांड की सारी जानकारी दी और इस काम में एसटीएफ की मदद मांगी.

अमिताभ यश ने एसपी शैलेश पांडे से कहा कि वे अपनी टीम को नोएडा में एसटीएफ के औफिस भेज दें. एसटीएफ के एसपी कुलदीप नारायण गोंडा पुलिस की पूरी मदद करेंगे.

पांडे ने दिल्ली में मौजूद इंसपेक्टर सुधीर सिंह को एसटीएफ के एसपी कुलदीप नारायण से बात कर के उन के पास पहुंचने की हिदायत दी तो दूसरी तरफ एडीजी अमिताभ यश ने नोएडा फोन कर के एसपी कुलदीप नारायण सिंह को गौरव हलधर अपहरण केस की जानकारी दे कर गोंडा पुलिस की मदद करने के निर्देश दिए.

यह बात 20 जनवरी की दोपहर की थी. गोंडा कोतवाली के इंसपेक्टर सुधीर सिंह नोएडा में एसटीएफ औफिस पहुंच कर एसपी एसटीएफ कुलदीप नारायण सिंह तथा डीएसपी विनोद सिरोही से मिले.

डा. प्रीति मेहरा को गिरफ्तार करने के बाद प्रैस कौन्फ्रैंस करते पुलिस अधिकारी

विनोद सिरोही बेहद सुलझे हुए अधिकारी हैं. उन्होंने अपनी सूझबूझ से कितने ही अपहरण करने वालों और गैंगस्टरों को पकड़ा है. उन्होंने उसी समय अपहर्त्ताओं को दबोचने के लिए इंसपेक्टर सौरभ विक्रम सिंह, एसआई राकेश कुमार सिंह तथा ब्रह्म प्रकाश के साथ एक टीम का गठन कर दिया.

काल डिटेल्स से मिले सुराग

अपराधियों तक पहुंचने का सब से बड़ा हथियार इन दिनों इलैक्ट्रौनिक सर्विलांस है. एसटीएफ की टीम ने उसी समय गौरव के फोन की सर्विलांस के साथ उस की सीडीआर खंगालने का काम शुरू कर दिया.

गौरव के फोन की काल डिटेल्स खंगाली तो उस में एक ऐसा नंबर मिला, जिस में उस के फोन पर कुछ दिनों से एक नए नंबर से न सिर्फ काल की जा रही थी, बल्कि यह नंबर गौरव की कौन्टैक्ट लिस्ट में 'माई लव' के नाम से सेव था.

दोनों नंबरों पर 5 से 18 जनवरी तक 40 बार बात हुई थी और हर काल का औसत समय 10 से 40 मिनट था. इस नंबर से गौरव के वाट्सऐप पर अनेकों काल, फोटो, वीडियो का भी आदानप्रदान हुआ था.

इस नंबर के बारे में जानकारी एकत्र की गई तो यह नंबर दिल्ली के एक पते पर पंजीकृत पाया गया. लेकिन जब पुलिस की टीम उस पते पर पहुंची तो पता फरजी निकला.

जब इस नंबर की लोकेशन खंगाली गई तो पुलिस टीम यह जान कर हैरान रह गई कि 18 जनवरी की दोपहर से शाम तक इस नंबर की लोकेशन गोंडा में हर उस जगह थी, जहां गौरव के मोबाइल की लोकेशन थी.

पुलिस टीम समझ गई कि जिस के पास भी यह नंबर है, उसी ने गौरव का अपहरण किया है. पुलिस टीमों ने इसी नंबर की सीडीआर खंगालनी शुरू कर दी. पता चला कि यह नंबर करीब एक महीना पहले ही एक्टिव हुआ था और इस से बमुश्किल 4 या 5 नंबरों पर ही फोन काल्स की गई थीं या वाट्सऐप मैसेज आएगए थे.

एसटीएफ के पास ऐसे तमाम संसाधन और नेटवर्क होते हैं, जिन से वह इलैक्ट्रौनिक सर्विलांस के माध्यम से अपराधियों की सटीक जानकारी एकत्र करने के साथ उन की लोकेशन का भी सुराग लगा लेती है. एसटीएफ ने रात भर मेहनत की. जो भी फोन नंबर इस फोन के संपर्क में थे, उन सभी की कड़ियां जोड़ कर उन की मूवमेंट पर नजर रखी जाने लगी.

रात होतेहोते यह बात साफ हो गई कि अपहर्त्ता नोएडा इलाके में मूवमेंट करने वाले हैं. वे अपहृत गौरव को छिपाने के लिए दिल्ली से किसी दूसरे ठिकाने पर शिफ्ट करना चाहते

हैं. बस इस के बाद सर्विलांस टीमों ने अपराधियों की सटीक लोकेशन तक पहुंचने का काम शुरू कर दिया और गोंडा पुलिस के साथ एसटीएफ की टीम ने औपरेशन की तैयारी शुरू कर दी.

21 जनवरी की देर रात गोंडा पुलिस व एसटीएफ की टीमों ने ग्रेटर नोएडा में यमुना एक्सप्रेसवे जीरो पौइंट के पास अपना जाल बिछा दिया.

पुलिस टीमें आनेजाने वाले हर वाहन पर कड़ी नजर रख रही थीं. किसी वाहन पर जरा भी संदेह होता तो उसे रोक कर तलाशी ली जाती. इसी बीच एक सफेद रंग की स्विफ्ट डिजायर कार पुलिस की चैकिंग देख कर दूर ही रुक गई. उस गाड़ी ने जैसे ही रुकने के बाद बैक गियर डाल कर पीछे हटना और यूटर्न लेना शुरू किया तो पुलिस टीम को शक हो गया.

एसटीएफ की टीम एक गाड़ी में पहले से तैयार थी. पुलिस की गाड़ी उस कार का पीछा करने लगी जो यूटर्न ले कर तेजी से वापस दौड़ने लगी थी.

देखते ही पहचान लिया गौरव को

मुश्किल से एक किलोमीटर तक दौड़भाग होती रही. आखिरकार नालेज पार्क थाना क्षेत्र में एसटीएफ की टीम ने डिजायर कार को ओवरटेक कर के रुकने पर मजबूर कर दिया. खुद को फंसा देख कार में सवार 3 लोग तेजी से उतरे और अलगअलग दिशाओं में भागने लगे.

एसटीएफ को ऐसे अपराधियों को पकड़ने का तजुर्बा होता है. पीछा करते हुए एसटीएफ तथा गोंडा पुलिस की दूसरी टीम भी वहां पहुंच चुकी थी. पुलिस टीमों ने जैसे ही हवाई फायर किए, कार से उतर कर भागे तीनों लोगों के कदम वहीं ठिठक गए.

पुलिस टीमों ने तीनों को दबोच लिया. उन्हें दबोचने के बाद जब पुलिस टीमों ने स्विफ्ट डिजायर कार की तलाशी ली तो एक युवक कार की पिछली सीट पर बेहोशी की हालत में पड़ा था.

इंसपेक्टर सुधीर सिंह युवक की फोटो को इतनी बार देख चुके थे कि बेहोश होने के बावजूद उन्होंने उसे पहचान लिया. वह गौरव ही था. पुलिस टीमों की खुशी का ठिकाना न रहा, क्योंकि अभियान सफल हो गया था.

पुलिस टीमें तीनों युवकों के साथ गौरव व कार को ले कर एसटीएफ औफिस आ गईं. इंसपेक्टर सुधीर सिंह ने गौरव के पिता डा. निखिल व एसपी गोंडा शैलेश पांडे को गौरव की रिहाई की सूचना दे दी. वे भी तत्काल नोएडा के लिए रवाना हो गए.

गौरव के अपहरण में पुलिस ने जिन 3 लोगों को गिरफ्तार किया था, उन में से एक की पहचान डा. अभिषेक सिंह निवासी अचलपुर वजीरगंज, जिला गोंडा के रूप में हुई. वही इस गिरोह का सरगना था और फिलहाल बाहरी दिल्ली के बक्करवाला में डीडीए के ग्लोरिया अपार्टमेंट के फ्लैट नंबर 310 में किराए पर रहता था.

डा. अभिषेक सिंह पेशे से चिकित्सक था और नांगलोई-नजफगढ़ रोड पर स्थित राठी अस्पताल में काम करता था. उस के साथ पुलिस ने जिन 2 अन्य लोगों को गिरफ्तार किया, उन में नीतेश निवासी थाना निहारगंज, धौलपुर, राजस्थान तथा मोहित निवासी परौली, थाना करनलगंज गोंडा शामिल थे. जब उन तीनों से पूछताछ की गई, तो अपहरण की जो कहानी सामने आई, वह काफी दिलचस्प थी.

अपहृत युवक के पिता डा. निखिल हलधर

गौरव को अपनी खूबसूरती के जाल में फंसाने वाली डा. प्रीति मेहरा

डा. अभिषेक सिंह ने गौरव का अपहरण करने के लिए हनीट्रैप का इस्तेमाल किया था. यानी गौरव को पहले एक खूबसूरत लड़की के जाल में फंसाया गया था. जब गौरव खूबसूरती के जाल में फंस गया तो उस का फिरौती वसूलने के लिए अपहरण कर लिया गया.

मूलरूप से गोंडा के अचलपुर का रहने वाला डा. अभिषेक सिंह 2013-2014 में बेंगलुरु के राजीव गांधी यूनिवर्सिटी औफ हेल्थ साइंस से बीएएमएस की पढ़ाई करने के बाद जब अपने शहर लौटा तो उस के दिल में बड़े अरमान थे. डाक्टरी के पेशे से बहुत सारी कमाई करने और बड़ा सा बंगला बनाने के सपने देखे थे. लेकिन कुछ समय बाद ही ये सपने चकनाचूर होने लगे.

अच्छी नौकरी नहीं मिली तो बन गया अपराधी

उसे गोंडा के किसी भी अस्पताल में ऐसी नौकरी नहीं मिली, जिस से अच्छे से गुजरबसर हो सके. छोटेछोटे अस्पतालों में नौकरी करने के बाद तंग आ कर डा. अभिषेक 2018 में दिल्ली आ गया.

यहां कई अस्पतालों में नौकरी करने के बाद वह सन 2019 में नजफगढ़ के राठी

तोता ®

रंग व गुलाल

TOTA ®
★ ★ ★
Herbal Gulal
तन रंग दे
मन रंग दे...

तन रंग दे,
मन रंग दे

हर्बल गुलाल
ऑरगेनिक गुलाल
हर्बल कलर
कलर व स्नो स्प्रे
गुलाल गन
होली गिफ्ट पैक

TOTA
Premium
GOLD
Gulal

TOTA
Skin Friendly
Passion
HERBAL
GULAL

TOTA
LUXURY
GULAL

GDN#9557008899

Toll Free No : 1800 121 7107 www.holicolour.com Email us: info@holicolour.com

मैडिकल छात्र का अपहरण करने वाला मास्टरमाइंड डा. अभिषेक सिंह और उस का सहयोगी नीतेश व मोहित

अस्पताल में नौकरी करने लगा. हालांकि इस अस्पताल में उसे पहले के मुकाबले तो अच्छी तनख्वाह मिलती थी, लेकिन इस के बावजूद वह अपनी जिंदगी से संतुष्ट नहीं था.

इसी दौरान डा. अभिषेक की दोस्ती उसी अस्पताल में काम करने वाली एक लेडी डाक्टर प्रीति मेहरा से हो गई. प्रीति भी बीएएमएस डाक्टर थी. खूबसूरत और जवान प्रीति प्रतिभाशाली थी.

उस के दिल में भी अपना अस्पताल बनाने की महत्त्वाकांक्षा पल रही थी. लेकिन इस सपने को पूरा करने में समर्थ नहीं होने के कारण अक्सर मानसिक परेशानी से घिरी रहती थी. जब अभिषेक से उस की दोस्ती हुई तो लगा कि वे दोनों एक ही मंजिल के मुसाफिर हैं. दोनों की दोस्ती जल्द ही प्यार में बदल गई.

दोनों के सपने भी एक जैसे थे, लाचारी भी एक जैसी थी. लेकिन सपनों को पूरा करने की धुन दोनों पर सवार थी.

पिछली दीपावली पर नवंबर, 2019 में जब अभिषेक अपने घर गोंडा गया तो उस की मुलाकात अपनी बुआ के बेटे रोहित से हुई. बुआ की शादी बहराइच के पयागपुर इलाके में हुई थी. रोहित भी पयागपुर में ही रहता था. रोहित की जानपहचान मोहित सिंह से भी थी. मोहित सिंह गोंडा में रहने वाले अभिषेक के दोस्त राकेश सिंह का साला था.

मोहित दिल्ली के करोलबाग की एक दुकान में काम करता है. रोहित भी मोहित को जानता है. रोहित व मोहित दोनों की जानपहचान एससीपीएम कालेज गोंडा से आयुर्वेदिक चिकित्सा की पढ़ाई कर रहे गौरव हलधर से थी. दोनों ही गौरव के अलावा उस के परिवार के बारे में भी अच्छी तरह से जानते थे.

अभिषेक जब दीपावली पर अपने घर गया तो पयागपुर से बुआ का बेटा रोहित उस के घर आया हुआ था. रोहित के सामने अभिषेक का दर्द छलक गया. शराब पीने के बाद उस ने रोहित से यहां तक कह दिया कि अगर उसे चोरी, डाका या किसी का अपहरण भी करना पड़े तो वह पीछे नहीं हटेगा.

अभिषेक की बात सुनते ही रोहित का माथा ठनक गया. पहले तो उस ने अभिषेक को समझाना चाहा. लेकिन अभिषेक नहीं माना और बोला भाई बस तू एक बार किसी ऐसे शिकार के बारे में बता दे, जिस से मेरा सपना पूरा करने के लिए रकम मिल सकती हो. अभिषेक नहीं माना तो रोहित ने उसे गौरव हलधर के बारे में बताया और उस के पूरे परिवार की जानकारी भी दे दी.

रोहित ने अभिषेक को बताया कि डा. निखिल हलधर का बेटा गौरव गोंडा में ही फर्स्ट ईयर की पढ़ाई कर रहा है. अगर किसी तरीके से उस का अपहरण कर लिया जाए तो फिरौती के रूप में बड़ी रकम मिल सकती है.

डा. अभिषेक ने जब डा. प्रीति मेहरा को गौरव का अपहरण करने की अपनी योजना के बारे में बताया तो उस ने नाराजगी नहीं जताई बल्कि खुश हुई और उस ने ही अपनी तरफ से सुझाव दिया कि गौरव का अपहरण करने में वह खुद उस की मदद करेगी.

प्रीति ने अभिषेक को बताया कि एक जवान लड़के का अगर अपहरण करना हो तो किसी जवान लड़की को उस के सामने चारा बना कर डाल दो, वह खुदबखुद उस जाल में फंस जाएगा.

अभिषेक से उस ने गौरव का नंबर देने के लिए कहा तो अभिषेक ने उसे रोहित से गौरव का नंबर ले कर दे दिया. इस के बाद डा. प्रीति मेहरा ने एक रौंग नंबर के बहाने गौरव को काल कर बातचीत का सिलसिला शुरू कर दिया. पहली ही बार में बात करने के बाद गौरव उस के जाल में फंस गया और दोनों का एकदूसरे से परिचय कुछ ऐसा हुआ कि उस दिन के बाद वे दोनों एकदूसरे से बात करने लगे.

प्रीति मेहरा वीडियो काल के जरिए जब गौरव से बात करती तो कई बार गौरव को अपने नाजुक अंग दिखा कर अपने लिए उसे बेचैन कर देती.

दरअसल, साजिश के इस मुकाम तक पहुंचने से पहले डा. अभिषेक ने इसे अंजाम देने के लिए कुछ लोगों को भी अपने साथ जोड़ लिया था.

करोलबाग में कपड़े की दुकान पर काम करने वाले मोहित को जब अभिषेक ने गौरव का अपहरण करने की योजना बताई और उस

से मदद मांगी तो मोहित ने अभिषेक को अपने एक दोस्त नितेश से मिलवाया.

दरअसल, नितेश व मोहित एक ही जिम में व्यायाम करने के लिए जाते थे. इसीलिए दोनों के बीच दोस्ती थी. नितेश इंश्योरेंस कराने का काम करता था. इंश्योरेंस के साथ वह लोगों के बैंक में खाते खुलवाने से ले कर उन्हें लोन दिलाने का काम करता था. इसीलिए फरजी आईडी से ले कर जाली आधार कार्ड व पैन कार्ड बनाने में उसे महारथ हासिल थी.

मोहित ने उसे मोटी रकम मिलने का सब्जबाग दिखा कर अपहरण की इस वारदात में अपने साथ मिला लिया. इस के बाद नितेश ने 3 आईडी तैयार कीं और उन्हीं आईडी के आधार पर उस ने 3 सिमकार्ड खरीदे. फरजी आईडी से खरीदे गए तीनों सिम कार्ड डा. प्रीति मेहरा, डा. अभिषेक व मोहित ने अपने पास रख लिए.

गोंडा के एसपी शैलेश पांडेय

डा. प्रीति ने तो अपने सिम कार्ड का इस्तेमाल गौरव हलधर से दोस्ती करने के लिए शुरू कर दिया. लेकिन अभिषेक व मोहित ने अपहरण करने से चंद रोज पहले ही अपने सिम कार्ड का इस्तेमाल किया था.

प्रीति मेहरा ने गौरव को अपने प्रेमजाल में इस तरह फंसा लिया कि वह उस के एक इशारे पर कुछ भी करने को तैयार था. जब सब ने यह देख लिया कि शिकार जाल में फंसने का तैयार है तो प्रीति ने गौरव को वाट्सऐप मैसेज दिया कि वह 18 जनवरी को उस से मिलने गोंडा आ रही है.

रोहित भी उस समय दिल्ली आया हुआ था. दिल्ली से स्विफ्ट डिजायर कार ले कर डा. अभिषेक, डा. प्रीति मेहरा, मोहित, रोहित व नितेश गोंडा पहुंच गए.

गोंडा पहुंचने से पहले रोहित बहराइच में ही उतर गया. इधर गोंडा पहुंच कर डा. प्रीति ने एक राहगीर से किसी बहाने फोन ले कर गौरव को मिलने के लिए फोन किया और उस के कालेज से एक किलोमीटर दूर एक जगह पर बुलाया.

प्रीति मेहरा का रंगीन वार

प्रीति के मोहपाश में फंसा गौरव वहां चला आया. गौरव को प्रीति ने अपने साथ कार में बैठा लिया, जहां बैठे बाकी अन्य लोगों ने उसे दबोच कर नशे का इंजेक्शन दे दिया. इस के बाद वे गोंडा से चल दिए. उन की योजना गौरव को संतकबीर नगर के खलीलाबाद में रहने वाले सतीश के घर पर छिपाने की थी. वे वहां पहुंच भी गए, लेकिन बाद में इरादा बदल दिया और कुछ ही देर में कार से दिल्ली के लिए रवाना हो गए.

एसटीएफ डीएसपी विनोद सिरोही

18 जनवरी की रात को ही दिल्ली पहुंच गए. रास्ते में गाजियाबाद के पास उन्होंने गौरव के फोन से गौरव के पिता निखिल को फिरौती के लिए पहला फोन कर 70 लाख की फिरौती की मांग की.

इसके बाद उन्होंने गौरव को अभिषेक के बक्करवाला स्थित डीडीए फ्लैट में छिपा दिया. नितेश या मोहित उसे खाना देने जाते थे और डा. अभिषेक व प्रीति उसे लगातार नशे के इंजेक्शन देते थे ताकि वह होश में आ कर शोर न मचा दे. उन लोगों ने कई बार गौरव के साथ मारपीट भी की.

इधर रोहित ने जब गोंडा व बहराइच में गौरव के अपहरण कांड को ले कर छप रही खबरों के बारे में अभिषेक को बताया कि पुलिस की एक टीम दिल्ली में गौरव की तलाश कर रही है तो अभिषेक ने गौरव को अपने फ्लैट से कहीं दूसरी जगह रखने की योजना बनाई.

इसीलिए डा. अभिषेक मोहित व नितेश के साथ 21 जनवरी की रात को गौरव को बेहोशी का इंजेक्शन दे कर उसे कार से ले कर ग्रेटर नोएडा जा रहा था, तभी पुलिस ने सर्विलांस के जरिए उन की लोकेशन का पता लगा कर उन्हें दबोच लिया.

नितेश के पिता व गोंडा पुलिस के नोएडा पहुंचने के बाद एसटीएफ ने उन्हें गोंडा पुलिस के हवाले कर दिया. इधर पुलिस को जब इस में रोहित व सतीश नाम के 2 और लोगों के शामिल होने की खबर लगी तो गोंडा पुलिस की टीम ने दबिश दे कर उसी रात रोहित व सतीश को भी गिरफ्तार कर लिया.

लेकिन इस पूरे घटनाक्रम की खबर पा कर डा. प्रीति फरार हो चुकी थी. उस की तलाश में एसटीएफ और गोंडा पुलिस ने कई जगह छापे मारे, लेकिन वह पुलिस की पकड़ में नहीं आई.

गोंडा पुलिस ने प्रीति की गिरफ्तारी पर 25 हजार के इनाम की घोषणा की थी. जिस के बाद गोंडा पुलिस ने 1 फरवरी को प्रीति को उस के गांव धौर जिला झज्जर, हरियाणा से गिरफ्तार कर लिया.

मूलरूप से हरियाणा की प्रीति मेहरा वर्तमान में दिल्ली के प्रेमनगर में रहती थी. फिलहाल सभी आरोपी न्यायिक हिरासत में जेल में हैं. कैसी विडंबना है कि सालों की मेहनत के बाद डाक्टर बनने वाले अभिषेक व प्रीति अपने अधूरे ख्वाब को पूरा करने के लिए शार्टकट से पैसा कमाने के चक्कर में जेल की सलाखों के पीछे पहुंच गए.

डीजीपी ने फिरौती के लिए हुए अपहरण कांड का खुलासा कर आरोपियों को गिरफ्तार करने वाली गोंडा पुलिस की टीम को पुरस्कृत करने की घोषणा की है. ●

—कथा पुलिस की जांच, पीड़ित व अभियुक्तों के बयान पर आधारित

जयपुर, राजस्थान

5 लाख का ईनामी पपला और प्यार की कच्ची डोर

❑ निखिल

जिम ट्रेनर जिया ने सोचा भी नहीं होगा कि जिस कसरती जवान से वह इश्क लड़ा रही है, जिस के साथ नया संसार बसाने के सपने देख रही है, वह 5 राज्यों का वांटेड और 5 लाख का ईनामी बदमाश है. जब यह बात उसे पता चली तब बहुत देर हो चुकी थी और उस के भी...

कुख्यात बदमाश विक्रम गुर्जर उर्फ पपला

इसी साल जनवरी में सीनियर आईपीएस अधिकारी हवासिंह घुमरिया ने जब जयपुर रेंज आईजी का पदभार संभाला, तो उन के सामने पपला को पकड़ने की सब से बड़ी चुनौती थी. विक्रम गुर्जर उर्फ पपला कुख्यात बदमाश था, जिस पर पुलिस की ओर से 5 लाख रुपए का इनाम घोषित था.

करीब डेढ़ साल पहले 6 सितंबर, 2019 को अलवर जिले के बहरोड़ पुलिस थाने पर दिनदहाड़े एके 47 से अंधाधुंध फायरिंग कर हथियारबंद बदमाश उसे छुड़ा ले गए थे. तब से वह फरार था. इस से पहले 2017 में वह हरियाणा पुलिस की हिरासत से भाग गया था. इसलिए राजस्थान और हरियाणा पुलिस उस की तलाश कर रही थी, लेकिन उस का कुछ पता नहीं था.

आईजी घुमरिया ने बहरोड़ थाने से पपला की फाइल मंगवा कर उसे कई बार पढ़ा. उन्होंने पपला के बहरोड़ थाने से फरार होने के बाद पकड़े गए उस के गिरोह के साथियों की फाइलें भी पढ़ी. हरियाणा से भी मंगा कर पपला के अपराधों की कुंडलियां खंगाली गईं.

तमाम फाइलों को पढ़ने के बाद आईजी घुमरिया को पक्का विश्वास हो गया कि पपला की पहलवानी का शौक ही उसे पकड़वा सकता है. आईजी

जिम ट्रेनर जिया जिसे पपला ने अपने प्यार के जाल में फांस लिया था

छायांकन: मॉडलिंग

का मानना था कि पपला पहलवानी करता है. इसलिए किसी अखाड़े या जिम में जरूर जाता होगा.

इस आधार पर पुलिस ने राजस्थान के अलावा हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश और दूसरे राज्यों में तमाम अखाड़े और जिम में पपला की तलाश की, लेकिन कोई नतीजा नहीं निकला. अलबत्ता यह जरूर पता चला कि पपला प्रेम प्यार के मामले में कमजोर है. वह कोई न कोई गर्लफ्रैंड जरूर रखता है.

अब पुलिस के पास 2 क्लू थे. एक तो पपला का पहलवानी का शौक और दूसरा उस की इश्कबाजी. इस बीच, जनवरी के तीसरे सप्ताह में आईजी घुमरिया को महाराष्ट्र के कोल्हापुर शहर में रहने वाली युवती जिया उससहर सिगलीगर के बारे में कुछ सुराग मिले. पता चला कि जिया जिम भी चलाती है और पपला की गर्लफ्रैंड हो सकती है.

जिम और गर्लफ्रैंड, इन 2 सुरागों पर आईजी घुमरिया को उम्मीद की किरण नजर आई. उन्होंने चुनिंदा पुलिस अफसरों की स्पैशल 26 टीम बना कर पपला को पकड़ने की जिम्मेदारी सौंपी. एडिशनल एसपी सिद्धांत शर्मा के नेतृत्व में बनाई इस टीम में अलवर और भिवाड़ी पुलिस जिलों के अफसरों और कमांडो को भी शामिल किया गया.

स्पैशल 26 टीम के कुछ पुलिस अफसरों और कमांडो को कोल्हापुर भेजा गया. उन्होंने जिया और उस के जिम का पता लगाया. पुलिस टीम ने कई दिनों की जांचपड़ताल के बाद यह पता लगा लिया कि जिया वाकई पपला की गर्लफ्रैंड है. पपला उसी के साथ कोल्हापुर में रह रहा है.

यकीन हो जाने के बाद आईजी घुमरिया ने स्पैशल 26 टीम के बाकी पुलिस अफसरों और सशस्त्र कमांडो को भी कोल्हापुर भेज दिया. यह टीम अलगअलग हिस्सों में बंट गई. टीम के कुछ सदस्य जिया के जिम वाले मकान की कालोनी में किराएदार बन कर कमरा तलाशने लगे. कुछ सदस्य हैल्थवर्कर बन गए और कोरोना की जांच के बहाने आसपास के मकानों की रैकी करने लगे.

टीम के कुछ सदस्यों ने जिम जौइन करने के बहाने जिया के जिम में अलगअलग समय पर जा कर पूरी टोह ली. जिया जिस मकान में जिम चलाती थी, वह 3 मंजिला था.

3-4 दिन की रैकी और तमाम रूप बदलने के बाद 25 जनवरी को यह निश्चित हो गया कि पपला इसी मकान में रहता है. पपला कोई छोटामोटा अपराधी नहीं था. उस के पास अत्याधुनिक हथियार होने की पूरी संभावना थी. पुलिस टीम ने जिया के मकान और आसपास के इलाकों का वीडियो और फोटो बना कर आईजी घुमरिया को जयपुर भेजे.

आईजी ने स्पैशल 26 टीम के अफसरों से सारे हालात पर चर्चा करने के बाद नीमराना के एडिशनल एसपी राजेंद्र सिंह सिसोदिया को भी कोल्हापुर भेज दिया. औपरेशन पपला की तारीख तय हुई 27 जनवरी.

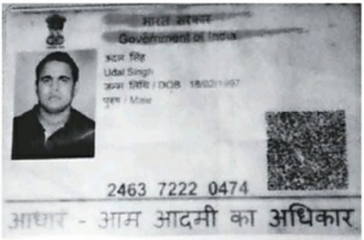

भारत सरकार
Government of India
Udal Singh
पुरुष / Male
2463 7222 0474
आधार - आम आदमी का अधिकार

पपला का ऊदल सिंह के नाम से बना कोल्हापुर का आधार कार्ड

27 जनवरी की आधी रात के करीब स्पैशल 26 टीम ने सादा कपड़ों में जिया के मकान को घेर लिया. एक साथ 25-30 हथियारबंद लोगों को देख कर आसपास रहने वाले लोगों ने उन्हें डकैत समझ लिया और पथराव करना शुरू कर दिया.

हालात बिगड़ सकते थे और डेढ़ साल से आंखों में धूल झोंक रहा पपला फिर भाग सकता था. इसलिए टीम के एडिशनल एसपी सिद्धांत शर्मा ने जयपुर मोबाइल काल कर आईजी घुमरिया को सारी बात बताई. आईजी ने तुरंत कोल्हापुर एसपी से बात की.

कोल्हापुर पुलिस ने मौके पर पहुंच कर कालोनी के लोगों को समझाया, तब तक स्पैशल 26 टीम के कुछ जवान जिया के मकान में तीसरी मंजिल तक पहुंच चुके थे.

हलचल सुन कर एक कमरे में सो रहा पपला जाग गया. हथियारबंद जवानों को देख वह समझ गया कि पुलिस वाले हैं. खुद को पुलिस से घिरा देख कर पपला ने अपनी गर्लफ्रैंड जिया को ही बचाव का हथियार बना लिया. उस ने जिया की गरदन पर चाकू लगा कर पुलिस वालों से कहा, 'पीछे हट जाओ और मुझे जाने दो, नहीं तो इस लड़की की गरदन उड़ा दूंगा.'

पहले से ही हर हालात का आंकलन कर पहुंची पुलिस की स्पैशल 26 टीम को इस पर कोई हैरानी नहीं हुई. पपला की धमकी पर पुलिस टीम ने पीछे हटने के बजाय उस पर चारों तरफ से शिकंजा बना लिया.

आखिर पुलिस से बचने के लिए वह जिया को छोड़ कर तीसरी मंजिल से नीचे कूद गया. नीचे और आसपास पहले ही पुलिस टीम के कमांडो पोजीशन लिए खड़े थे. उन्होंने पपला को दबोच लिया और उसे चारों तरफ से घेर कर स्टेनगन तान दी. इस बीच पुलिस ने जिया को अपनी हिरासत में ले लिया था.

तीसरी मंजिल से कूदने से पपला के बाएं पैर के घुटने की हड्डी टूट गई. वह जमीन से उठ नहीं सका, तो पुलिस टीम ने उसे सहारा दे कर खड़ा किया और कपड़ों की तलाशी ली. उस के पास कोई हथियार नहीं मिला.

मकान के अंदर पहुंची पुलिस टीम ने सभी कमरों की तलाशी ली. तलाशी में कोई हथियार तो नहीं मिला, लेकिन पपला का फरजी आधार कार्ड जरूर मिला. इस में उस का नाम उदल सिंह और पता कोल्हापुर दर्ज था.

पैर में फ्रैक्चर होने से पपला चलफिर नहीं सकता था. इसलिए पुलिस टीम ने 28 जनवरी को सब से पहले उस की मरहमपट्टी कराई. बहरोड़ पुलिस पपला से पहले धोखा खा चुकी थी. इसलिए उसे और उस की गर्लफ्रैंड जिया को राजस्थान लाने के लिए पुलिस की अलगअलग टीमें बनाई गईं ताकि उस के साथियों को यह पता न चल सके कि कौन सी टीम उसे ले कर कहां पहुंचेगी.

एक टीम हवाईजहाज से दिल्ली के लिए उड़ी और दूसरी टीम जयपुर के लिए. पपला

RJ02 2019165
RJ02 2019

5 सितंबर, 2019 को 32 लाख रुपए नकदी के साथ पकड़ा गया विक्रम गुर्जर उर्फ पपला

जयपुर पहुंचा और जिया दिल्ली. 29 जनवरी को पुलिस ने जिया और व्हीलचेयर पर पपला को बहरोड़ की अदालत में पेश किया. अदालत ने पपला को शिनाख्तगी के लिए 2 दिन की न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया, जबकि जिया को 7 दिन के पुलिस रिमांड पर भेजा गया.

थाने से छुड़ा लिया था पपला को

पपला को जेल भेजने से पहले नीमराना थाने में आईजी हवासिंह घुमरिया, भिवाड़ी एसपी राममूर्ति जोशी, अलवर एसपी तेजस्विनी गौतम, स्पैशल औपरेशन ग्रुप के एडिशनल एसपी सिद्धांत शर्मा और नीमराना के एडिशनल एसपी राजेंद्र सिंह सिसोदिया ने पपला और जिया से अलगअलग पूछताछ की.

5 सितंबर, 2019 की रात भिवाड़ी जिले की बहरोड़ थाना पुलिस ने पपला को दिल्लीजयपुर हाइवे पर एक कार में 32 लाख रुपए ले कर जाते हुए पकड़ा था. पुलिस ने पपला से 32 लाख रुपए के बारे में पूछताछ की, तो उस ने कोई संतोषजनक जवाब नहीं दिया. उस समय तत्कालीन थानाप्रभारी को पपला के आपराधिक बैकग्राउंड का पता नहीं था.

पुलिस की पूछताछ और जांचपड़ताल में पपला के दुर्दांत अपराधी बनने और महाराष्ट्र के कोल्हापुर पहुंच कर प्यार का चक्कर चलाने की जो कहानी उभर कर सामने आई, उस से पहले पपला के बहरोड़ थाने से फरार होने की कहानी जान लीजिए.

5 सितंबर, 2019 की रात भिवाड़ी जिले की बहरोड़ थाना पुलिस ने पपला को दिल्लीजयपुर हाइवे पर एक कार में 32 लाख रुपए ले कर जाते हुए पकड़ा था. पुलिस ने पपला से 32 लाख रुपए के बारे में पूछताछ की, तो उस ने कोई संतोषजनक जवाब नहीं दिया.

उस समय तक बहरोड़ के तत्कालीन थानाप्रभारी सुगनसिंह को पपला के आपराधिक बैकग्राउंड का पता नहीं था. वह उसे कोई व्यापारी या छोटामोटा प्रौपर्टी डीलर समझ रहे थे.

पपला ने खुद के पकड़े जाने की सूचना मोबाइल से अपने साथियों को दे दी थी. पपला के पकड़े जाने पर कुछ लोगों ने पुलिस से लेदे कर उसे छोड़ने के लिए भी बात की थी, लेकिन बात नहीं बनी. पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर हवालात में बंद कर दिया.

कहा जाता है कि पपला अपने साथी जसराम पटेल की हत्या का बदला लेने के लिए बहरोड़ आया था. वह बहरोड़ में विक्रम उर्फ लादेन को मारना चाहता था. इस से पहले उस ने किसी बड़े व्यापारी से रंगदारी वसूली थी. उस के पास रंगदारी के वही 32 लाख रुपए थे. पकड़े जाने पर उस ने पुलिस से कहा था कि वह जमीन का सौदा करने आया था, लेकिन सौदा नहीं बना.

पपला के पकड़े जाने के कुछ घंटों बाद ही 6 सितंबर को सुबह करीब 9 बजे 3 गाड़ियों में भर कर आए उस के साथियों ने बहरोड़ पुलिस थाने पर नक्सलियों की तरह दिनदहाड़े धावा बोल दिया. ये लोग एके 47 और एके 56 से करीब 50 राउंड गोलियां बरसा कर पपला को लौकअप से निकाल ले गए. बदमाशों की गोलियों से थानाप्रभारी के कमरे के गेट और थाने की दीवारों पर गोलियों के निशान बन गए थे, जो एक खतरनाक हमले की गवाही दे रहे थे.

जब पपला को उस के साथी थाने से छुड़ा ले गए, तब पुलिस को पता चला कि वह हरियाणा का दुर्दांत अपराधी विक्रम गुर्जर उर्फ पपला था. राजस्थान में इस तरह का यह पहला मामला था.

पुलिस थाने पर हमले की घटना ने राजस्थान सरकार को हिला दिया. इस से पुलिस की बदनामी भी हुई. पपला की फरारी पर अधिकारियों ने इसे पुलिस की लापरवाही मानते हुए कई पुलिस अफसरों पर काररवाई की. 2 पुलिस वालों को बर्खास्त किया गया. डीएसपी और थानाप्रभारी सहित 5 पुलिस वालों को सस्पेंड कर दिया गया. कुछ के तबादले और 69 पुलिस वाले लाइन हाजिर किए गए.

पुलिस ने पपला को तलाश करने के लिए पहले तो जोरशोर से कई दिनों तक अभियान चलाया. जगहजगह छापे मार कर पूरे देश की खाक छान ली, लेकिन उस का कुछ पता नहीं चला.

पपला को अकेली राजस्थान की पुलिस ही तलाश नहीं कर रही थी, बल्कि हरियाणा

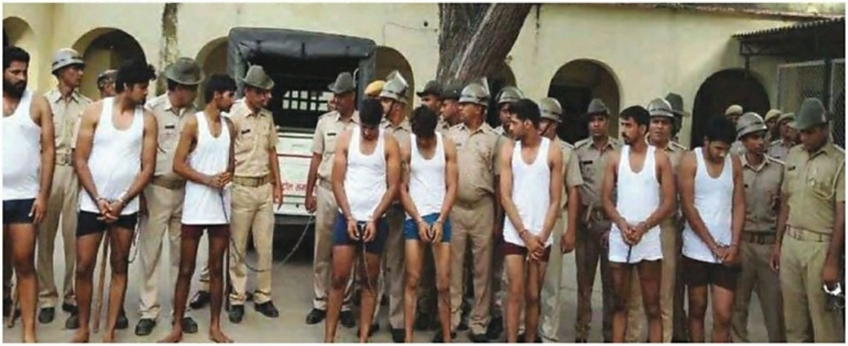

आम लोगों के दिमाग से बदमाशों का खौफ निकालने के लिए अंडरवियर और बनियान में उन का जुलूस निकालती पुलिस

पुलिस भी उस पर आंखें गड़ाए हुए थी. लेकिन सफलता दोनों राज्यों की पुलिस को नहीं मिल रही थी.

धीरेधीरे पुलिस के अभियान भी ठंडे पड़ गए. पपला के न पकड़े जाने से यह बात भी उठने लगी कि उसे राजनीतिक या जातिगत संरक्षण मिला हुआ है. इसीलिए पुलिस जानबूझ कर उसे नहीं पकड़ रही है. एक बार हरियाणा की पूर्व सरकार के एक मंत्री के बेटे की पपला से बातचीत का औडियो भी वायरल हुआ था.

हालांकि बहरोड़ पुलिस ने पपला को थाने से छुड़ा ले जाने और संरक्षण देने के मामले में 17 महीने के दौरान 30 से ज्यादा लोगों को गिरफ्तार भी किया. इन में अधिकांश लोग राजस्थान के अलवर और झुंझुनूं जिले के अलावा हरियाणा के महेंद्रगढ़, नारनौल और रेवाड़ी के रहने वाले थे.

पपला का खौफ खत्म करने के लिए जुलूस

राजस्थान पुलिस के स्पैशल औपरेशन ग्रुप और अलवर पुलिस ने 22 सितंबर, 2019 को पपला के गिरोह के 16 बदमाशों का बहरोड़ में केवल अंडरवियर और बनियान में सड़कों पर पैदल जुलूस निकाला था. पुलिस ने यह काम आमजन के मन से ऐसे बदमाशों का खौफ खत्म करने के लिए किया था. पहली बार राजस्थान में बदमाशों का इस तरह निकाला गया जुलूस चर्चा का विषय बन गया था.

पपला के 30 से ज्यादा साथी पकड़े गए और इन में से आधे से ज्यादा बदमाशों का बनियान अंडरवियर में जुलूस निकाला गया. इस के बावजूद पुलिस उन से यह नहीं उगलवा सकी कि पपला का पताठिकाना अब कहां है? कौन लोग उसे पैसा पहुंचा रहे हैं और कौन उसे शरण दे रहे हैं?

राजस्थान पुलिस पर पपला की फरारी से लगा काला दाग अब उस के फिर पकड़े जाने से हालांकि मिट गया है, लेकिन 2 बार गच्चा दे कर भाग चुके पपला को ले कर पुलिस की चिंताएं अभी कम नहीं हुई हैं. इस का कारण यह है कि उस की मदद करने वाले उस के साथी अभी खुले घूम रहे हैं.

विक्रम गुर्जर उर्फ पपला हरियाणा के महेंद्रगढ़ जिले के खैरोली गांव के रहने वाले मनोहरलाल के 2 बेटों में बड़ा है. उस ने 12वीं पास करने के बाद फौज में जाने का मन बना लिया था. इसी दौरान उसे पहलवानी का शौक लग गया. वह अपने गांव के ही शक्ति सिंह के पास पहलवानी सीखने लगा. शक्ति सिंह को वह गुरु मानता था.

खैरोली गांव के ही रहने वाले संदीप फौजी का पास के गांव की एक युवती से प्रेम प्रसंग चल रहा था. गांव के लोग इस से नाखुश थे.

पुलिस गिरफ्त में बैसाखी के सहारे चलता विक्रम गुर्जर उर्फ पपला

आपके जीवन साथी को जरूरत है
जोश, उमंग और वास्तविक
प्यार की...

अपनी सैक्स संबधी समस्याऐं न छिपाये, ऐसा करने से आपका विवाहित जीवन दुखमय हो सकता है। सही परामर्श व सफल ईलाज से समस्या का समाधान किया जा सकता है। देश-विदेश में प्रसिद्ध सबलोक क्लिनिक के पास प्राकृतिक जड़ी-बूटियों व कीमती भस्मों से युक्त आयुर्वेदिक नुस्खे हैं। जिनके सेवन से आप अपनी सैक्स लाइफ को और भी रंगीन बनाकर विवाहित जीवन का पूर्ण आनन्द प्राप्त कर सकते हैं। संतान के इच्छुक दम्पत्ती स्वयं मिले। ज्ञानबर्धक पुस्तक नवजीवन मुफ्त मंगवाये। विदेशों में हवाई डाक द्वारा इलाज भेजने का विशेष प्रबन्ध है।

एशिया में अपनी तरह का एकमात्र सर्वाधिक विश्वसनीय आधुनिक क्लिनिक

सबलोक क्लिनिक

दरियागंज (टाटा मोटर्स के ऊपर)
नेताजी सुभाष मार्ग (निकट दिल्ली गेट) नई दिल्ली-110002
9891300008 सुबह 12 से शाम 4, रविवार : अवकाश (रजिस्ट्रेशन 500/-)

www.sablokclinic.com / email : sablokclinicindia@gmail.com

सबलोक क्लिनिक, दरियागंज की इंडिया में कहीं कोई ब्रांच नहीं है।

पंचायत ने फैसला किया कि संदीप फौजी उस युवती से नहीं मिलेगा. इस के बाद भी संदीप नहीं माना, तो शक्ति सिंह और पपला ने उसे पीट दिया. संदीप ने इसे अपना अपमान माना.

उस ने हरियाणा के चीकू बदमाश को सुपारी दे कर 4 फरवरी, 2014 को शक्ति सिंह की हत्या करवा दी. अपने गुरु शक्ति सिंह की हत्या का बदला लेने के लिए विक्रम गुर्जर उर्फ पपला अपराध की दुनिया में कूद गया.

पपला हरियाणा के कुख्यात बदमाश कुलदीप उर्फ डाक्टर के गिरोह में शामिल हो गया. पपला ने बंदूक थाम कर एक साल में ही अपने गुरु की हत्या का बदला ले लिया. जनवरी, 2015 में उस ने संदीप फौजी की हत्या कर दी. इस के बाद उस ने संदीप की मां विमला, मामा महेश और नाना श्रीराम को भी मौत के घाट उतार दिया.

4 लोगों की हत्या के बाद पपला अपराध की दलदल में धंसता चला गया. पपला के खिलाफ हत्या, लूट और रंगदारी के करीब 2 दरजन से ज्यादा मामले दर्ज हुए. उस का दक्षिणी हरियाणा के जिलों खासकर रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, नारनौल व धारूहेड़ा के अलावा राजस्थान के राठ और शेखावटी इलाके में आतंक था.

हरियाणा के अलावा वह राजस्थान, दिल्ली और उत्तर प्रदेश पुलिस का भी वांटेड रहा. हरियाणा की नारनौल पुलिस ने उसे 2016 में पकड़ा था. इस के कुछ समय बाद 2017 में महेंद्रगढ़ की अदालत में उस के गिरोह के बदमाश पुलिस पर फायरिंग कर उसे छुड़ा ले गए थे. इस मामले में हरियाणा पुलिस के एक एसआई सहित 7 पुलिस वाले घायल हुए थे.

हरियाणा पुलिस ने पपला पर 2 लाख रुपए का इनाम घोषित कर रखा था. पुलिस की हिरासत से पपला को छुड़ा ले जाने में उस का छोटा भाई मिंटू भी आरोपी था. वह जेल में 20 साल की सजा भुगत रहा है.

अब जिया की कहानी. जिया आयुर्वेद डाक्टर बनने की पढ़ाई कर रही थी. वह अभी दूसरे वर्ष की छात्रा थी. तलाकशुदा जिया के पिता डाक्टर हैं. जिया को पपला ने अपना नाम मानसिंह और काम व्यापार बता रखा था.

महाराष्ट्र के सतारा जिले की रहने वाली 26 साल की जिया कोल्हापुर में 3 मंजिला मकान में जिम भी चलाती थी. वह फिजिकल ट्रेनर है. पपला ने अपने पहलवानी के शौक के कारण जिम जौइन किया था. वहां मासूम और फूल सी नाजुक जिया को देख कर वह उस पर लट्टू हो गया. जिया के तलाकशुदा होने का पता चलने पर पपला ने उस से नजदीकियां बढ़ाई. जिया भी कसरती बदन वाले पपला के प्यार में उलझ गई.

पपला ने जिया की जिम वाली बिल्डिंग में ही 4500 रुपए में किराए पर कमरा ले लिया. फिर दोनों लिवइन रिलेशनशिप में रहने लगे. पकड़े जाने से 2 दिन पहले ही पपला ने जिया के पिता से भी मुलाकात की थी. पपला जिया से शादी कर कोल्हापुर में बसना चाहता था, लेकिन उन के प्यार की कहानी 2 महीने से कम समय में ही खत्म हो गई.

राजस्थान पुलिस के स्पैशल औपरेशन ग्रुप और अलवर पुलिस ने 22 सितंबर, 2019 को पपला के गिरोह के 16 बदमाशों का बहरोड़ में केवल अंडरवियर और बनियान में सड़कों पर पैदल जुलूस निकाला था. पुलिस ने यह काम आमजन के मन से ऐसे बदमाशों का खौफ खत्म करने के लिए किया था. पहली बार राजस्थान में बदमाशों का इस तरह निकाला गया जुलूस चर्चा का विषय बन गया था.

पपला ने जिया से मुलाकात से पहले कोल्हापुर में ही एक मराठी महिला को अपने प्यार के जाल में फंसाया था. अकेली रहने वाली उस महिला का 4 साल का एक बेटा है. उस महिला के साथ भी वह कुछ दिन लिवइन रिलेशनशिप में रहा.

उस महिला से प्यार की पींगें आगे बढ़तीं, उस से पहले ही पपला की जिया से मुलाकात हो गई और उस का जिया पर दिल आ गया. पपला कोल्हापुर में 3-4 महीने से रह रहा था. इस दौरान उस ने कई ठिकाने भी बदले थे.

पपला के पकड़े जाने के बाद जिया पुलिस से उस की असलियत के बारे में पूछती रही. राजस्थान पुलिस की स्पैशल 26 टीम जब पपला और जिया को कोल्हापुर से राजस्थान ले जाने के लिए पुणे एयरपोर्ट पहुंची, तो आमनासामना होने पर जिया ने पपला से पूछा, 'आखिर तुम हो कौन ?'

तब पपला ने जवाब दिया, 'मैं विक्रम गुर्जर उर्फ पपला हूं. राजस्थान और हरियाणा पुलिस ने मुझ पर 5 लाख रुपए का इनाम रखा हुआ है. यूपी और दिल्ली की पुलिस भी मुझे तलाश कर रही है.'

पपला की असलियत जान कर जिया फूटफूट कर रोने लगी.

जेल में पपला की शिनाख्तगी होने के बाद

पपला को गिरफ्तार करने वाली पुलिस टीम

पुलिस ने उसे अदालत से रिमांड पर ले लिया.

रिमांड के दौरान पुलिस पूछताछ में सामने आया कि पपला बहरोड़ थाने से फरार होने के बाद करीब 2 महीने तक अलवर जिले के तिजारा, दिल्ली और हरियाणा के पलवल शहर में रहा. इस के बाद उस ने एनसीआर और उत्तर प्रदेश में अपना समय बिताया.

इस दौरान उस ने अपना मोबाइल बंद कर दिया. घर वालों, रिश्तेदारों और दोस्तों से वह सीधे तौर पर संपर्क में नहीं रहा. उस के फरार होने के करीब 6 महीने बाद कोरोना के कारण लौकडाउन लग गया. इस दौरान पुलिस भी ठंडी पड़ गई. बाद में जब अनलौक होना शुरू हुआ, तो पुलिस ने डाक्टर और हैल्थ वर्कर बन कर भी कई राज्यों में पपला की तलाश की.

पुलिस ने पपला की तलाश में राजस्थान के अलावा हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, उत्तराखंड, हिमाचल प्रदेश, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा, बेंगलुरु, छत्तीसगढ़, उड़ीसा, पंजाब आदि 14 राज्यों की धूल छानी थी.

पपला के काली भक्त होने का पता चलने पर पुलिस पश्चिम बंगाल भी गई थी. महाकालेश्वर और शिरडी सहित देश के बड़े धार्मिक स्थलों पर भी उस की तलाश की गई थी. नवंबर 2019 में भी पुलिस टीम कोल्हापुर गई थी.

जांच में यह भी पता चला कि पपला को पुलिस के छापे की जानकारी पहले मिल जाती थी. गहराई में जाने पर पता चला कि पपला को पकड़ने वाले एडिशनल एसपी सिद्धांत शर्मा का पहले गनमैन रहा सुधीर कुमार पुलिस की प्लानिंग की जानकारी पपला के साथियों तक पहुंचाता था.

पुलिस वाला ही खबरी था पपला का

सिद्धांत शर्मा 2017 में भिवाड़ी के डीएसपी थे, तब सुधीर कुमार उन का गनमैन था. बाद में सिद्धांत शर्मा का तबादला नीमराना डीएसपी के पद पर हो गया, तो सुधीर भी उन के साथ गनमैन के रूप में नीमराना आ गया. पपला की फरारी के दौरान सिद्धांत नीमराना में ही तैनात थे. बहरोड़ और नीमराना में केवल 20 किलोमीटर की दूरी है.

पपला को जयपुर हवाईअड्डे से ले जाती पुलिस

पपला को पकड़ने की सारी योजनाएं नीमराना थाने में ही बनती थी. इसलिए गनमैन सुधीर को सारी बातें पता चल जाती थीं. पुलिस की योजनाएं लीक होने से पपला पुलिस से और दूर हो जाता था. बाद में सिद्धांत शर्मा एडिशनल एसपी बन कर एसओजी में चले गए. इस दौरान सुधीर नीमराना थाने की क्यूआरटी की गाड़ी का ड्राइवर था.

पपला की गिरफ्तारी के 2 दिन बाद ही भेद खुलने पर 29 जनवरी को भिवाड़ी एसपी राममूर्ति जोशी ने सुधीर को निलंबित कर दिया.

पपला से पूछताछ में पुलिस को उस के कुछ साथियों और हथियारों के बारे में पता चला है. पुलिस उन की तलाश कर रही है. रिमांड अवधि पूरी होने पर जिया को अदालत ने 4 फरवरी को न्यायिक अभिरक्षा में जेल भेज दिया.

पपला को भी अदालत ने 13 दिन का रिमांड पूरा होने पर जेल भेज दिया. जेल से अलवर जिले की मुंडावर थाना पुलिस उसे प्रोडक्शन वारंट पर ले गई.

अपने साथियों द्वारा एके 47 और एके 56 जैसे अत्याधुनिक हथियारों से अंधाधुंध फायरिंग के बाद बहरोड़ थाने से भागा पपला अब बैसाखियों के सहारे चल रहा है. वह जिस बहरोड़ शहर से भागा था, उसी शहर की जेल में पहुंच गया. पुलिस को उस की सुरक्षा की ज्यादा चिंता है.

अभी उस के कई विश्वसनीय साथी फरार हैं. इस के अलावा हरियाणा का चीकू गैंग भी उस की जान का दुश्मन बना हुआ है. इसलिए पुलिस ड्रोन से पपला पर नजर रखे हुए है.

पुलिस की तमाम चौकसी के बावजूद पपला के भागने का खतरा अभी मंडरा रहा है. 15 फरवरी को उसे बहरोड़ से अलवर जिले की किशनगढ़बास जेल में शिफ्ट किया जा रहा था, तभी 6 संदिग्ध कारें पुलिस के काफिले में घुस गईं. बाद में पुलिस ने इन कारों को पकड़ लिया.

इन में बहरोड़ थाने के हिस्ट्रीशीटर बचिया यादव सहित 24 लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया. पुलिस इस बात की जांच कर रही है कि इन लोगों का पपला से कोई संबंध तो नहीं है. 2 बार पहले फरार हो चुके पपला के फिर भागने की आशंका और उस पर दुश्मन गिरोह के मंडराते खतरे को देखते हुए अब उसे अजमेर की हाई सिक्योरिटी जेल में शिफ्ट कर दिया गया है.

आईजी
(जयपुर रेंज)
डा. हवासिंह घुमरिया

पपला के घपले ने जिया को तोड़ दिया है. वह उबर नहीं पा रही है. तलाकशुदा जिया को दूसरी बार प्यार मिला, तो वह खुशियों का संसार बसाने के सपने देखने लगी थी. पपला के धोखे ने उस की दुनिया उजाड़ दी. ●

अभिनेत्री गहना वशिष्ठ को पोर्न फिल्में बनाने और उन्हें ओटीटी प्लेटफार्म पर अपलोड करने के मामले में पुलिस ने 6 फरवरी को गिरफ्तार कर लिया.

कोरोना काल में मुसीबतों में फंसा रहा भारतीय फिल्म उद्योग अभी तक नहीं उभर पाया है. कुछ समय पहले अभिनेता सुशांत सिंह राजपूत की मौत के मामले में ड्रग्स एंगल का खुलासा होने के बाद बौलीवुड हिल गया था. नामी अभिनेत्रियों सहित सहित कई दूसरे लोगों की गिरफ्तारी से बौलीवुड में नशीले पदार्थों का काला कारोबार छाया रहा.

इसी दौरान सैंडलवुड कहे जाने वाले कन्नड़ फिल्म उद्योग में भी ड्रग्स का जाल फैला होने का मामला सामने आया. कन्नड़ फिल्म उद्योग में ड्रग्स के मामले में कई नामी अभिनेत्रियों सहित दूसरे लोगों की गिरफ्तारियां हुईं.

फिल्म उद्योग में ड्रग्स के मामले अभी ठंडे भी नहीं पड़े थे कि अब बौलीवुड में पोर्न फिल्मों का मामला सामने आ गया है. पोर्न फिल्मों के मामले ने फिल्म उद्योग में फैले काले धंधों को उजागर करने के साथ वेब सीरीज के नाम पर ऐक्टिंग के लिए संघर्षरत युवाओं के शोषण की भी पोल खोल दी है.

इसी साल 4 फरवरी की बात है. मुंबई पुलिस की क्राइम ब्रांच के प्रौपर्टी सेल के प्रभारी सीनियर इंसपेक्टर केदारी पवार को पोर्न फिल्में बनाने के बारे में सूचनाएं मिलीं, तो वह चौंके. उन्होंने कोई भी काररवाई करने से पहले अपने उच्चाधिकारियों सहायक पुलिस आयुक्त मिलिंद भारंबे, अपर पुलिस आयुक्त विरेश प्रभु और पुलिस उपायुक्त शशांक सांडभोर को इस बारे में बताना मुनासिब समझा.

उच्चाधिकारियों के निर्देश पर सीनियर इंसपेक्टर केदारी पवार ने इंसपेक्टर धीरज कोली, एपीआई लक्ष्मीकांत सांलुखे, सुनील माने, अमित भोसले, योगेश खानुरे, महिला

अधिकारी अर्चना पाटील और सोनाली भारते आदि के अलावा मातहत पुलिस वालों की टीम बनाई.

इस पुलिस टीम ने 4 फरवरी की आधी रात मुंबई के मालवणी इलाके में मडआइलैंड स्थित ओल्ड फेरी मार्ग पर बने ग्रीन पार्क बंगले पर छापा मारा. पुलिस अधिकारी अपने वाहनों को बंगले से कुछ दूर खड़ा कर जब पैदल ही बंगले के बाहर पहुंचे, तो वहां न तो कोई सुरक्षा के इंतजाम नजर आए और न ही कोई चहलपहल दिखी. बंगले के कुछ कमरों में रोशनी जरूर थी. कुछ आवाजें भी आ रही थीं.

पुलिस अधिकारी बंगले के एक कमरे में पहुंचे, तो वहां का दृश्य देख कर सन्न रह गए. कमरे में कुल 5 लोग थे. 2 महिला और 3 पुरुष. बिस्तर पर एक महिला और एक पुरुष अर्धनग्न अवस्था में अश्लील हरकतें कर रहे थे. एक महिला उन का वीडियो बना रही थी. मौके के हालात देख कर साफ था कि वहां पोर्न फिल्म की शूटिंग हो रही थी.

पुलिस ने मौके से दोनों महिलाओं और तीनों पुरुषों को हिरासत में लिया. इन महिलाओं में 40 साल की फोटोग्राफर यास्मीन खान और 33 साल की ग्राफिक डिजाइनर प्रतिभा नलावडे थी. पकड़े गए पुरुषों में भानु ठाकुर और मोहम्मद नासिर ऐसी फिल्मों में ऐक्टिंग करते थे. वहीं मोनू जोशी कैमरामैन और लाइटमैन का काम करता था.

मौके से पुलिस ने 6 मोबाइल हैंडसेट, एक लैपटौप, कैनन कंपनी का कैमरा, 2 मैमोरी कार्ड, कैमरे का लैंस, एलईडी हैलोजन, स्पौट लाइट स्टैंड, ट्रायपोड स्टैंड सहित करीब 5 लाख 68 हजार रुपए का सामान जब्त किया. इन के अलावा शूटिंग के लिए लिखे गए डायलौग्स और स्क्रिप्ट सहित कुछ इकरारनामे भी बरामद किए.

कई केस हुए दर्ज

पूछताछ के लिए पांचों लोगों को पुलिस मालवणी पुलिस थाने ले आई. एपीआई लक्ष्मीकांत सांलुखे ने इस मामले में पुलिस थाने में केस दर्ज कराया. पुलिस ने भारतीय दंड संहिता की धारा 292, 293, 420 और 34 के अलावा स्त्री असभ्य प्रतिरूपण प्रतिषेध अधिनियम की विभिन्न धाराओं आदि में 5 फरवरी को मुकदमा दर्ज कर पांचों लोगों को गिरफ्तार कर लिया.

ऐसी फिल्म प्रोडक्शन कंपनियां ऐक्टिंग के लिए स्ट्रगल कर रही युवतियों को हीरोइन बनाने का ख्वाब दिखातीं और उन से शौर्ट फिल्म में काम करने का एग्रीमेंट करती थीं. एग्रीमेंट के बाद शूटिंग के दौरान ये लोग न्यूड सीन देने का दबाव डालते थे. मना करने पर एग्रीमेंट के आधार पर केस करने की धमकी देते थे.

पुलिस ने पांचों लोगों से पूछताछ की, तो चौंकाने वाली बातें सामने आईं. पता चला कि मुंबई में पोर्न फिल्में बनाने वाला रैकेट चल रहा है. इस में कुछ नामी अभिनेता और अभिनेत्री भी शामिल हैं. ये अभिनेता, अभिनेत्री बी और सी ग्रेड की बौलीवुड फिल्मों में काम कर चुके हैं.

ऐसी फिल्म प्रोडक्शन कंपनियां ऐक्टिंग के लिए स्ट्रगल कर रही युवतियों को हीरोइन बनाने का ख्वाब दिखातीं और उन से शौर्ट फिल्म में काम करने का एग्रीमेंट करती थीं. एग्रीमेंट के बाद शूटिंग के दौरान ये लोग न्यूड सीन देने का दबाव डालते थे. मना करने पर एग्रीमेंट के आधार पर केस करने की धमकी देते थे. पांचों लोगों से पूछताछ के आधार पर पुलिस ने पोर्न फिल्में बनाने और उन्हें ओटीटी प्लेटफार्म पर अपलोड करने के मामले में अभिनेत्री गहना वशिष्ठ को भी 6 फरवरी को गिरफ्तार कर लिया.

गहना वशिष्ठ की गिरफ्तारी से बौलीवुड भी सकते में आ गया. पुलिस का कहना था कि गहना वशिष्ठ के प्रोडक्शन हाउस में पोर्न फिल्मों की शूटिंग होती थी. गहना वशिष्ठ की गिरफ्तारी पर उस की लीगल टीम ने एक बयान में कहा कि वह निर्दोष हैं. बोल्ड फिल्मों और हार्डकोर पोर्न फिल्मों में अंतर होता है. मुंबई पुलिस ने इन दोनों को एक समझ लिया. हमें उम्मीद है कि अदालत दोनों फिल्मों में अंतर समझ कर गहना को न्याय देगी.

गहना वशिष्ठ, यास्मीन खान, प्रतिभा नलावडे और बाकी तीनों गिरफ्तार पुरुष आरोपियों मोनू जोशी, भानु ठाकुर व मोहम्मद नासिर से पूछताछ के आधार पर पुलिस ने पोर्न फिल्मों से कमाई गई 36 लाख 60 हजार रुपए की रकम भी बरामद की.

इन सभी से पूछताछ में पता चला कि पोर्न फिल्मों की शूटिंग भारत में मुंबई और दूसरी जगहों पर होती थी, लेकिन कानून की गिरफ्त से बचने के लिए इन फिल्मों के वीडियो विदेश के आईपी एड्रेस और सर्वर से अपलोड किए जाते थे.

गहना वशिष्ठ की प्रोडक्शन कंपनी की ओर से ये वीडियो उमेश कामत को वी ट्रांसफर

तनवीर हाशमी को पोर्न फिल्म रैकेट का पर्दाफाश होने पर गिरफ्तार कर ले जाती पुलिस

के जरिए भेजे जाते थे. उमेश उस लिंक को लंदन भेजता था. वहां से इन फिल्मों के वीडियो ओटीटी प्लेटफार्म पर अपलोड होते थे. वी ट्रांसफर दुनियाभर में ई फाइल भेजने का सब से सरल तरीका है. इस के जरिए 2 जीबी तक की बड़ी फाइलें भी मुफ्त में भेजी या मंगाई जा सकती हैं.

पुलिस जांच में सामने आया कि उमेश कामत इस काम का कोआर्डिनेटर है और उस के जरिए ही पेमेंट मिलता था. क्राइम ब्रांच को करीब 3 दरजन ऐसी फिल्मों के सबूत मिले, जो उमेश के जरिए लंदन भेजी गईं और वहां से अपलोड की गईं.

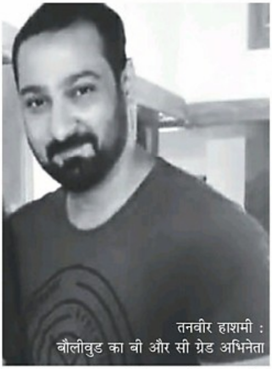

तनवीर हाशमी : बौलीवुड का बी और सी ग्रेड अभिनेता

उमेश कामत बौलीवुड की एक टौप अभिनेत्री के पति की कंपनी में मैनेजिंग डायरेक्टर है. अभिनेत्री का पति इस कंपनी में चेयरमैन और नान एक्जीक्यूटिव डायरेक्टर है.

गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ जरूरी सबूत जुटाने के बाद पुलिस ने इस मामले में 8 फरवरी को उमेश कामत को भी गिरफ्तार कर लिया. उमेश और दूसरे आरोपियों से पूछताछ में पता चला कि प्रत्येक ऐसे वीडियो के एवज में विदेशी अपलोडर्स से उन्हें 2 से ढाई लाख रुपए मिलते थे. इन में से करीब एक लाख रुपए कलाकारों, कैमरामैन और फिल्म एडिटर आदि को दिए जाते थे और बाकी एक से डेढ़ लाख रुपए का मुनाफा होता था.

विवादों की रानी गहना

गहना वशिष्ठ से पूछताछ में पुलिस को पता चला कि ऐसी फिल्मों के लिए उस ने ओटीटी के दरजनों ऐप बनाए थे. पुलिस ने जांच की, तो इन में से एक ऐप पर ही उस के 67 हजार से ज्यादा सब्सक्राइबर निकले. कोरोना काल में उस ने 85 से ज्यादा ऐसी फिल्में ओटीटी प्लेटफौर्म पर चलाई थीं. फरवरी में ही उस का 5-6 ऐसी फिल्में रिलीज करने का विचार था.

पुलिस जांच में सामने आया कि फिल्म प्रोडक्शन कंपनी ने हौटहिट मूवीज नाम का एक ऐप भी बना रखा है. इस पर वे अपनी पोर्न फिल्म को अपलोड करते थे. इस ऐप के लिए बाकायदा 2 हजार रुपए तक सब्सक्रिप्शन फीस ली जाती थी.

8 फरवरी की रात पुलिस ने इस मामले में एक फोटोग्राफर श्याम बनर्जी उर्फ दिवांकर खासनवीस को गिरफ्तार किया. पोर्न फिल्म केस में यह 8वीं गिरफ्तारी थी. पुलिस का कहना है कि हौटहिट ऐप का संचालन 5 फरवरी को ग्रीन पार्क बंगला से गिरफ्तार महिला फोटोग्राफर यास्मीन खान और बाद में पकड़ा गया उस का पति फोटोग्राफर श्याम बनर्जी मिल कर करते थे.

पुलिस की जांचपड़ताल में पोर्न फिल्म रैकेट के तार मुंबई से गुजरात के सूरत तक पहुंच गए. बाद में 10 फरवरी को पुलिस ने इस मामले में बी और सी ग्रेड बौलीवुड फिल्मों के अभिनेता तनवीर हाशमी को सूरत से गिरफ्तार किया.

पोर्न फिल्मों के मामले में गिरफ्तार आरोपियों से पूछताछ में जो कहानी उभर कर सामने आई. वह पैसे कमाने की अंधी दौड़ में युवा पीढ़ी को पतन के रास्ते पर ले जाने की कहानी है.

कोरोना काल में जब मार्च 2020 के चौथे सप्ताह में पूरे देश में लौकडाउन हो गया, तब देश की दोतिहाई आबादी अपने घरों में कैद हो कर रह गई.

इस दौरान लोगों के पास मनोरंजन के नाम पर केवल मोबाइल रह गए. मोबाइल पर इस दौरान पोर्न फिल्में देखने वालों की तादाद बढ़ गई. इस का फायदा उठा कर मुंबई के कुछ सी ग्रेड फिल्मकारों ने पोर्न फिल्में बनाने की योजना बनाई.

मई 2020 में जैसे ही अनलौक का पहला चरण शुरू हुआ, तो इन लोगों ने अपनी योजना को क्रियान्वित करने के लिए देसी पोर्न फिल्में बनाने का काम शुरू कर दिया. इन में अभिनेत्री गहना वशिष्ठ, अभिनेता तनवीर हाशमी और फोटोग्राफर यास्मीन खान आदि ने मुंबई में मलाड इलाके में मड आइलैंड के बंगलों को किराए पर लिया.

उस समय फिल्मों व टीवी सीरियलों की शूटिंग बंद थी, तब इन बंद बंगलों में ऐसी फिल्मों की शूटिंग होने लगी. उस समय पुलिस और प्रशासन कोरोना से बचाव की जद्दोजहद में जुटा हुआ था. इसलिए पुलिस को इस सब की जानकारी नहीं मिली.

गहना वशिष्ठ पर 85 से ज्यादा पोर्न फिल्में पोर्न वेबसाइट या ऐप्स पर अपलोड करने का आरोप है. इन में कुछ नामी मौडल्स को भी शूट किया गया था. मौडल्स और खूबसूरत चेहरेमोहरे वाली युवतियों को शौर्ट फिल्मों के लिए बुला कर एग्रीमेंट किया जाता था.

एग्रीमेंट कुछ सचाई कुछ

कुछ मिनट की शूटिंग के बाद एक्टर्स को पोर्न सीन करने के लिए मजबूर किया जाता था. ऐसे सीन नहीं करने पर उन्हें कानूनी नोटिस भेजने की धमकी दी जाती थी. इस का कारण यह था कि 30-40 हजार रुपए मेहनताना का एग्रीमेंट करने वाली मौडल और युवतियां उस एग्रीमेंट को पढ़ती नहीं थी. उन से केवल एकदो दिन की शूटिंग होने के नाम पर जल्दी में दस्तखत करा लिए जाते थे.

पेशे से फोटोग्राफर यास्मीन उर्फ रोवा खान ने भी 50 से ज्यादा पोर्न फिल्में बनाई हैं. ऐसी फिल्मों की शूटिंग आमतौर पर एक ही दिन में पूरी कर ली जाती थी. एडिटिंग में 2 से 3 दिन का समय लगता था.

इस तरह करीब 20 से 30 मिनट की फिल्म तैयार हो जाती थी. इस के बाद ऐसी फिल्मों को विदेश के आईपी एड्रेस और सर्वर के जरिए ओटीटी प्लेटफार्म पर रिलीज कर दिया जाता था.

HEMODEX®

Family Tonic

SUPERIOR HAEMATINIC WITH ANTI-OXIDANTS
BALANCED NUTRITIONAL FORMULA
VITAMIN & PROTEIN

आपके सेहत का सच्चा साथी

Hemodex, Growmed उत्पादित आयरन टॉनिक लाल रक्तकण बढ़ाने एवं उत्तम स्वास्थ्य के लिए उपयोगी है। इसमें हैं भरपूर आयरन, फोलिक एसीड, B_{12} तथा सौर्बीटॉल **70%**. जो कि चेहरा, जीभ या आँख के पीलापन, चलने पर चक्कर आना या दमफूलना, उम्र से ज्यादा दिखना जैसे गंभीर रोगों में अत्यधिक लाभदायी है।

GROWMED®
STOMAQUAR®

अब छुटकारा पाईये

पेट में गैस, जलन, अपच, खट्टे डकार, पुराना कब्ज, पेप्टिक अल्सर, आँव, सिरदर्द, बेचैनी एवं मुँह में छाले

PROTECTIVE COATING ACTION

जैसी सभी तकलीफों से!

Stomaquar पेप्टिक अल्सर, जलन, अपच, हाइपर– एसीडीटी, पेट में ज्यादा गैस का होना, हिचकी आना, कब्ज एवं पेट के अन्य तकलीफों से निजात दिलाने में काफी उपयोगी, साथ ही रक्तचाप को सही रखने में, पुराना आँव (क्रोनिक डीसेंट्री), पुराना कब्ज (कॉन्स्टीपेशन), सिरदर्द एवं बेचैनी तथा मुँह के छाले में इसका नियमित सेवन काफी लाभदायक है।

Manufacturer : Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT
GROWMED MKT INDIA PVT LTD
• CALL : 9431237784, 8987383154

पोर्न फिल्मों के इस मामले में कथा लिखे जाने तक पुलिस में 4 केस दर्ज हुए थे. इन में 2 युवतियों ने मालवणी पुलिस थाने में केस दर्ज कराया. एक ने वसई के अर्नाला पुलिस स्टेशन में शिकायत दी. यह शिकायत लोनावाला पुलिस स्टेशन को ट्रांसफर की गई है. एक केस महाराष्ट्र साइबर सेल में दर्ज हुआ है.

इन में एक मौडल ने शिकायत में कहा कि गहना के प्रोडक्शन हाउस की ओर से शूट किए वीडियो में उसे न्यूड पोज देने के लिए फोर्स किया गया. एक मौडल ने गहना के खिलाफ 3 पुरुषों के साथ सैक्स करने को मजबूर करने का आरोप लगाया है. झारखंड की एक युवती ने मालवणी पुलिस थाने में दी शिकायत में पोर्न फिल्म न करने पर 10 लाख रुपए का हर्जाना देने की धमकी देने का आरोप लगाया है.

पौर्न फिल्मों में लिप्त पाई गई महिला को पूछताछ के लिए ले जाती पुलिस

अभिनेत्री गहना वशिष्ठ को पैसों का लालच ही इस गंदे काम की तरफ खींच लाया. छत्तीसगढ़ के चिरमिरी की रहने वाली गहना का असली नाम वंदना तिवारी है.

16 जून, 1988 को जन्मी वंदना तिवारी ने भोपाल से कंप्यूटर साइंस में बीटेक किया था. सन 2012 में जब उस ने मिस एशिया बिकनी कांटेस्ट जीता, तब वह लोगों की नजर में आई थी. उस ने इस प्रतियोगिता में भारत का प्रतिनिधित्व करते हुए सब से ज्यादा अंक हासिल किए थे.

बाद में उस ने मौडलिंग करते हुए करीब 80 विज्ञापनों में अपने जलवे दिखाए. इन में मोंटे कार्लो, फिलिप्स एरेना, शेवरले क्रूज कार, ड्रीम स्टोन ज्वैलरी, पलक साड़ीज आदि मुख्य थे. बाद में वह स्टार प्लस के सीरियल 'बहनें' में लीड रोल में नजर आई. क्रिकेट वर्ल्ड कप 2015 के लिए उस ने योगराज सिंह और अतुल वासन के साथ एक न्यूज चैनल पर ऐंकरिंग भी की.

गहना वशिष्ठ ने अपना फिल्मी कैरियर 'फिल्मी दुनिया' नामक

हिंदी फिल्म से शुरू किया. बौलीवुड फिल्म इंडियन नेवर अगेन निर्भया, दाल में कुछ काला है, लखनवी इश्क, सविता बार्बी, निर्भया, उन्माद और द प्रौमिस में उस ने अभिनय किया.

इस के अलावा गहना ने करीब एक दरजन तेलुगू फिल्मों में भी महत्त्वपूर्ण रोल किए. एक स्पैनिश फिल्म में भी उस ने काम किया. वह साउथ के एक नामी अभिनेता की गर्लफ्रैंड भी रही है.

वह अल्ट बालाजी की वेब सीरीज 'गंदी बात', उल्लू ऐप के 'मी टू', अमेजन प्राइम के 'मिरर द बिटर', प्राइम फ्लिक्स के भाभीजी घर पर हैं आदि के अलावा ओटीटी प्लेटफार्म न्यूफ्लिक्स आदि पर भी नजर आई. उस ने कई म्यूजिक वीडियो में भी काम किया.

तिरंगा लपेट कर फोटो शूट कराने और मैरीकाम के ओलिंपिक मैडल जीतने पर न्यूड फोटो खिंचवाने के कारण गहना वशिष्ठ विवादों में रह चुकी है.

सन 2018 में वह तब भी चर्चा में आई थी, जब उन्होंने बिग बौस की प्रतिभागी अर्शी खान को ले कर दावा किया था कि वे अपनी उम्र कम बताती हैं. गहना ने दावा किया था कि अर्शी ने 50 साल के आदमी से शादी की है और उन के खिलाफ भारत व पाकिस्तान के झंडों के अपमान सहित 10 आपराधिक मामले दर्ज हैं.

गहना की कंपनी जीवी स्टूडियो का खेल

गहना वशिष्ठ ने जीवी स्टूडियोज के नाम से अपनी प्रोडक्शन कंपनी बना रखी है. मुंबई पुलिस गहना वशिष्ठ की कंपनी के सामने आए वीडियो को पोर्न बता रही है. वहीं, गहना की कंपनी का कहना है कि जीवी स्टूडियोज की ओर से निर्मित और निर्देशित वीडियो को इरोटिका के रूप में क्लासीफाइड किया जा सकता है.

कंपनी का कहना है कि उन्होंने केवल ऐसी फिल्में बनाई हैं, जो कानूनन बनाई जा सकती हैं. पुलिस ने भारत में हार्ड पोर्न और उन के

पाउंड में आता था पैसा

इस मामले में गिरफ्तार आरोपियों को अदालत ने जेल भेज दिया. इस के बाद मालवणी थाना पुलिस ने गहना और दूसरे आरोपियों को कस्टडी में लेने के लिए अदालत में प्रार्थना पत्र दिया. मालवणी थाने में दो मौडलों ने रेप का केस भी दर्ज कराया है. क्राइम ब्रांच ने अभिनेत्री गहना के तीन अकाउंट फ्रीज कर दिए.

अभिनेत्री गहना के वकील अजय उमापति दुबे ने कोर्ट में अर्जी दे कर कहा है कि इन बैंक खातों में ओटीटी एप्स हौट शौट और न्यू फ्लीक्स के सब्सक्रिप्शन से जो रकम ट्रांसफर हुई है उसे भले ही फ्रीज रखा जाए, लेकिन बाकी रकम अभिनेत्री गहना को निकालने की अनुमति दे दी जाए. पुलिस को जांच में यह भी पता चला है कि अभिनेत्री गहना के एक बैंक खाते में ब्रिटेन से पाउंड में रकम ट्रांसफर होती थी.

2 अन्य एक्ट्रेस द्वारा अश्लील ओटीटी एप्स बनाने का भी पुलिस को पता चला है. पूरा मामला उजागर होने के बाद यह एप अब बंद कर दिए गए हैं. ❍

बच्चों के सम्पूर्ण शारीरिक विकास एवं विशेष इम्युनिटी बढ़ाने में सहयोग करता है।

GROWMED®
AD VITAMIN
बेबी ऑयल

नक्कालों से सावधान
ग्रोमेड
देखकर ही लें।

ग्रोमेड AD Vitamin Baby Oil ही आपके बच्चों की हड्डियों एवं मांसपेशियों की ज्यादा मजबूती एवं सम्पूर्ण शारीरिक विकास के लिए जरुरी है।

©: A-88094/2010
VITAMIN A, D, E AND OLIVE OIL
GROWMED
AD
VITAMIN
BABY OIL
FOR GROWTH AND VIGOUR OF BABIES
अब
चंदन एवं गुलाब के
खुशबू में भी

GROWMED®
PAIN RELIEF Gel & Tablet
आपको दर्द से दिलाए... मिनटों में आराम

GROWMED PAIN RELIEF Gel
Diclofenac Diethylamine, Oleum Lini, Methyl Salicylate & Menthol Gel
15 gm

ग्रोमेड पेन रिलीफ जेल के इस्तेमाल से कमर दर्द, घुटनों का दर्द, कंधे का दर्द, एड़ी दर्द तथा स्लिप डिस्क दर्द से शत् प्रतिशत तुरंत आराम मिलता है।

Manufacturer : Tablet, Capsule, Liquid, Ointment and Injection

ऑनलाईन ऑर्डर के लिए लॉग इन करें:
www.growmed.in

GUJARAT
GROWMED MKT. INDIA PVT. LTD.
• CALL : 9431237784, 8987383154

मेकर्स की बनाई फिल्मों के साथ गहना की इरोटिका फिल्मों को मिक्स कर दिया है जबकि इरोटिका, कामुक या बोल्ड फिल्मों के बीच एक कानूनी अंतर है.

बी और सी ग्रेड बौलीवुड फिल्मों का अभिनेता तनवीर हाशमी अब तक 40 से ज्यादा फिल्मों में अभिनय कर चुका है.

गुजरात के सूरत के रहने वाले 40 वर्षीय तनवीर ने 20 साल के अपने फिल्मी कैरियर में 'रात की बात', 'जख्मी नागिन', 'द रीयल ड्रीम गर्ल', 'भीगा बदन', 'बेस्ट पार्टनर', 'परदा', 'गरम', 'नाइट लवर', 'रेडलाइट', 'कामवाली', 'रिक्शावाली', 'कुंआरा पेइंग गेस्ट', 'दूधवाली' और 'की क्लब' जैसी सैक्सी फिल्मों में काम किया है.

तनवीर सूरत के बारदोली इलाके में बंगला किराए पर ले कर पोर्न फिल्में बनाता था. पिछले 20 साल से फिल्मी परदे पर नजर आने के कारण उस की एक खास दर्शक वर्ग में पहचान थी. अपनी इसी पहचान के दम पर वह वेब सीरीज बनाने के बहाने ऐक्टिंग के शौकीन युवकयुवतियों को अपने जाल में फांस कर पोर्न फिल्में बनाता था.

पहले उस ने मुंबई में ही ऐसी कुछ फिल्में बनाई, लेकिन मुंबई में शूटिंग के लिए बंगलों का किराया ज्यादा था. इसलिए वह सूरत और आसपास के इलाकों में कम किराए के बंगले ले कर ऐसी फिल्में बनाने लगा. इस के लिए वह मुंबई से मौडल और युवतियों को सूरत बुलाता था. तनवीर और गहना न्यूफ्लिक्स ओटीटी के लिए भी ऐसी फिल्में बनाते थे. इस के चार लाख से ज्यादा कस्टमर हैं.

ओरल सैक्स का मामला

तनवीर हाशमी सन 2015 में मुंबई के साकीनाका में हुए ओरल सैक्स कांड से भी जुड़ा हुआ रहा है. उस समय एक मौडल ने आरोप लगाया था कि उस के साथ साकीनाका पुलिस स्टेशन में एक पुलिस इंसपेक्टर ने ओरल सैक्स किया था.

उस समय इस मामले में तनवीर हाशमी सहित एक नामी टीवी सीरियल का प्रोड्यूसर भी पकड़ा गया था. तनवीर उस समय साकीनाका पुलिस स्टेशन के कुछ अधिकारियों का खबरी हुआ करता था. उस समय तनवीर के क्रेडिट कार्ड से ही अंधेरी के एक पांच सितारा होटल में कमरा बुक कराया गया था.

होटल के इसी कमरे में पीड़ित मौडल को 2 लाख रुपए के साइनिंग अमाउंट के लिए बुलाया गया था. ऐन वक्त पर मौडल ने उस कमरे में जाने से इनकार कर दिया और अपने बौयफ्रैंड को फोन कर दिया.

आरोप लगा कि मौडल को उस का बौयफ्रैंड जब होटल से बाइक पर ले जा रहा था, तो साकीनाका थाना पुलिस ने उन दोनों को अगवा कर लिया. बाद में एक पुलिस इंसपेक्टर ने एक पुलिस चौकी में मौडल को ले जा कर ओरल सैक्स किया था. इस मामले में आरोपी पुलिस वालों की भी गिरफ्तारी हुई थी.

85 से ज्यादा पोर्न फिल्में अपलोड करने वाली गहना की साथी को पूछताछ के लिए ले जाती पुलिस

पोर्न फिल्मों का मामला नया नहीं है. मुंबई पुलिस ने कुछ दिन पहले संदीप इंगले नामक एक कास्टिंग डायरेक्टर को गिरफ्तार किया था. वह खुद को फिल्म प्रोड्यूसर भी बताता था और प्रेम के नाम से सैक्स रैकेट भी चलाता था. उस ने सैक्स रैकेट चलाने के लिए कई वेबसाइट बनाई थीं. इन वेबसाइटों को सर्च करने पर लोग आरोपियों से संपर्क करते थे. इस मामले में मुंबई के पांच सितारा होटल से 8 युवतियां मुक्त कराई गई थीं. इन में कुछ युवतियां नामी मौडल थीं.

मध्य प्रदेश की आर्थिक राजधानी इंदौर में भी पिछले साल जुलाई में पोर्न फिल्में बनाने का मामला सामने आया था. इंदौर पुलिस ने मौडल युवतियों की शिकायत पर मिलिंद डावर, अंकित सिंह चावड़ा, रैकेट के सरगना ब्रजेंद्र सिंह गुर्जर, गजेंद्र उर्फ गज्जू उर्फ गोवर्धन चंद्रावत आदि को गिरफ्तार किया था. ये लोग भी बंगलों और फार्महाउसों में पोर्न फिल्में बनाते और युवतियों का देह शोषण करते थे.

मुंबई पोर्न फिल्म मामले में गिरफ्तार अभिनेत्री गहना वशिष्ठ के मकान और प्रोडक्शन हाउस की तलाशी में 3 मोबाइल फोन, 2 लैपटौप, 2 हार्ड डिस्क, 5 मैमोरी कार्ड, एक एडाप्टर, एक पेनड्राइव, प्रोडक्शन हाउस की रबर स्टैंप और एक कंपनी व कुछ कलाकारों के साथ एग्रीमेंट से जुड़े 10 करार पत्र सहित कई दस्तावेज मिले हैं. गहना के एक बैंक खाते में एक आरोपी की ओर से रकम भेजे जाने के सबूत भी मिले हैं.

पुलिस की ओर से इस मामले में गिरफ्तार और फरार आरोपियों के 2019 के बाद के बैंक खातों के लेनदेन के अलावा ईमेल, मोबाइल काल, वाट्सऐप चैट आदि की पड़ताल की जा रही है.

गहना वशिष्ठ के कारोबारी पति सहित कई मौडल भी पुलिस जांच के दायरे में हैं. इस मामले में कुछ और गिरफ्तारियां होने के साथ बौलीवुड के चौंकाने वाले नए खुलासे होने की संभावना है. ●

पैरेंटिंग स्पैशल
गृहशोभा
शिशु की देखभाल से जुड़े मिथ
नैपी
स्लिमिंग मेकअप
साइशा सेन

मुक्ता
शिल्पा शेट्टी
हैल्दी बौडी हैल्दी माइंड

सरस सलिल
हवा हो गई विकास की सुर्खियां

सरिता
युवा नेता हैं कहां

सत्यकथा
जुलाई 2017
₹ 35.00
सुपर चोर बंटी को 10 वर्ष सजा

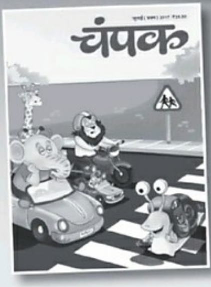

मनोहर कहानियां
फिल्मी सितारे
कर्नल का शिकारी बेटा

फार्म एन फूड
डीजल इंजन खरीदने में धोखा न खाएं
बदहाल कृषि अर्थव्यवस्था

सुखी जीवन
संतुष्ट परिवार
समृद्ध घर की
मार्गदर्शक
पत्रिकाएं

हमारा उद्देश्य पाठकों को ऐसे नए युग में ले जाना है जहां कड़ी मेहनत, लगन व बुद्धि के बल से सफलता प्राप्त होती है न कि जाति, धर्म, पाखंड, जोड़तोड़ या भ्रष्टाचार की वजह से. यदि हम आत्मसम्मान के साथ सिर ऊंचा कर के जीना चाहते हैं तो हमें अपना भविष्य आत्मबल पर तय करना होगा.

दिल्ली प्रैस कार्यालय फोन नं. : 011-41398888, एक्सटेंशन नं. : 221, 281
ईमेल - subscription@delhipress.in / circulation@delhipressgroup.com

धारावाहिक **'कसौटी जिंदगी की'** में एक बिजनेस टाईकून ऋषभ बजाज की भूमिका निभाकर घर-घर चर्चित हुए **अभिनेता रोनित रॉय** से कोई अपरिचित नहीं. उन्हें टीवी का अमिताभ बच्चन कहा जाता है. वे टीवी पर सबसे अधिक फीस लेने वाले कलाकार के रूप में भी जाने जाते हैं. उन्होंने टीवी धारावाहिकों के अलावा कई फिल्मों, वेब सीरीज और टीवी शो में काम किया है. स्पष्टभाषी रोनित को बचपन से अभिनय का शौक था, जिसमें साथ दिया उनके माता-पिता ने. हालांकि उन्हें कामयाबी मिलने में समय लगा, पर उन्होंने हर तरह का किरदार निभा कर अपनी एक अमिट छाप मनोरंजन की दुनिया में छोड़ी है. बहुत कम लोगों को पता है कि रोनित रॉय अभिनय के अलावा सिक्योरिटी सर्विस का भी काम करते हैं. उनकी कंपनी बॉलीवुड के कई बड़े-बड़े कलाकारों और उनके इवेंट्स को सुरक्षा देने का काम करती है.

5 साल बाद रोनित एक बार फिर से टीवी पर वापस लौटे हैं और **शेमारू टीवी** पर क्राइम थ्रिलर बेस्ड शो **'जुर्म और जज्बात'** में सूत्रधार का काम कर रहे हैं. शो के बारे में उनसे बात करना रोचक था, पेश हैं कुछ अंश:

हम सभी कुछ न कुछ जुर्म जीवन में करते हैं

– रोनित रॉय (अभिनेता)

इस शो को करने की खास वजह क्या है?

इस तरह के शो बाकी किसी भी शो से अलग हैं. और यह शो अपराधी के बारे में नहीं है. दूसरे क्राइम शो जैसे मर्डर, सीरियल किलर, अंडरवर्ल्ड आदि के बारे में भी नहीं है, यह नार्मल लोगों के बारे में कही गई कहानियों पर आधारित है. जब हमारी भावनाएं हद से अधिक बढ़ जाती हैं, जैसे ईर्ष्या, लोभ, गुस्सा आदि की वजह से व्यक्ति अपनी सद्बुद्धि खो देता है और जुर्म कर बैठता है. कई बार हम सुनते है कि एक पिता ने अपनी बेटी का कत्ल कर दिया, जबकि कोई भी पिता अपनी बेटी का कत्ल करना नहीं चाहता, लेकिन ऐसा कभी-कभी देखने को मिलता है. ऐसी ही कई कहानियां जो साधारण लोगों की हैं, जब वे अपने इमोशन को कंट्रोल न कर पाने की स्थिति में अपराध कर बैठते हैं. कुछ ऐसी ही रियल लाइफ से प्रेरित कहानियों को दिखाने की कोशिश की गई है.

आजकल लोगों में सहनशीलता की कमी अधिक देखने को मिल रही है, इसकी वजह क्या मानते हैं?

मुझे भी ऐसा लगता है कि लोगों में सहनशीलता की कमी आ चुकी है. इसकी कई वजहें हो सकती हैं, जिन्हे अभी बता पाना मुश्किल है. साल 2020 बहुत मुश्किल दौर से गुजरा है. जो घटनाएं आसपास घट रही हैं उन्हें समझ पाना किसी भी व्यक्ति के लिए मुश्किल है. लोगों की सहनशीलता कायम न रहने की वजह से सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक परिवेश इत्यादि में कुछ न कुछ समस्याएं आई हैं. यह सीरियस मुद्दा है, जिसे आज सबको समझने की जरुरत है. असल में ज्यों-ज्यों व्यक्ति आगे बढ़ता जाता है, उसकी मुसीबतें भी बढ़ती जाती हैं और जहां मुसीबतें होती हैं, उनका कोई न कोई हल भी होता है. कभी हल हमें जल्दी मिलता है, तो कभी उसे सामने रहते हुए भी हम नहीं देख पाते. इंसान को मन की शांति और संतुलन बनाए रखने की जरुरत है, ताकि वह अपनी समस्याओं का हल खुद ही निकाल सके.

यह टीवी शो क्या संदेश देना चाहता है?

आम इंसान की जिंदगी में अगर किसी भी प्रकार की समस्या आती है, तो उससे निबटने के तरीकों के बारें में यह शो जानकारी देता है.

क्या आपने अपने आसपास किसी आम इंसान को जज्बे की वजह से जुर्म करते देखा है?

हम सभी अपने जीवन में कुछ न कुछ छोटे-छोटे जुर्म करते हैं, जैसे जल्दबाजी में सिग्नल तोड़ना या चलती गाड़ी से उतर जाना, लेडीज कम्पार्टमेंट में जल्दी में घुस जाना आदि. यह सब जीवन में चलता रहता है, लेकिन मैंने कोई बड़ा जुर्म अपने आसपास नहीं देखा है.

आपने एक लंबी जर्नी तय की है, पहले और आज के टीवी शो या फिल्मों में क्या अंतर पाते हैं?

मेरे हिसाब से दुनिया में 7 कहानियां हैं. हर कहानी उन 7 कहानियों का ही मिश्रण होती है. कहानियां वही हैं, लेकिन उन्हें कहने का ढंग बदल गया है. समय के साथ सब बदल जाता है और हमें उसी के साथ चलना पड़ता है.

आपको टीवी का शहंशाह कहा जाता है, आप इस बात से कितना सहमत हैं?

यह दर्शकों का प्यार है कि वे मेरी तुलना इतने बड़े कलाकार के साथ कर रहे हैं. मैं दर्शकों का शुक्रगुजार हूं.

एक्टिंग में आना एक इत्तफाक था या बचपन से सोचा था?

मैं बचपन से एक्टर बनना चाहता था और कुछ करने के बारे में सोचा भी नहीं था. काम में परिवार वालों का सहयोग हमेशा रहा, किसी प्रकार की बाधा कभी नहीं आई.

ओटीटी प्लेटफॉर्म पर सर्टिफिकेशन होने पर क्या ओटीटी पर आने वाले सभी शो को खतरा हो सकता है? आपकी राय क्या है?

वह तो आने वाला समय ही बता सकता है. वर्ल्डवाइड वेब को कौन सा देश सर्टिफ़ाई कर सकेगा, इसे देखने की जरुरत है, क्योंकि वेब पूरे विश्व में चल रही है. ऐसे में उन्हें विदेश में दिखाई जाने वाली वेब सीरीज और भारत में दिखाई जाने वाली वेब सीरीज में अंतर रखना पड़ेगा, जो बहुत कठिन है. बहुत सारी बातें इसमें शामिल हैं, जिसके बारे में अभी सोचना ठीक नहीं.

आप अपनी जर्नी से कितने संतुष्ट हैं, क्या कोई मलाल रह गया?

मैं अपने काम और दर्शकों के प्यार से बहुत संतुष्ट हूं, लेकिन अभी भी 30 से 40 साल तक मुझे काम करना है. मैंने जो भी काम किया अपनी खुशी से किया और आगे भी करता रहूंगा.

लॉकडाउन के दौरान आपने क्या-क्या किया?

कोरोना ने बहुत सी बातें सिखाई हैं, जिनमें कुछ अच्छी हैं तो कुछ बुरी. पैंडेमिक के दौरान काफी लोगों की मदद भी मैंने की है. कुछ लोग साथ रहे, तो कुछ धोखा दे गए. कुछ बड़े लोगों के पास पैसे बाकी हैं, जो वे उस दौरान दे सकते थे, पर नहीं दिए. इसके अलावा परिवार के साथ समय बिताया.

किसी शो को करते समय किस तरह की कहानियों को आप चुनना पसंद करते हैं?

किसी भी कहानी को जब सुनने और करने में मजा आ रहा होता है, तो दर्शकों को भी वह अच्छी लगेगी, इसी सोच के साथ मैं कहानियां चुनता हूं. क्योंकि हम सब परफ़ॉर्मर हैं और अधिक से अधिक मनोरंजन दर्शकों को देना पसंद करते हैं.

क्या मनोहर कहानियां के जरिये आप कोई संदेश देना चाहते हैं?

मुझे काम करते हुए 30 वर्ष हो गए हैं और इन वर्षों में दर्शकों का जो प्यार का मिला है, उसका आभारी हूं. मेरा प्रयास आगे भी यही रहेगा कि मैं अच्छी-अच्छी कहानियों से दर्शकों का मनोरंजन कर सकूं और वे मेरा साथ देते रहें. इसके अलावा सारे लोग खुश और स्वस्थ रहें, यही कामना करता हूं.

• सोमा घोष

जुर्म और जज़्बात

shemaroo TV

बदलते आज के लिए

आशुतोष पांडेय अलग सोच, अलग राह

❑ सुनील वर्मा

अगर पुलिस फोर्स में आशुतोष पांडेय जैसे दिलेर, ईमानदार और होश में रह कर काम करने वाले अधिकारी हों तो अपराधियों को सबक सिखाना मुश्किल नहीं है. अपने दम पर ही आशुतोष सुपरकौप बने. उन्होंने ऐसेऐसे कारनामे किए कि...

आशुतोष पांडेय साल 2012 में जब लखनऊ के डीआईजी, एसएसपी बने थे तब उन्होंने पुलिसकर्मियों को मुखबिर तंत्र इस्तेमाल करने का सब से अच्छा तरीका सिखाया था. मोबाइल नंबर पर शिकायत दर्ज कराने का हाइटेक सिस्टम भी उन्होंने ही लौंच किया था.

आशुतोष सादी वर्दी में घूमते थे और शहर में खोखा लगा कर पानबीड़ी बेचने वाले पनवाड़ी से ले कर रेहड़ी पटरी लगाने वालों, फल व चाय वालों से मिल कर इस निर्देश के साथ उन्हें अपना मोबाइल नंबर लिखा विजिटिंग कार्ड थमा देते थे कि कहीं कोई गड़बड़ दिखे तो उन्हें सीधे फोन करें.

बस कुछ ही दिनों में आशुतोष पांडेय के ऐसे हजारों मुखबिरों का नेटवर्क तैयार हो गया. परिणाम यह हुआ कि थानेदार की लोकेशन पता करने के लिए वह संबंधित थाना क्षेत्र के किसी भी पानवाले को फोन कर लेते थे. इस से कई सचझूठ सामने आ जाते थे.

2016 में जब आशुतोष पांडेय कानपुर जोन के आईजी थे तो उन्होंने कानपुर पुलिस की छवि सुधारने के लिए भी सोशल मीडिया को माध्यम बना कर जनता के लिए एक फोन नंबर जारी किया, जिसे एक नंबर भरोसे का नाम दिया गया. यह नंबर खूब चर्चित हुआ और लोग आईजी आशुतोष पांडेय से सीधे जुड़ने लगे.

कानपुर आईजी के पद पर रहते हुए पांडेय ने हर वारदात को हर पहलू से समझने के लिए कानपुर के एक थाने में तैनात एसओ सहित वहां के सभी दरोगाओं की कार्यशैली देखने के लिए उन की बैठक ली. वहां पीड़ितों को भी बुलाया गया था. थानेदारों और पीड़ितों से आमनेसामने बात की गई तो पता चला कई थानेदारों ने जांच के नाम पर लीपापोती की थी. कई ने तो पीड़ितों को भटकाने की कोशिश की थी. कई ऐसे भी थे जिन की जांच सही दिशा में जा रही थी.

यह सब देख कर उन्होंने एफआईआर दर्ज करने से ले कर विवेचना तक में दरोगा और थानेदारों के खेल पर शिकंजा कसने के आदेश दिए. दरअसल पुलिस विभाग में किसी अधिकारी की संवेदनशीलता उस की कार्यशैली

को दर्शाती है. फिलहाल आशुतोष पांडेय उत्तर प्रदेश पुलिस के अपर महानिदेशक अभियोजन महानिदेशालय हैं.

हर कार्य दिवस की सुबह ठीक 10 बजे से अपने कक्ष में लगे कंप्यूटर के एक खास आइसीजेएस पोर्टल पर विभाग के प्रौसीक्यूटर्स की निगरानी में जुट जाते हैं. इस से गुमनामी में रहने वाला यूपी पुलिस का अभियोजन विभाग यूपी को देश में ई प्रौसीक्यूशन पोर्टल का उपयोग करने के लिए पहले नंबर पर आ खड़ा हुआ है.

POLICE LINE

बिहार के भोजपुर जिले में आरा के रहने वाले शिवानंद पांडेय के बड़े बेटे आशुतोष को बतौर सुपर कौप के रूप में पहचान दिलाई मुजफ्फरनगर जिले ने, जहां वे ढाई साल तक एसएसपी के पद पर तैनात रहे.

1998 में आशुतोष पांडेय की मुजफ्फरनगर जिले में एसएसपी के रूप में पहली नियुक्ति हुई. इस से पहले यहां केवल एसपी का पद था. दरअसल, प्रदेश सरकार ने आशुतोष पांडेय की मेहनत, लगन, ईमानदारी और कुछ नया करने की ललक को देखते हुए उन्हें एक खास मकसद से मुजफ्फरनगर में एसएसपी का पद सृजित कर भेजा था. साथ ही अपराधग्रस्त मुजफ्फरनगर से अपराध खत्म करने के लिए कुछ विशेष अधिकार भी दिए थे.

पश्चिमी उत्तर प्रदेश का जिला मुजफ्फरनगर किसान बहुल और जाट बहुल है. यहां की शहरी और ग्रामीण जितनी आबादी जाटों की है, कमोबेश उतनी ही आबादी मुसलिमों की भी है.

1990 से 2000 के दशक की बात करें तो मुजफ्फरनगर पश्चिमी उत्तर प्रदेश ही नहीं बल्कि पूरे उत्तर प्रदेश में अपराध में अव्वल था. अपहरण, फिरौती और हत्याओं में सब से आगे. ज्यादातर पुलिस वाले बड़े अपराधियों और रसूखदार लोगों की जीहुजूरी करते थे. कोई भी पुलिस कप्तान जिले में 6 महीने से ज्यादा नहीं टिक पाता था.

12 दिसंबर, 1998 को जब आशुतोष ने बतौर एसएसपी मुजफ्फरनगर में जौइन किया उसी दिन बदमाशों ने पैट्रोल पंप की एक बड़ी लूट, एक राहजनी और एक व्यक्ति का अपहरण किया.

अभी 2-3 दिन ही बीते थे कि मुजफ्फरनगर के थाना गंगोह के रहने वाले कुख्यात बदमाश बलकार सिंह ने सहारनपुर के एक बड़े उद्योगपति के 8 वर्षीय बेटे का अपहरण कर लिया और उस की धरपकड़ और बच्चे की बरामदगी की जिम्मेदारी आशुतोष पांडेय पर आई.

आशुतोष खुद अपराधी बलकार सिंह के गांव पहुंचे. उन्होंने उस के करीबी लोगों को पकड़ कर पूछताछ की, लेकिन किसी ने मुंह नहीं खोला.

इसी दौरान अपहृत बच्चे के परिजनों ने बिचौलियों के माध्यम से अपहर्त्ताओं से बातचीत की और फिरौती की रकम ले कर एक व्यक्ति को बच्चे को छुड़ाने के लिए बलकार गिरोह के पास भेज दिया.

बलकार गिरोह ने फिरौती की रकम भी ले ली और बच्चे को भी नहीं छोड़ा. साथ ही फिरौती ले कर गए बच्चे के रिश्तेदार को भी बंधक बना लिया. अब उन्होंने बच्चे के साथ रिश्तेदार को छोड़ने के लिए भी फिरौती की रकम मांगनी शुरू कर दी.

इस वारदात के बाद मुजफ्फरनगर और सहारनपुर की पुलिस ने गन्ने के खेतों, जंगलों, गांवों की खूब कौंबिंग की, लेकिन सब बेनतीजा. अपहृत के परिजनों ने इस बार ठोस माध्यम तलाश कर बच्चे और अपने रिश्तेदार को फिरौती की रकम दे कर छुड़ा लिया. इस से पूरे प्रदेश में दोनों जिलों की पुलिस की बहुत किरकिरी हुई.

काफी माथापच्ची के बाद आशुतोष पांडेय की समझ में आया कि गन्ना इस इलाके में सिर्फ किसानों की ही नहीं, अपराध और अपराधियों के लिए भी रीढ़ का काम करता है.

मुजफ्फरनगर में 90 फीसदी से ज्यादा जमीन पर गन्ने की खेती होती है. इसी खेती से यहां का किसान, आढ़ती और व्यापारी सब समृद्ध हैं. हर गांव में 100-50 ट्रैक्टर और ट्यूबवैल हैं.

समृद्धि हमेशा अपराध को जन्म देती है. मुजफ्फरनगर इलाके में अपराधी पैदा होते हैं मूछों की लड़ाई और इलाके में अपनी हनक पैदा करने के कारण. लेकिन बाद में अपराध के जरिए पैसा कमा कर खुद को जिंदा रखना उन की मजबूरी बन जाता है.

इसी के चलते मुजफ्फरनगर में हर अपराधी और उस के गैंग ने बड़े किसानों, आढ़तियों और उद्योगपतियों को निशाना बना कर उन का अपहरण करने और बदले में फिरौती वसूलने का धंधा शुरू किया.

अपहर्त्ता कईकई दिन तक अपने शिकार को गन्ने के खेतों में छिपा कर रखते और इन

खेतों व ट्यूबवैलों के मालिक किसान परिवार उन्हें खाने से ले कर दूसरी तरह का प्रश्रय देते.

उन दिनों मोबाइल फोन न के बराबर प्रचलन में थे. दूसरे इलेक्ट्रौनिक माध्यम भी नहीं थे, जिन के जरिए अपराधी अपहृत के परिजनों से संपर्क करते.

अपराधियों का एकमात्र माध्यम या तो लैंडलाइन फोन थे या फिर हाथ से लिखे पत्र, जिन्हें अपने शिकार के परिजनों तक पहुंचा कर वह फिरौती की मांग करते थे.

मुजफ्फरनगर के सामाजिक तानेबाने का अध्ययन करने के बाद आशुतोष पांडेय की समझ में यह बात भी आ गई कि इस इलाके में पंचायत व्यवस्था काफी मजबूत है. पंचायतों का असर इतना गहरा है कि जो मामले अदालतों तक जाने चाहिए, उन्हें पंचायत की मोहर लगा कर सुलझा दिया जाता था.

आशुतोष पांडेय ने ठान लिया कि वे मुजफ्फरनगर से असफल कप्तान का ठप्पा लगवा कर नहीं जाएंगे, बल्कि पंचायत और प्रभावशाली लोगों में पैठ बना कर बैठे अपराधियों का नेटवर्क तोड़ कर जाएंगे.

अपराध और अपराधियों की मनोवृत्ति तथा सामाजिक तानेबाने का विश्लेषण कर के आशुतोष पांडेय ने नए सिरे से जिला पुलिस के पुनर्गठन की शुरुआत की.

उन्होंने ऐसे पुलिसकर्मियों का पता लगाया, जिन का आचरण संदिग्ध था, मूलरूप से इसी इलाके के रहने वाले थे और जिन की अपराधी प्रवृत्ति के लोगों से घनिष्ठता थी. जो गोपनीय सूचनाओं को लीक करते थे.

उन्होंने सब से पहले सिपाही से ले कर दरोगा स्तर के ऐसे ही पुलिस वालों की सूची तैयार की. इस के बाद उन्होंने ऐसे पुलिस वालों को या तो जिले से बाहर ट्रांसफर कर दिया या फिर उन की नियुक्ति गैरजरूरी पदों पर कर दी.

फिर आशुतोष पांडेय ने ऐसे पुलिसकर्मियों को चिह्नित करना शुरू किया जो न सिर्फ ड्यूटी के प्रति समर्पित थे बल्कि उन में बहादुरी का जज्बा और कुछ कर गुजरने की ललक थी.

सभी थाना स्तरों पर ऐसे पुलिसकर्मियों का एक स्पैशल स्क्वायड तैयार कराया. सभी थाना प्रभारियों से कहा गया कि वे इस स्क्वायड के पुलिसकर्मियों से नियमित काम न करवा कर उन्हें अपराधियों की सुरागरसी और स्पैशल टास्क पर लगाएं. आशुतोष पांडेय ने राज्य सरकार से संपर्क कर उन्हें जिला पुलिस की जरूरतों से अवगत कराया.

राज्य सरकार ने जिला पुलिस को 26 मोटरसाइकिल, मोटोरोला के शक्तिशाली वायरलैस सैट और कुछ मोबाइल फोन उपलब्ध करा दिए. संसाधन मिलने के बाद आशुतोष ने अलगअलग कई और दस्तों का गठन किया. इन दस्तों को लेपर्ड दस्तों का नाम दिया गया.

अपराध के खिलाफ अपनी व्यूह रचना को अंजाम देने से पहले आशुतोष पांडेय मुजफ्फरनगर की जनता, कारोबारियों और उस तबके को विश्वास में लेना चाहते थे, जिन का मकसद शहर में अमनचैन कायम रखना था. उन्होंने समाज के इन सभी तबकों के जिम्मेदार लोगों से मिलनाजुलना शुरू किया.

उन्होंने इन सब लोगों को भरोसा दिलाया कि वह मुजफ्फरनगर में कानूनव्यवस्था कायम करने आए हैं. लेकिन यह काम उन के सहयोग के बिना नहीं हो सकता. उन्होंने तमाम लोगों को अपना मोबाइल फोन नंबर दे कर कहा कि कोई आपराधिक सूचना हो या कोई भी निजी परेशानी हो तो वे 24 घंटे में कभी भी निस्संकोच उन्हें फोन कर सकते हैं. वह सूचना मिलते ही काररवाई करेंगे.

> समृद्धि हमेशा अपराध को जन्म देती है. मुजफ्फरनगर इलाके में अपराधी पैदा होते हैं मूछों की लड़ाई और इलाके में अपनी हनक पैदा करने के कारण. लेकिन बाद में अपराध के जरिए पैसा कमा कर खुद को जिंदा रखना उन की मजबूरी बन जाता है.

अचानक पुलिस कप्तान के इस वादे पर भरोसा करना लोगों के लिए मुश्किल तो था. लेकिन आशुतोष पांडेय ने हार नहीं मानी, वह लगातार प्रयास करते रहे. आखिरकार उन के प्रयास रंग लाने लगे.

समाज और कानून व्यवस्था से सरोकार रखने वाले लोग आशुतोष पांडेय को फोन करने लगे. अपराधियों के बारे में सूचना देने लगे. यह जो नया सूचना तंत्र विकसित हो रहा था, उस में शहर के अमन पसंद लोग जिम्मेदारी उठा रहे थे.

आशुतोष पांडेय ने अपने सिटिजन सूचना तंत्र से मिली जानकारी लेपर्ड दस्तों को दे कर उन्हें दौड़ानाभगाना शुरू किया तो जल्द ही नतीजे भी सामने आने लगे. रंगदारी, अपहरण, लूट और डकैती करने वाले गिरोह पुलिस के चंगुल में फंसने शुरू हो गए.

मुजफ्फरनगर में जनवरी, 1999 से शुरू हुए पुलिस के औपरेशन क्लीन की सब से बड़ी खूबी यह थी कि आशुतोष पांडेय के हर मिशन की व्यूह रचना भी उन्हीं की होती थी और संचार तंत्र भी उन्हीं का होता था. पांडेय ने जो लेपर्ड दस्ते तैयार किए थे, बस उस सूचना के आधार पर उन का काम अपराधियों को दबोचने भर का होता था.

शक्तिशाली वायरलैस सैट और मोबाइल फोन से लैस 26 मोटरसाइकिलों पर सवार इन हथियारबंद लेपर्ड दस्तों ने मुजफ्फरनगर के चप्पेचप्पे तक अपनी पहुंच बना ली थी.

इन दस्तों में ज्यादातर लोग सादी वर्दी में होते थे, जो खामोशी के साथ किसी नुक्कड़ पर व्यस्त बाजार में, बस अड्डे पर, स्टेशन पर या चाय पान की दुकान पर साधारण वेशभूषा में आम आदमी की तरह मौजूद रहते थे.

साल 1999 की शुरुआत होतेहोते आशुतोष पांडेय का सूचना तंत्र इतना विकसित हो गया कि अचानक कोई वारदात होती, तत्काल उस की सूचना कप्तान आशुतोष के पास आ जाती. वह इलाके के लेपर्ड दस्ते और स्थानीय पुलिस को सूचना दे कर औपरेशन क्लीन के लिए भेजते. इस के बाद या तो मुठभेड़ होती, जिस में बदमाश मारे जाते या फिर बदमाश पुलिस की गिरफ्त में आ जाते.

पांडेय ने जिस मिशन की शुरुआत की थी, उस की सफलताओं का आगाज हो चुका था. एक के बाद एक गैंगस्टर और गैंग पकड़े जाने लगे. लगातार मुठभेड़ होने लगीं, जिन में कुख्यात अपराधी मारे जाने लगे.

अपराध और अपराधियों से त्रस्त आ चुकी मुजफ्फरनगर की जनता का पुलिस पर भरोसा कायम होने लगा सूचना का जो तंत्र विकसित

हुआ था, वह और तेजी से काम करने लगा.

नतीजा यह निकला कि 16 फरवरी, 1999 को जब आशुतोष पांडेय का मुजफ्फरनगर प्रभार संभाले हुए 66वां दिन था तो अचानक उन्हें भौंरा कला के एक किसान ने फोन पर सूचना दी कि कुख्यात अंतरराजीय अपराधी रविंदर उर्फ चीता भौंरा कलां में अमरपाल किसान के ट्यूबवैल में छिपा है.

आशुतोष पांडेय ने पीएसी और स्थानीय पुलिस के साथ मिल कर खुद उस इलाके की घेराबंदी की. दोनों तरफ से मुठभेड़ शुरू हो गई. मुठभेड़ करीब 5 घंटे तक चली. आसपास के हजारों लोगों ने दिनदहाड़े हुई वह मुठभेड़ देखी और आखिरकार जिले का टौप 10 बदमाश रविंदर मारा गया.

बैंक डकैती से ले कर अपहरण की वारदातों में वांछित इस बदमाश के मारे जाते ही इलाके में आशुतोष पांडेय जिंदाबाद के नारे गूंजने लगे.

आशुतोष पांडेय ऐसे नहीं थे, जिन पर अपनी जयकार का नशा चढ़ता. मुजफ्फरनगर जिले को अपराधमुक्त करना चाहते थे. रविंदर उर्फ चीता को ठिकाने लगाते ही वह इलाके से निकल लिए, क्योंकि एक और खबर उन का इंतजार कर रही थी.

पांडेय को उन के सिटिजन सूचना तंत्र से जानकारी मिली थी कि बाबू नाम का एक बदमाश जिस पर करीब 1 लाख का ईनाम है, सिविल लाइन में किसी व्यापारी से रंगदारी वसूलने के लिए आने वाला है.

आशुतोष पांडेय सीधे सिविल लाइन पहुंचे, यहां नई टीम को बुलाया गया. फिर पुलिस टीम को एकत्र कर के बताया कि सूचना क्या है और उस पर क्या ऐक्शन लेना है.

सूचना सही थी. बताए गए समय और जगह पर कुख्यात अपराधी बाबू पहुंचा. पुलिस ने उसे चारों तरफ से घेर लिया और आत्मसमर्पण की चेतावनी दी. लिहाजा क्रौस फायरिंग शुरू हो गई. करीब 1 घंटे तक गोलीबारी हुई. घेरा तोड़ कर भागे बाबू को भी आखिरकार पुलिस ने धराशाई कर दिया.

मुजफ्फरनगर के इतिहास में शायद यह पहला दिन था जब एक ही दिन में पुलिस ने एक साथ 2 बड़े अपराधियों का एनकाउंटर कर उन्हें धराशाई कर दिया था.

इस एनकाउंटर के बाद मुजफ्फरनगर की जनता का पुलिस पर भरोसा वापस लौट आया. लोगों को लगने लगा कि आशुतोष पांडेय के रहते या तो बदमाश दिखाई नहीं देंगे. अगर दिखे तो उन के सिर्फ दो अंजाम होंगे या तो वे श्मशान में होंगे या सलाखों के पीछे.

आशुतोष पांडेय वारदात को समझने के लिए थाने में ही दरोगा और पीड़ित को आमनेसामने बैठा कर खुद मामले को समझते थे, जिस से लोगों में पुलिस के प्रति विश्वास बढ़ गया.

कानपुर जोन के आईजी रहते हुए उन्होंने सोशल मीडिया को माध्यम बना कर जनता के लिए एक फोन नंबर जारी किया, जिसे एक नंबर भरोसे का नाम दिया गया.

आशुतोष पांडेय पर जिम्मेदारियां बहुत बड़ी थीं. क्योंकि यह सिर्फ शुरुआत थी इसे अंजाम तक पहुंचाना बेहद मुश्किल काम था. पांडेय सुबह 10 बजे तक अपने दफ्तर पहुंच जाते थे, जहां जनता से मुलाकात करते, शिकायतें सुनते.

उस के बाद कोई सूचना मिलने पर उन का काफिला अनजान मंजिल की तरफ निकल पड़ता. वे किसी गांव में किसानों के बीच बैठक लगाते या व्यापारियों के बीच भरोसा पैदा करने के लिए बैठक करते.

आशुतोष पांडेय कईकई दिन तक अपनी पत्नी और दोनों बच्चों से नहीं मिल पाते थे. घर जाने की फुरसत नहीं होती थी इसलिए गाड़ी में ही हर वक्त 1-2 जोड़ी कपड़े रखते थे.

गाड़ी में हमेशा पानी की बोतलें, भुने हुए चने और गुड़ मौजूद रहता था. जरूरत पड़ने पर गुड़ और चने खा कर ऊपर से पानी पी लेते थे. थकान हो जाती थी तो गाड़ी में बैठ कर ही कुछ देर झपकी मार लेते थे.

आशुतोष पांडेय अकेले ऐसा नहीं करते थे. जिले के हर पुलिस कर्मचारी के लिए उन्होंने शहर के अपराधमुक्त होने तक ऐसी ही दिनचर्या अपनाने का वादा ले रखा था.

रविंदर उर्फ चीता और बाबू के एनकाउंटर के बाद आशुतोष पांडेय ही नहीं, पूरे जिले की पुलिस के हौसले बुलंदी पर थे. आईजी जोन से ले कर लखनऊ में उच्चस्तरीय अधिकारियों में भी आशुतोष पांडेय के काम की सराहना हो रही थी.

लेकिन आशुतोष इतने भर से संतुष्ट नहीं थे. इस के बाद उन्होंने अगस्त, 1999 में मंसूरपुर

इलाके में ईनामी बदमाश नरेंद्र औफ गंजा को मुठभेड़ में मार गिराया. चंद रोज बाद ही बड़ी रकम के इनामी बदमाश इतवारी को सिविल लाइन इलाके में ढेर कर दिया गया. 8 नवंबर, 1999 को उन्होंने खतौली के कुख्यात अपराधी सुरेंद्र को मुठभेड़ में धराशाई कर दिया.

मुजफ्फरनगर में जिस तरह से एक के बाद एक ताबड़तोड़ एनकाउंटर हो रहे थे, सक्रिय अपराधियों को सलाखों के पीछे भेजा जा रहा था. उस ने अपराधियों के बीच आशुतोष पांडेय के नाम का खौफ भर दिया था. उन्हें बड़ी कामयाबी तब मिली जब 27 अगस्त, 2000 को एक सूचना के आधार पर उन्होंने शामली के जंगलों में खड़े एक ट्रक को अपने कब्जे में लिया.

इस ट्रक में सवार 2 लोगों ने पुलिस पर फायरिंग शुरू कर दी. पुलिस की तरफ से भी फायरिंग शुरू हो गई. फलस्वरूप दोनों बदमाश मारे गए. बाद में जिन की पहचान पंजाब के सुखबीर शेरी ओर दिल्ली के नरेंद्र नांगल के रूप में हुई.

पता चला कि ये दोनों आतंकवादी थे और दिल्ली में एक धार्मिक कार्यक्रम के दौरान विस्फोट करना चाहते थे. ये दोनों 5 लोगों की हत्या में वांछित थे. जिस ट्रक में दोनों बैठे थे उसे उन्होंने सहारनपुर से लूटा था और ट्रक में 50 लाख रुपए की सिगरेट भरी थी. पुलिस को उन के कब्जे से हथियार व गोलाबारूद भी मिला.

आशुतोष पांडेय द्वारा छेड़े गए मिशन के तहत बदमाश पकड़े भी जा रहे थे और मारे भी जा रहे थे. लेकिन पांडेय जानते थे कि मुजफ्फरनगर इलाके में अपराध की मूल जड़ गन्ना है. क्योंकि गन्ना बढ़ने के साथ उस की बिक्री से किसानों व क्रेशर मालिकों के पास पैसा आने लगता है.

बदमाश उसी पैसे को लूटने या फिरौती में लेने के लिए अपहरण की वारदातों को अंजाम देते हैं. कुल मिला कर इलाके के अपराधियों के लिए गन्ने की फसल मुनाफे का धंधा बन गई थी. आशुतोष पांडेय चाहते थे कि किसी भी तरह मुनाफे के इस धंधे को घाटे में बदल दिया जाए.

> समाज और कानून व्यवस्था से सरोकार रखने वाले लोग आशुतोष पांडेय को फोन करने लगे. अपराधियों के बारे में सूचना देने लगे. यह जो नया सूचना तंत्र विकसित हो रहा था, उस में शहर के अमन पसंद लोग जिम्मेदारी उठा रहे थे.

आशुतोष ने अब अपना सारा ध्यान अपहरण करने वाले गिरोह और बदमाशों पर केंद्रित कर दिया. उन्होंने पिछले 2-3 सालों में हुए अपहरणों की पुरानी वारदातों की 1-1 पुरानी फाइल को देखना शुरू किया.

अपहरण के इन मामलों में जो भी लोग संदिग्ध थे, जिन लोगों ने अपहर्त्ताओं को पनाह दी थी अथवा बिचौलिए का काम किया था, उन्होंने ऐसे तमाम लोगों की धरपकड़ शुरू करवा दी. रोज ऐसे 30-40 लोग पकड़े जाने लगे.

इस से अपराधियों के शरणदाता अचानक बदमाशों से कन्नी काटने लगे. जिस का नतीजा यह निकला कि मुजफ्फरनगर में अचानक साल 2000 में फिरौती के लिए अपहरण की वारदातों में भारी कमी आ गई.

लेकिन इस के बावजूद कुछ मुसलिम गैंग अभी तक अपहरण की वारदात छोड़ने को तैयार नहीं थे.

दिसंबर 2000 में चरथावल कस्बे के दुधाली गांव में बदमाशों ने भट्ठा मालिक जितेंद्र सिंह का अपहरण कर लिया और परिवार से मोटी फिरौती मांगी. शिकायत कप्तान आशुतोष पांडेय तक पहुंची तो उन्होंने तुरंत मुखबिरों के नेटवर्क को सक्रिय किया. पता चला कि जितेंद्र सिंह का अपहरण शकील, अकरम और दिलशाद नाम के अपराधियों ने किया है. यह भी पता चल गया कि बदमाशों ने जितेंद्र सिंह को दुधाहेड़ी के जंगलों में रखा हुआ है.

उन्होंने खुद इस मामले की कमान संभाली और पूरे जंगल की घेराबंदी कर दी. दिनभर पुलिस और बदमाशों की मुठभेड़ चलती रही, जिस के फलस्वरूप शाम होतेहोते तीनों बदमाश मुठभेड़ में धराशाई हो गए और जितेंद्र सिंह को सकुशल मुक्त करा लिया गया.

1999 से ले कर साल 2000 तक मुजफ्फरनगर जिले में कई ऐसे अपहरण हुए, जिस में आशुतोष पांडेय की अगुवाई में पुलिस ने न सिर्फ अपहृत व्यक्ति को सकुशल मुक्त कराया. बल्कि अपहर्त्ताओं को या तो गिरफ्तार किया या फिर मुठभेड़ में धराशाई कर दिया. पांडेय ने ऐसे सभी मामलों में अपहर्त्ताओं को अपने खेतों, ट्यूबवैल और घरों में शरण देने वाले किसानों और उन के परिवार की महिलाओं तक को आरोपी बना कर सलाखों के पीछे पहुंचा दिया.

परिणाम यह निकला कि लोग अपराधियों को शरण देने से बचने लगे. कल तक अपहरण को मुनाफे का धंधा मानने वाले अपराधियों को अब वही धंधा घाटे का लगने लगा. यही

आशुतोष पांडेय रोजाना 10 बजे जनता से मुलाकात कर शिकायतें सुनते और उस का निवारण करते

सिटिजन सूचना तंत्र से मिलने वाली जानकारियों को आशुतोष पांडेय अपने साथियों के साथ साझा करते और अपराधियों पर नकेल कसने की योजना बनाते थे

वजह रही कि साल 2001 में मुजफ्फरनगर जिले में फिरौती के लिए अपहरण की एक भी वारदात नहीं हुई.

इस बीच जिले के सभी 28 थानों पर पांडेय की इतनी मजबूत पकड़ कायम हो चुकी थी कि अगर वहां कोई मामूली सी भी गड़बड़ या घटना होती तो इस की सूचना उन तक पहुंच जाती थी.

लोगों से मिली सूचनाओं के बूते पर उन्होंने जिले के करीब 525 ऐसे लोगों की सूची बनाई थी, जो या तो सफेदपोश थे या फिर किसी पंचायत अथवा राजनीतिक दल से जुड़े थे. इन सभी लोगों पर आशुतोष पांडेय ने अपनी टीम के लोगों को नजर रखने के लिए छोड़ा हुआ था.

ऐसे लोगों की अपराध में जरा सी भी भूमिका सामने आने पर आशुतोष पांडेय मीडिया के माध्यम से जनता के बीच उन के चरित्र का खुलासा करके उन्हें जेल भेजते थे. इसलिए तमाम सफेदपोश लोग भी आशुतोष पांडेय के खौफ से डरने लगे थे.

सफेदपोश अपराधियों के खिलाफ की गई काररवाई में सब से चर्चित और उल्लेखनीय मामला समाजवादी पार्टी से विधान परिषद सदस्य कादिर राणा के भतीजे शाहनवाज राणा की गिरफ्तारी का था.

शाहनवाज राणा की शहर में तूती बोलती थी. किसी के साथ भी मारपीट कर देना किसी की गाड़ी को अपनी गाड़ी से टक्कर मार देना शाहनवाज राणा का शगल था. पुलिस और स्थानीय प्रशासन पर प्रभाव रखने और धमक दिखाने के लिए शाहनवाज राणा ने एक अखबार भी निकाल रखा था. शाहनवाज राणा पर कोई हाथ नहीं डाल पाता था. शाहनवाज राणा पहले हत्या के एक मामले में गिरफ्तार हो चुका था लेकिन सबूत न होने की वजह से बाद में अदालत से रिहा हो गया था. इस से मुजफ्फरनगर में शाहनवाज की गुंडागर्दी और भी बढ़ गई थी. लेकिन आशुतोष पांडेय ने शाहनवाज को भी नहीं छोड़ा.

दरअसल, मुजफ्फरनगर के रमन स्टील के मालिक रमन कुमार ने आशुतोष पांडेय को फोन कर के बताया कि शाहनवाज राणा और उस के साथी उस की फैक्ट्री से लोहे के कबाड़ का ट्रक लूट रहे हैं.

सूचना मिलते ही आशुतोष पांडेय अपने स्पैशल दस्ते के साथ मौके पर पहुंचे और शाहनवाज राणा व उस के साथियों को पकड़ कर थाने ले आए.

शाहनवाज राजनीतिक पकड़ वाला व्यक्ति था. चाचा कादिर राणा प्रदेश की प्रमुख विपक्षी पार्टी का एमएलसी था. थाने पर एक खास समुदाय के समर्थकों की भीड़ जुटनी शुरू हो गई.

आशुतोष पांडेय पर शाहनवाज को छोड़ने के लिए उच्चाधिकारियों से ले कर विपक्षी पार्टी के नेताओं का दबाव बढ़ने लगा. लेकिन आशुतोष पांडेय उसूलों के पक्के थे. उन्होंने शाहनवाज को खुद मौके पर जा कर पकड़ा था. लिहाजा छोड़ने का सवाल ही नहीं था.

अगर दबाव में आ कर वह शाहनवाज को छोड़ देते तो न सिर्फ ढाई साल में की गई उन की मेहनत पर पानी फिर जाता बल्कि शाहनवाज राणा के हौसले और ज्यादा बुलंद हो जाते.

आशुतोष पांडेय ने तबादले और दंड की परवाह किए बिना शाहनवाज राणा के खिलाफ मामला दर्ज करवाया और उसे साथियों के साथ जेल भिजवा दिया.

मुजफ्फरनगर जिले में यह मामला एक आईपीएस अफसर के ईमानदार फैसले की नजीर बन गया और लोगों ने आशुतोष पांडेय की हिम्मत का लोहा मान लिया.

यही कारण रहा कि मुजफ्फरनगर में अपनी तैनाती के दौरान इकहरे शरीर के मालिक आशुतोष पांडेय हमेशा लौह पुलिस अफसर बन कर खड़े रहे.

मुजफ्फरनगर में ढाई साल के लंबे कार्यकाल के बाद आशुतोष पांडेय की नियुक्ति अलगअलग जगहों पर रही. हर जगह उन्होंने जो काम किए, वह सब से हट कर थे. पांडेय 2005 में वाराणसी और साल 2012 में लखनऊ के एसएसपी डीआईजी रहे.

सभी जगह आशुतोष पांडेय का नाम सुनते ही गैरकानूनी काम करने वाले लोग डरते थे. 2008 में आशुतोष पांडेय को प्रोन्नत कर उन्हें डीआईजी का पद सौंपा गया. इस के बाद उन्हें 18 मई, 2012 में प्रमोशन देते हुए आईजी बना दिया गया.

कानुपर के अलावा उन की नियुक्ति आगरा जोन में भी रही और 1 जनवरी, 2017 को वह यूपी के एडीजी बना दिए गए. अपहरण मामलों को सुलझाने के विशेषज्ञ, मुजफ्फरनगर में 100 से ज्यादा अपराधियों के एनकाउंटर में 30 एनकांउटर में खुद मोर्चा संभालने और कानपुर में बहुचर्चित ज्योति हत्याकांड की गुत्थी सुलझाने में अहम रोल निभाने वाले आशुतोष पांडेय को राष्ट्रपति मैडल मिल चुका है. ●

विदिशा, मध्य प्रदेश

मौज मजे में चली कटार

❑ विजय सोनी

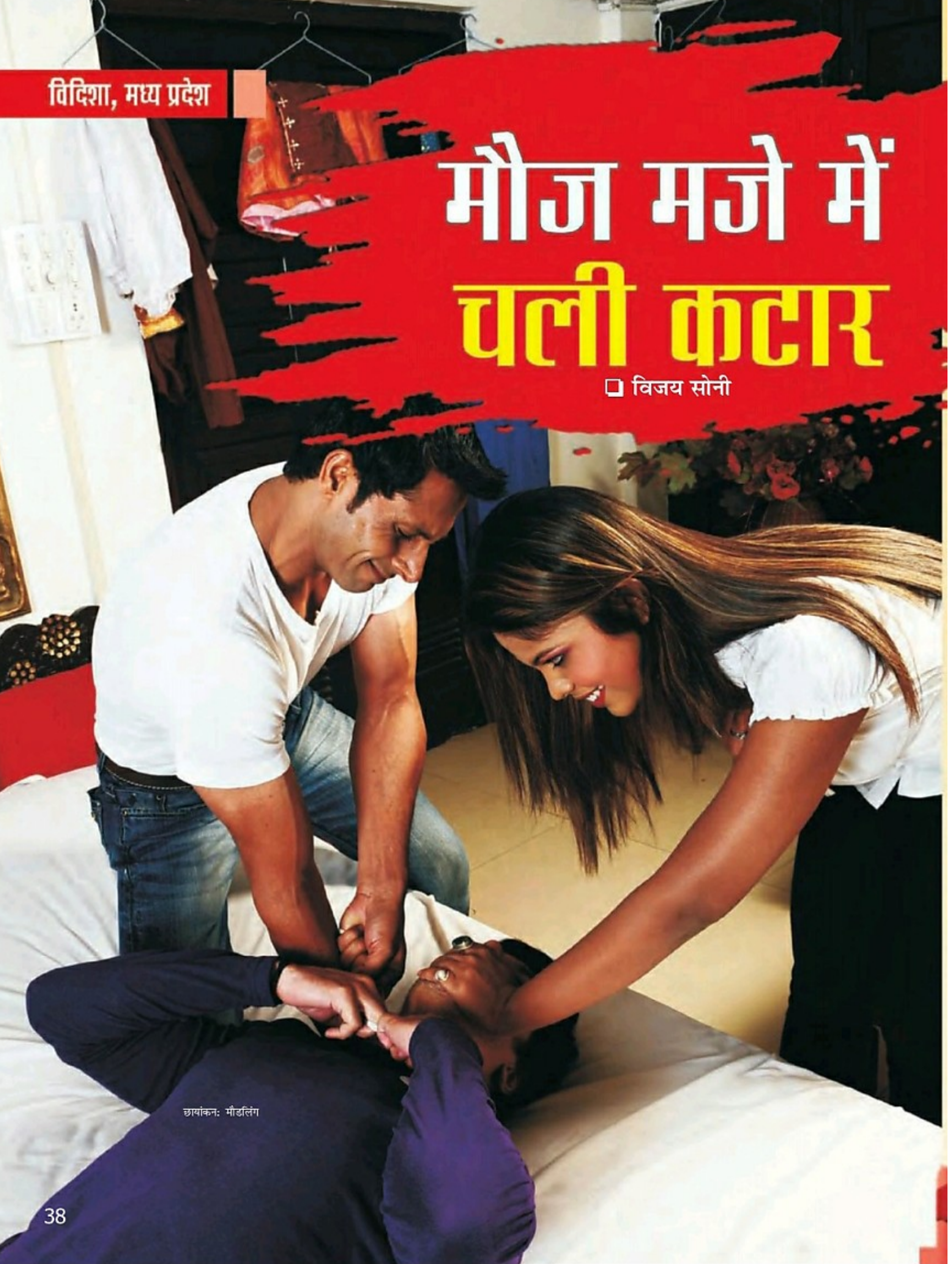

छायांकन: मौडलिंग

कमल और पप्पन मिल कर गांजे की तसकरी करते थे. पप्पन का 2 लाख का माल पकड़ा गया और उसे जेल जाना पड़ा तो उसे शक हुआ कि कमल ने मुखबिरी की है. उस ने यह बात अपनी पत्नी रानी को भी बता दी. फिर रानी ने ऐसा दांव खेला कि कमल तब शिकार बना जब वह...

पप्पन की पत्नी रानी: कमल सिंधी पैसे नहीं दे रहा था तो रानी ने उस की हत्या करवा दी

23 सिंतबर की शाम रात में बदलने को थी. विदिशा के सिविललाइंस थानाप्रभारी कमलेश सोनी रात के समय में अपने थाना क्षेत्र की सुरक्षा व्यवस्था चाकचौबंद करने की कवायद में लगे थे. तभी उन के पास आए एक युवक ने जो जानकारी दी, वह चौंका देने वाली थी.

युवक भोपाल का रहने वाला था, जिस के साथ उस की मां सविता सिंधी भी थाने आई थी. दोनों ने टीआई कमलेश सोनी को बताया कि उन के पति कमल सिंधी की हत्या कर दी गई है, जिस का शव हालाली कालोनी में एफसीआई गोदाम के पास रहने वाले पप्पन सिंधी के घर के अंदर पलंग में पड़ा है.

नौकर अभिषेक लोधी

रानी जानती थी कि कमल को काबू करना उन के वश की बात नहीं थी. इसलिए उस के नौकर अभिषेक ने अपने दोस्त सतीश मेहरा, मोहन उर्फ बिट्टू रघुवंशी तथा 2 नाबालिग दोस्तों से बात की.

सतीश मेहरा

हत्या के मामले की ऐसी सूचना विरली ही होती है. आमतौर पर लाशें नदी, तालाबों या फिर सुनसान जगहों पर मिलती हैं. लेकिन यहां फरियादी खुद लाश के ठिकाने की जानकारी ले कर थाने आया था.

बहरहाल, हत्या का ममला गंभीर होता है, सो टीआई सिविललाइंस कमलेश सोनी तत्काल पुलिस टीम के साथ हालाली कालोनी के लिए रवाना हो गए. हालाली कालोनी के उस मकान में लगभग 50 वर्षीय पप्पन सिंधी अपने परिवार के साथ रहता था.

मनोहर कहानियां के स्वामित्व व अन्य विवरण संबंधी जानकारी फौर्म 4, देखिए नियम 8

1. प्रकाशन का स्थान : नई दिल्ली. 2. प्रकाशन अवधि : मासिक. 3,4,5. मुद्रक, प्रकाशक व संपादक का नाम : परेश नाथ 6. राष्ट्रीयता : भारतीय. पता : ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली-110055, 7. उन व्यक्तियों के नाम व पते, जो इस समाचारपत्र के मालिक व हिस्सेदार हैं या जो इस की पूंजी के 1 प्रतिशत से अधिक के शेयरहोल्डर हैं :

शोभिका मीडिया प्रा.लि., ई-8, झंडेवाला एस्टेट, रानी झांसी रोड, नई दिल्ली- 110055.

मैं परेश नाथ, घोषणा करता हूं कि ऊपर दिया गया विवरण मेरी पूरी जानकारी और विश्वास के अनुसार सही है.

हस्ताक्षर (परेश नाथ)

पुलिस ने घर के अंदर जा कर देखा. तलाशी ली तो पाया कि कमरे में पड़े पलंग के बौक्स के अंदर कमल सिंधी की लाश बुरी तरह खून से लथपथ हालत में पड़ी थी.

जाहिर है पलंग के बौक्स के अंदर तो उस का कत्ल किया नहीं गया होगा. बौक्स में उसे लाश छिपाने की गरज से डाला गया होगा. इसलिए मौके की बारीकी से जांच करने पर यह साफ हो गया कि फर्श से खून साफ करने की कोशिश की गई थी.

यानी कमल की हत्या उसी मकान में की गई थी. सविता ने बताया कि यहां पप्पन की दूसरी पत्नी रानी, उस की बहन मोनिका और एक सहेली अंजलि के अलावा घर का नौकर अभिषेक लोधी रहता था. लेकिन उस वक्त सभी घर से लापता थे. जबकि खुद पप्पन को कुछ समय पहले ही विदिशा पुलिस ने 200 किलो गांजे के साथ पकड़ा था, इसलिए वह जेल में था.

मामला गंभीर था, इसलिए वारदात की सूचना पा कर एसपी विनायक वर्मा, एडिशनल एसपी संजय साहू और सीएसपी विकास पांडे भी एफएसएल की टीम के साथ मौके पर पहुंच गए. जांच में सामने आया कि मृतक कमल का गला काटने के अलावा उस के सिर पर किसी भारी चीज से चोट की गई थी, जिस से उस का भेजा निकल कर बाहर आ गया था.

शुरुआती पूछताछ में मृतक कमल की पत्नी सविता ने बताया कि वे लोग मूलरूप से भोपाल के बैरागड़ में रहते हैं. पप्पन और कमल गहरे दोस्त होने के कारण भाइयों की तरह रहते थे. पप्पन के जेल जाने के बाद कमल कभीकभी पप्पन की पत्नी रानी की मदद करने यहां आता था.

उस ने आगे बताया कि वे आज एक परिचित और अपने बेटे के साथ थाने द्वारा जब्त की गई अपनी गाड़ी सुपुर्दगी में लेने अदालत गए थे. कमल भी उन के साथ था. लेकिन दोपहर के समय कमल ने अचानक कहा कि उसे कुछ याद आ गया है. वह 10-15 मिनट में लौट आएगा. इस के बाद वह अदालत से अपनी कार ले कर कहीं चला गया था.

रानी के घर में किसी तरह का परदा नहीं चलता था, सब खुलेआम ऐश करते थे. इसलिए जब रानी चाय बनाने गई तो कमल रानी की बहन मोनिका के सामने ही अंजलि से लिपट गया.

जब कमल काफी देर तक वापस नहीं आया तो उन्होंने उसे फोन लगाया. इस पर कमल ने बताया कि रानी को कुछ पैसों की जरूरत है इसलिए वह पप्पन के घर आया हुआ है. कुछ देर में कोर्ट पहुंच जाएगा.

हो चुका था काल

इस के बाद भी कमल घंटों बीत जाने पर वापस नहीं आया. उस का मोबाइल भी स्विच्ड औफ हो गया तो कमल का बेटा अपने पिता की खबर लेने पप्पन के घर पहुंचा. पप्पन के घर पर कोई नहीं था लेकिन घर का दरवाजा खुला पड़ा था. जब वह अंदर पहुंचा तो उसे पलंग के बौक्स में अपने पिता का शव पड़ा मिला, जिस के बाद उस ने अपनी मां को खबर की.

पूछताछ में टीआई सोनी को इस तरह के संकेत भी मिले कि अभिषेक का बर्ताव मालिक के जेल जाने के बाद घर के मालिक जैसा हो गया था. वहीं घर में रहने वाली रानी, मोनिका और अंजलि से मिलने के लिए कई युवकों का आनाजाना भी बना रहता था.

मामला अजीब था. लाश पप्पन के घर में मिली इसलिए यह तो लगभग साफ था कि हत्यारे भी इसी घर में मौजूद रहे होंगे. इसलिए शक पप्पन के परिवार वालों पर ही था. लेकिन हत्या करने के बाद लाश को यूं अधखुले पलंग के बौक्स में पटक कर बिना दरवाजा बंद किए भागने की बात पुलिस के गले नहीं उतर रही थी.

सब लोग मृतक की कार में ही बैठ कर फरार हुए थे, जिन की तलाश के लिए एसपी विनायक वर्मा ने एडिशनल एसपी संजय साहू, सीएसपी विकास पांडे और सिविल लाइंस टीआई कमलेश सोनी के नेतृत्व में एक टीम गठित कर दी.

टीआई कमलेश सोनी ने जांच शुरू की तो पता चला कि पप्पन के जेल चले जाने के बाद घर में पप्पन की पत्नी रानी की छोटी बहन मोनिका भी उस के साथ आ कर रहने लगी थी. इस के अलावा रानी की एक युवा सहेली अंजलि भी ज्यादातर समय रानी के साथ उस के घर में ही रहती थी. पप्पन का एक नौकर था अभिषेक लोधी. अभिषेक मालिक के जेल जाने के बाद पूरी तरह इसी घर में रहने लगा था.

पूछताछ में टीआई सोनी को इस तरह के संकेत भी मिले द्विद्वक अभिषेक का बर्ताव मालिक के जेल जाने के बाद घर के मालिक जैसा हो गया था. वहीं घर में रहने वाली रानी, मोनिका और अंजलि से मिलने के लिए कई युवकों का आनाजाना भी बना रहता था.

जांच में सामने आया कि मृतक कमल खुद भी पहले पप्पन के साथ मिल कर नशीले पदार्थों की तसकरी का काम करता था. लेकिन पप्पन अकेला पकड़ा गया था. और उस के जेल जाने के बाद कमल अकसर रानी और उस की सहेली अंजलि से मिलने यहां आता रहता था.

इन तमाम जानकारियों से टीआई सोनी समझ गए कि पूरे कुएं में भांग घुली है. इसलिए उन्होंने आरोपियों की धरपकड़ के लिए अपनी टीम के साथ कुछ खास मुखबिर भी तैनात कर दिए, जिस से तीसरे दिन ही सभी आरोपी पकड़े गए.

पकड़े गए लोगों में पप्पन की पत्नी रानी, रानी की बहन मोनिका एवं सहेली अंजलि, नौकर अभिषेक लोधी तथा अभिषेक के दोस्त सतीश मेहरा, मोहन उर्फ बिट्टू रघुवंशी और 2 अन्य नाबालिग भी पुलिस गिरफ्त में आ गए.

इन के पास से पुलिस ने मृतक कमल की कार, हत्या में प्रयुक्त कटर और फावड़ा भी बरामद कर लिया. सभी आरोपियों को अदालत में पेश किया गया, जहां से उन्हें जेल तथा अपचारियों को बाल सुधार गृह भेज दिया गया. जिस के बाद नशे और सैक्स के काकटेल में डूबी यह कहानी इस प्रकार सामने आई.

कमल सिंधी के बारे में बताया जाता है कि वह कभी पप्पन के साथ मिल कर गांजे की तसकरी किया करता था. पप्पन की 2 पत्नियां थीं, जिन में से रानी केवट अभी केवल 25 साल की थी, इसलिए वह अपनी इसी जवान पत्नी के साथ विदिशा की हलाली कालोनी में रहता था.

पप्पन और कमल के संबंध कुछ समय पहले उस समय बिगड़े जब पप्पन को विदिशा

पुलिस ने 2 क्विंटल गांजे के साथ गिरफ्तार कर लिया. इस मामले में पप्पन तो जेल चला गया, लेकिन उसे शक था कि उस के खिलाफ कमल ने मुखबिरी की थी. इस से न केवल उस का लाखों का माल पकड़ा गया बल्कि उसे जेल भी जाना पड़ा था.

नफरत भी शारीरिक संबंध भी

पप्पन को शक था तो फिर उस की पत्नी रानी भी कमल पर शक करने लगी, जिस से वह कमल से रंजिश रखने लगी थी. क्योंकि उस को लगता था कि उस के बुरे दिनों के लिए कमल ही जिम्मेदार है.

लेकिन ये नफरत कुछ अलग किस्म की थी. बताया जाता है कि रानी कमल से नफरत तो करती थी, लेकिन साथ ही उस के साथ उस के अवैध संबंध भी बन गए थे. इसलिए कमल अकसर वक्त बिताने रानी के पास आया करता था.

रानी काफी खुले विचारों की युवती थी. उस की दोस्ती अपनी जैसी कई युवतियों से थी. इसलिए पप्पन के जेल जाने के बाद रानी की छोटी बहन मोनिका और 20 साल की एक सहेली अंजलि ने रानी के घर को ही अपना ठिकाना बना लिया था.

इस बात का सब से बड़ा फायदा पप्पन का नौकर अभिषेक उठा रहा था. पप्पन के जेल जाने के बाद अपनी शारीरिक जरूरत पूरी करने के लिए रानी अभिषेक का उपयोग करने लगी थी.

मालकिन से संबंध बनाने के बाद अभिषेक खुद भी मालिक की तरह बर्ताव करने लगा. मोनिका और अंजलि भी उसी नाव में सवार थीं, जिस में रानी सफर कर रही थी. इसलिए तीनों के बीच कोई परदा नहीं था.

रात में रानी, मोनिका और अंजलि एक ही कमरे में सोती थीं, जहां एक कोने में रानी और अभिषेक अंजलि और मोनिका के सामने खुलेआम अपनी कामलीला करते थे. जिस के चलते कभीकभी लाइव शो में इन दोनों के साथ अंजलि भी शामिल हो जाती थी.

कुल मिला कर रानी के घर नौकरी करते हुए अभिषेक की पांचों अंगुलियां घी में थीं. क्योंकि नशे के काले कारोबार में पप्पन ने खूब पैसा कमाया था सो उस के जेल जाने के बाद भी रानी के ऐश में कोई कमी नहीं आई थी.

लेकिन पैसा कब तक चलता. रानी, उस की बहन तथा सहेली और अभिषेक चारों मिल कर रोज दारूमुर्गा की दावत उड़ाते थे. इसलिए कुछ ही समय में रानी को पैसों की तंगी होने लगी.

रानी अकसर जेल में बंद अपने पति से मिलने जाया करती थी, इसलिए उस ने जब यह बात पप्पन को बताई तो उस ने कहा कि उस ने कमल के कहने पर उस के एक आदमी को बड़ी रकम दी है. इसलिए कमल को बोलो वह उस से पैसा वापस ला कर तुम्हें दे.

नाबालिग आरोपी

रानी और कमल में तो खास किस्म की दोस्ती भी थी, इसलिए रानी को लगा कि कमल उस की मदद करेगा. उस ने कमल को पप्पन की कही बात बता कर पैसा वापस मांगा. कमल ने जिसे पैसा दिलवाया था, वह अब पैसा नहीं लौटा रहा था या पैसों को ले कर कमल के मन में पाप आ गया था, जो भी हो रानी को वह पैसा नहीं मिल पा रहा था.

लेकिन ऐसा भी नहीं कि कमल रानी की मदद नहीं कर रहा था. कभीकभी वह घर आ कर कुछ पैसे दे जाता था. लेकिन रानी जानती थी कि कमल जितने पैसे दे कर जाता था, उस से कहीं ज्यादा का वह ऐश भी कर लेता था.

रानी और कमल में तो खास किस्म की दोस्ती भी थी, इसलिए रानी को लगा कि कमल उस की मदद करेगा. उस ने कमल को पप्पन की कही बात बता कर पैसा वापस मांगा. कमल ने जिसे पैसा दिलवाया था, वह अब पैसा नहीं लौटा रहा था या पैसों को ले कर कमल के मन में पाप आ गया था, जो भी हो रानी को वह पैसा नहीं मिल पा रहा था.

कमल रानी की 20 साल की सहेली अंजलि का तो दीवाना हो गया था जो शराब पी कर प्रायः रानी के घर में ही पड़ी रहती थी. इसलिए कमल की हरकतों से तंग आ चुकी रानी उस पर बारबार पैसों के लिए दबाव बनाने लगी.

लेकिन जब उस ने देखा कि कमल पैसा देना नहीं चाहता तो उस ने कमल को खत्म करने की योजना बना कर अभिषेक को इस काम के लिए और लड़कों की मदद लेने को कहा.

रानी जानती थी कि कमल शारीरिक रूप से बेहद मजबूत है. उसे काबू करना उन 3 लड़कियों और एकमात्र पुरुष अभिषेक के वश की बात नहीं थी.

अभिषेक रानी का गुलाम जैसा था जो दिनरात सेवा करने के अलावा रानी के इशारे पर उस की शारीरिक जरूरत भी पूरी करता था. इसलिए उस ने अपने दोस्त सतीश मेहरा,

WORLD # 1

Hashmi

सिकन्दर-ए-आज़म

नया विश्वास पुरूषों के लिये

परिणाम पहले दिन से

ज़बरदस्त तूफान भरी जवानी वापस लायें जोश, उर्जा व समय बढ़ायें

Sikander-e-Azam
plus
Hashmi
Sikander-e-Azam
plus

सिकन्दर-ए-आज़म हर्बल कैप्सूल बहुत ही सफल तथा सुरक्षित औषधि है जिससे सैक्स में नया आत्मविश्वास तथा नियंत्रण रखकर आप छुएंगे कामोत्तेजना की नई ऊंचाइयाँ।

यह कैप्सूल ***99%*** *व्यक्तियों पर पूरी तरह असरकारक सिद्व हुआ है।* ***18*** *से* ***70*** *साल तक के सभी व्यक्तियों के लिये कैप्सूल एक हर्बल वरदान साबित हुआ है। सिकन्दर-ए-आज़म हर्बल कैप्सूल को प्रयोग करने के बाद से ही आपकी कामेच्छा में वृद्धि तथा पूरे शरीर में ताकत वृद्धि का अहसास होने लगेगा।*

Herbal
Treatment

100% Unani Herbal Medicine
Free from any side effect
Usable in any type of climate

Hashmi Sales Corporation

Buy From any Medical Store or Call :

09212358677-09015270020

visit us at www.hashmimart.com

आरोपी मोहन उर्फ बिट्टू रघुवंशी

मोहन उर्फ बिट्टू रघुवंशी तथा 2 नाबालिग दोस्तों से बात की.

इन सभी को यह बात पता थी कि अभिषेक अपनी मालकिन और उस की सहेली के साथ ही सोता है, इसलिए चारों ने एक स्वर में कहा कि इस से उन्हें क्या फायदा होगा. इस पर अभिषेक ने चारों से वादा कर लिया कि काम पूरा होने के बाद वह अंजलि के साथ सभी को एकएक बार ऐश करवा देगा. अंजलि चारों को पसंद थी, इसलिए वे कमल की हत्या में उस का साथ देने के लिए राजी हो गए.

इस के बाद रानी ने 23 सितंबर को कमल का फाइनल हिसाब करने की योजना बना कर दोपहर में उसे फोन लगाया कि उसे कुछ पैसों की सख्त जरूरत है. उस समय कमल अपनी पत्नी सविता और बेटे के साथ कोर्ट में था, इसलिए वह कुछ देर में लौट कर आने की बात कह कर कोर्ट से अपनी कार ले कर सीधे पप्पन के घर पहुंच गया.

कमल की हत्या की तारीख तय हो चुकी थी, इसलिए अभिषेक लोधी पहले से ही अपने चारों दोस्तों को ले कर मकान के ऊपर बन रही मंजिल पर छिप कर बैठा था. जबकि नीचे अंजलि उसे अपने साथ बिस्तर पर ले जाने को तैयार बैठी थी.

दरअसल, योजना यही थी कि कमल के आने पर अंजलि उसे अपने साथ बिस्तर पर ले जाएगी और जब कमल पूरी तरह निर्वस्त्र होगा तब बाकी के लोग मिल कर उस की हत्या कर देंगे.

कमल पप्पन के घर पहुंचा तो वहां अंजलि और मोनिका के साथ रानी नीचे वाले हिस्से में मौजूद थी. रानी ने कमल से मीठीमीठी बातें कीं और चाय बनाने अंदर चली गई.

चूंकि रानी के घर में किसी तरह का परदा नहीं चलता था, सब एकदूसरे के सामने ही खुलेआम ऐश करते थे. इसलिए जब रानी अंदर चाय बनाने गई तो कमल रानी की छोटी बहन मोनिका के सामने ही अंजलि को ले कर बिस्तर में घुस गया.

ऐसे वक्त पर की हत्या

अंजलि को पहले ही पता था कि आज कमल को मदहोश करना है, इसलिए वह कमल के साथ जल्द ही गहरी सांसें लेने लगी तो कमल भी पागलों की तरह जल्द से जल्द अपना सफर पूरा करने की कोशिश करने लगा.

इसी बीच रानी चाय ले कर बाहर आ गई. उस ने कमल को अंजलि के साथ बुरी तरह हांफते देखा तो वह समझ गई कि अब कमल अंजलि के नशे से जल्द बाहर निकल आएगा. इसलिए वह चुपचाप कटर ले कर उस बिस्तर पर चढ़ी, जिस पर कमल और अंजलि आपस में गुंथे हुए थे और मौका देख कर उस ने एक झटके में कमल की गरदन कटर से रेत दी.

चूंकि उत्तेजना में डूबा कमल उस समय गहरी सांसें ले रहा था, इसलिए गला कटते ही सांस के साथ निकले खून के फव्वारे से अंजलि बुरी तरह भीग गई. इधर गले पर कटर चलते ही कमल समझ गया कि रानी का इरादा ठीक नहीं है, इसलिए गरदन में गहरा घाव होने के बाद भी वह उसी अवस्था में पीछे के दरवाजे की तरफ भागा जो गली में खुलता था.

कमल गली से हो कर भागना चाहता था, लेकिन रानी ने उसे मौका नहीं दिया और उस के दरवाजे तक पहुंचने से पहले ही उस पर टूट पड़ी.

यह देख कर उस ने अभिषेक और उस के साथियों को नीचे बुला लिया जो मकान के काम के लिए रखे फावड़े ले कर नीचे आए और सभी ने मिल कर कमल के सिर पर फावड़ों से वार करना शुरू कर दिया, कुछ ही देर में कमल का भेजा सिर से बाहर आ गया और उस की मौत हो गई.

यही रानी और उस की टीम चाहती थी. इसलिए कमल की मौत पर सब ने एकदूसरे को बधाई दी. अब लाश को ठिकाने लगाने की जरूरत थी. इस के लिए रात का वक्त तय किया गया. जिस के बाद कमल के शव को पलंग के बौक्स के अंदर पटक कर उन्होंने फर्श पर पड़ा खून साफ किया और फिर रात में लौट कर आने की योजना बना कर सभी वहां से निकल गए.

टीआई कमलेश सोनी

लेकिन इस से पहले कि वे रात में आ कर कमल की लाश ठिकाने लगाते, सविता की रिपोर्ट पर सिविल लाइन टीआई कमलेश सोनी वहां पहुंच चुके थे. सभी आरोपी फरार हो गए लेकिन एसपी विनायक वर्मा, एडिशनल एसपी संजय साहू और सीएसपी विकास पांडेय के नेतृत्व में सिविल लाइन थाना टीआई कमलेश सोनी की टीम ने 2 नाबालिग आरोपियों सहित सभी 8 आरोपियों को जल्द ही गिरफ्तार कर लिया. ●

36 करोड़ का मालिक कुत्ता

कुत्तों को सब से वफादार जानवर माना जाता है, कुत्ता होता भी वफादार है. यहां तक कि वह अपने मालिक के लिए जान भी दे सकता है. अमेरिका में एक कुत्ते ने अपने मालिक से पूरी वफादारी निभाई तो मालिक ने भी उस की वफादारी का पूरा फल दिया और अपनी सारी चलअचल संपत्ति इस कुत्ते के नाम कर दी. हालांकि ऐसा पहली बार नहीं हुआ है, जब एक पालतू जानवर के मालिक ने अपनी मौत के बाद अपने कुत्ते के लिए करोड़ों की संपत्ति छोड़ी हो. ऐसा पहले भी होता रहा है. 8 साल का लूलू भी उन्हीं भाग्यशाली कुत्तों में एक है.

इसी विषय को ले कर बौलीवुड में एक फिल्म भी बनी थी 'इंटरटेनमेंट'. 2014 में आई इस फिल्म में अक्षय कुमार, तमन्ना भाटिया, सोनू सूद, मिथुन चक्रवर्ती, प्रकाश राज, कृष्णा अभिषेक और दिलीप ताहिल जैसे बड़े कलाकारों ने काम किया था. इस फिल्म के मूल में भी एक ऐसा ही कुत्ता था.

अमेरिका के टेनेसी शहर स्थित नेशविले में रहने वाले बिल डोरिस बौर्डर कौली नस्ल के मादा कुत्ते लूलू को बहुत प्यार करते थे. 88 वर्षीय बिल डोरिस सफल बिजनैसमैन थे. उन्होंने शादी नहीं की थी. वह अपने पालतू कुत्ते लूलू के साथ रहते थे.

पिछले साल उन की मृत्यु हो गई. लेकिन मरने से पहले उन्होंने अपनी 5 मिलियन डौलर यानी करीब 36 करोड़ रुपए की संपत्ति की वसीयत अपने प्यारे लूलू के नाम कर दी.

मरने से पहले उन्होंने अपनी आखिरी इच्छा बताई कि उन के मरने के बाद इस संपत्ति को एक ट्रस्ट में हस्तांतरित कर दिया जाए ताकि लूलू की बेहतर से बेहतर देखभाल हो सके. डोरिस ने लूलू को अपनी मित्र मार्था बर्टन के संरक्षण में छोड़ दिया. साथ ही वसीयत में लिखा कि लूलू की उचित देखभाल के लिए बर्टन को ट्रस्ट में जमा रकम से मासिक खर्च दिया जाए.

मार्था बर्टन का कहना है कि वह लूलू की बेहतर से बेहतर देखभाल करना चाहेंगी. वह नहीं जानतीं कि लूलू की संपत्ति के 5 मिलियन डौलर खर्च कर भी पाएंगी कि नहीं. लेकिन जितना भी वह खर्च करेंगी, हर महीने उन्हें मिलता रहेगा. फिलहाल डोरिस की सारी चलअचल संपत्ति लूलू की है. वैसे मीडिया रिपोर्ट्स के अनुसार डोरिस की संपत्ति 5 मिलियन से कहीं ज्यादा है. क्योंकि उन का व्यवसाय रियल एस्टेट से ले कर निवेश क्षेत्र तक फैला था. जाहिर है इस सब का लाभ लूलू को ही होगा.

अहम बात यह है कि इतनी बड़ी राशि का मतलब यह नहीं है कि इसे किसी भी तरह या कितना भी खर्च किया जा सकता है.

लूलू की केयरटेकर मार्था को सिर्फ उतना ही खर्च करने की अनुमति होगी, जितनी महीने भर की उस की आवश्यकताएं होंगी. मार्था का कहना है कि मुझे डोरिस और लूलू के रिश्ते के बारे में पता नहीं है कि सब कुछ उसी हिसाब से संभव हो सके. बस इतना पता है कि डोरिस लूलू को बहुत प्यार करते थे. ●

अमरोहा, उत्तर प्रदेश

गोली पर लिखा प्यार

❑ आर.के. राजू

मृतका मेघा चौधरी
(फाइल फोटो)

उत्तर प्रदेश के अमरोहा जिले का एक बड़ा कस्बा है गजरौला. यह कस्बा मुरादाबाद से दिल्ली जाने वाले राष्ट्रीय राजमार्ग-24 पर स्थित है. गजरौला की पहचान एक औद्योगिक नगर के रूप में भी है क्योंकि यहां पर कई बड़े कारखाने और फैक्ट्रियां हैं. मेघा चौधरी इसी कस्बे की अवंतिका कालोनी में सुधारानी के मकान में रहती थी. मेघा चौधरी गजरौला थाने में कांस्टेबल थी.

31 जनवरी, 2021 की शाम करीब 6 बजे की बात है. मेघा चौधरी किचन में खाना बनाने की तैयारी कर रही थी, तभी मनोज ढल उस के पास आया. मनोज उस का प्रेमी था. वह भी उत्तर प्रदेश पुलिस में कांस्टेबल था और उस की पोस्टिंग अमरोहा जिले के सैदनगली थाने में थी.

मनोज अकसर मेघा चौधरी से मिलने आता रहता था. उस के आने के बाद उन दोनों के बीच कुछ देर तक बातचीत चलती रही. इसी दौरान उन की बातों में इतना तीखापन आ गया कि आवाजें कमरे से बाहर तक जाने लगीं. लग रहा था जैसे उन के बीच झगड़ा हो रहा हो. उसी समय मेघा के कमरे से गोली चलने की 2 आवाजें आईं.

बराबर के कमरे में मेघा की दोस्त महिला कांस्टेबल प्रिया भी किराए पर रहती थी. गोली की आवाज सुनते ही प्रिया तुरंत मेघा के कमरे में पहुंची. गोली की आवाज सुन कर मकान मालकिन भी वहां आ गई थी.

उन लोगों ने देखा तो वहां का दृश्य देख कर हक्कीबक्की रह गईं. कमरे में मेघा और मनोज लहूलुहान पड़े थे. दोनों को गोली लगी थी और कमरे में खून फैला हुआ था. मनोज के पास ही एक देसी तमंचा

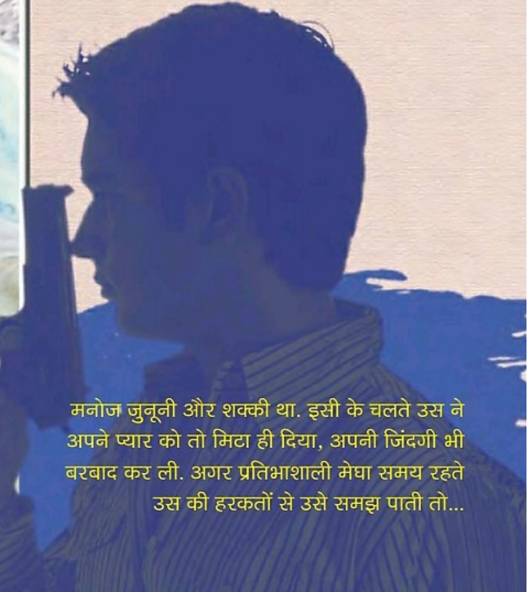

मनोज जुनूनी और शक्की था. इसी के चलते उस ने अपने प्यार को तो मिटा ही दिया, अपनी जिंदगी भी बरबाद कर ली. अगर प्रतिभाशाली मेघा समय रहते उस की हरकतों से उसे समझ पाती तो...

पड़ा हुआ था. प्रिया समझ गई कि दोनों को उसी तमंचे से गोली लगी है.

प्रिया खुद कांस्टेबल थी. उस ने तुरंत गजरौला थाने में फोन कर के इस की सूचना दे दी. यह बात सुबह करीब सवा 6 बजे की है.

थानाप्रभारी आर.पी. शर्मा रात की गश्त से लौट कर अपने क्वार्टर में आराम कर रहे थे. एसएसआई प्रमोद पाठक थाने में मौजूद थे. उन्होंने जब इस घटना के बारे में सुना तो यह जानकारी थानाप्रभारी को दी और खुद पुलिस टीम के साथ अवंतिका कालोनी में घटनास्थल पर पहुंच गए.

मेघा का कातिल प्रेमी
मनोज ढल

चूंकि मामला पुलिसकर्मियों से जुड़ा हुआ था, इसलिए थानाप्रभारी ने इस घटना से उच्च अधिकारियों को भी सूचित कर दिया. इस के बाद वह खुद घटनास्थल पर पहुंच गए.

पुलिस तुरंत दोनों घायलों को गजरौला के अस्पताल ले गई, लेकिन उन की हालत गंभीर थी इसलिए गजरौला से उन्हें मुरादाबाद के साईं अस्पताल रेफर कर दिया गया.

सूचना मिलते ही सीओ विजय कुमार, एएसपी अजय प्रताप सिंह व एसपी सुनीति भी घटनास्थल पर पहुंच गईं. उन्होंने घटनास्थल का मुआयना किया और मकान मालकिन व कांस्टेबल प्रिया से पूछताछ की.

पूछताछ के बाद पुलिस को पता चला कि मेघा चौधरी और मनोज ढल का काफी दिनों से प्रेम संबंध चल रहा था. अब तक की जांच के बाद पुलिस इस नतीजे पर पहुंची की इस घटना को कांस्टेबल मनोज ढल ने ही अंजाम दिया होगा. पुलिस ने मौके से मिले सबूत अपने कब्जे में लिए.

उधर मुरादाबाद के साईं अस्पताल में भरती कांस्टेबल मेघा और मनोज की हालत गंभीर बनी हुई थी. डाक्टरों की टीम दोनों के इलाज में तत्परता से जुटी थी. मामला पुलिसकर्मियों से जुड़ा हुआ था, इसलिए सूचना पाते ही मुरादाबाद रेंज के आईजी रमित शर्मा, एसएसपी प्रभाकर चौधरी, एसपी (सिटी) अमित कुमार आनंद भी साईं अस्पताल पहुंच गए. आईजी रमित शर्मा ने अमरोहा पुलिस को आदेश दिए कि वह इस मामले में निष्पक्ष तरीके से काररवाई करे.

आईजी साहब के आदेश पर अमरोहा जिले की एसपी सुनीति ने गजरौला के थानाप्रभारी आर.पी. शर्मा के नेतृत्व में एक पुलिस टीम बना दी. थानाप्रभारी ने सिपाही मनोज ढल के खिलाफ भारतीय दंड विधान की धारा 452, 307 व आर्म्स ऐक्ट के तहत रिपोर्ट दर्ज करा दी.

उधर इलाज के दौरान कांस्टेबल मेघा चौधरी ने 31 जनवरी की रात करीब 11 बजे दम तोड़ दिया. पुलिस मेघा चौधरी और मनोज ढल के घर वालों को पहले ही सूचना दे चुकी थी, इसलिए सुबह होते ही दोनों के घर वाले साईं अस्पताल पहुंच गए.

मेघा चौधरी के घर वालों को जब पता चला कि उस की मौत हो चुकी है तो उन का रोरो कर बुरा हाल हो गया. मेघा के भाई सागर चौधरी ने थानाप्रभारी को मनोज ढल के खिलाफ हत्या का मुकदमा दर्ज कराने की तहरीर दी.

पहली फरवरी को मुरादाबाद में मेघा का पोस्टमार्टम कराने के बाद पुलिस ने उस की लाश उस के घर वालों को सौंप दी. मेघा मूलरूप से मुजफ्फरनगर जिले के सरलाखेड़ी गांव की रहने वाली थी, इसलिए घर वाले उस का शव अपने गांव ले कर चले गए.

उधर मनोज की हालत में निरंतर सुधार हो रहा था. 3 फरवरी, 2021 को जब उसे अस्पताल से छुट्टी मिल गई तो पुलिस ने उसे गिरफ्तार कर लिया.

थाना गजरौला ले जा कर उस से इस संबंध में पूछताछ की गई. एसपी सुनीति भी उस से पूछताछ करने के लिए थाना गजरौला पहुंच गईं. पूछताछ में मनोज ढल ने स्वीकार कर लिया कि उस ने ही मेघा को गोली मार कर खुद को भी गोली मारी थी. इस के पीछे की उस ने जो कहानी बताई, वह प्रेम संबंधों की बुनियाद पर रचीबसी निकली—

मेघा चौधरी और मनोज ढल वर्ष 2018 बैच के कांस्टेबल थे. करीब डेढ़ साल पहले मेघा चौधरी और मनोज ढल की तैनाती अमरोहा जिले की तहसील हसनपुर के थाना आदमपुर में थी. आदमपुर बेहद पिछड़ा हुआ इलाका है. ग्रामीण क्षेत्र में तैनाती होने के कारण मनोज अकसर मेघा की मदद कर दिया करता था. जिस कारण दोनों में घनिष्ठता बढ़ गई थी. दोनों ही अविवाहित थे. उन के बीच नजदीकियां बढ़ीं तो मामला प्यार में बदल गया. दोनों एकदूसरे को चाहने लगे.

ड्यूटी के दौरान दोनों समय निकाल कर अकसर मिलते रहते थे. मनोज मेघा के प्यार में आकंठ डूब चुका था. उस के सिर पर प्यार का ऐसा नशा सवार हुआ कि वह अपनी ड्यूटी के प्रति भी लापरवाह रहने लगा. आदमपुर के थानाप्रभारी ने मनोज और मेघा को कई बार समझाया कि वह जिम्मेदारी से अपनी ड्यूटी करें. ड्यूटी के प्रति लापरवाही ठीक नहीं है.

लेकिन दोनों ने उन की बात पर ध्यान नहीं दिया तो उन्होंने उन दोनों को हिदायत दी. मनोज तो मेघा का जैसे दीवाना हो चुका था. इसलिए अपने प्यार के चलते उस ने थानाप्रभारी की चेतावनी को नजरअंदाज कर दिया.

तब थानाप्रभारी ने अमरोहा के तत्कालीन एसपी डा. विपिन कुमार टांडा से कांस्टेबल मेघा चौधरी और मनोज की शिकायत कर दी. उन की शिकायत पर एसपी ने मेघा चौधरी का तबादला आदमपुर से गजरौला थाने में

कर दिया और मनोज का तबादला कर के उसे थाना सैदनगली भेज दिया गया.

मेघा चौधरी ने 10 सितंबर, 2020 को गजरौला थाने पहुंच कर अपनी आमद दर्ज करा दी. गजरौला थाने में ड्यूटी जौइन करते ही मेघा ने अपने कार्यों से पूरे पुलिस स्टाफ को प्रभावित किया. वह बहुत ही महत्त्वाकांक्षी थी. उस के मन में आगे बढ़ने की लगन थी. थानाप्रभारी मेघा चौधरी के कार्य से संतुष्ट थे. उस के काम को देखते हुए उन्होंने उसे महिला डेस्क की जिम्मेदारी सौंपी.

इस के अलावा वह पुलिस की एंटी रोमियो टीम के साथ भी काम करने लगी. नारी शक्ति अभियान से जुड़ी एंटी रोमियो टीम का काम स्कूलकालेज की छात्राओं को जागरूक करना होता है.

मेघा चौधरी इस काम को बड़ी गंभीरता से कर रही थी. वह स्कूलकालेज में जा कर छात्राओं को जागरूक करती थी. वह उन्हें बताती थी कि यदि रास्ते में कोई मनचला उन के साथ छेड़छाड़ या परेशान करे तो उस से कैसे निपटा जाए.

वह उन्हें यह भी बताती थी कि कुछ युवक छात्राओं को अपनी चिकनीचुपड़ी बातों में फंसा लेते हैं, जिस से छात्राओं का कैरियर समाप्त हो जाता है. ऐसे लोगों से उन्हें कैसे बचना है. इस के बारे में भी वह छात्राओं को अच्छी तरह समझाती थी.

गजरौला थाने में पोस्टिंग होने के बाद एक तरह से मेघा और ज्यादा जागरूक और अपने कैरियर के प्रति गंभीर हो गई थी. उस ने तय कर लिया था कि वह शादी से पहले अपना कैरियर बनाएगी.

नारी शक्ति अभियान के तहत छात्राओं को जागरूक करतेकरते मेघा एक अच्छी वक्ता बन गई थी. वह बहुत प्रभावशाली भाषण देती थी. अनेक कार्यक्रमों में मुख्य अतिथि बन कर पहुंचे पुलिस अधिकारियों ने भी जब मेघा के भाषण सुने तो वे बहुत प्रभावित हुए. अधिकारी जब उस की तारीफ करते तो वह खुश होती थी.

जब वह उच्चाधिकारियों के साथ मीटिंग में बैठती थी तब उस का सीना गर्व से चौड़ा हो जाता था. वह सोचती कि वह एक मामूली सिपाही होते हुए भी इतने बड़े अधिकारियों के बीच बैठती है. यहीं से उस के मन में आगे बढ़ने की लालसा पैदा हुई. उस ने तय कर लिया कि केवल सिपाही की नौकरी के बूते वह अपनी जिंदगी नहीं काटेगी बल्कि कंपटीशन की तैयारी कर कोई अच्छी नौकरी पाने की कोशिश करेगी.

...मिक विद्यालय गजरौला
विकास क्षेत्र- गजरौला, जनपद अमरोहा
मिशन शक्ति कार्यक्रम
IFFA

नारी शक्ति अभियान के तहत छात्राओं को जागरुक करती मेघा चौधरी

मेघा ने बीटीसी का भी फार्म भर रखा था, जिस का एग्जाम पहली फरवरी, 2021 को था. इस एग्जाम की वजह से मेघा ने 31 जनवरी को अपनी 3 दिन की छुट्टी स्वीकृत करा ली थी. छुट्टी ले कर वह परीक्षा की तैयारी कर रही थी.

मेघा और उस के प्रेमी मनोज की तैनाती अलगअलग थानों में थी, इस के बावजूद मनोज मेघा से मिलने के लिए उस के पास आता रहता था. मेघा ने जब गजरौला की अवंतिका कालोनी में सुधारानी के यहां एक किराए का कमरा लिया था तो वह वहां भी मेघा से मिलने आता रहता था.

मेघा और मनोज ने अपने प्यार के बारे में अपनेअपने घर वालों को भी बता दिया था. इतना ही नहीं, उन्होंने कह दिया था कि वे शादी करना चाहते हैं. तब दोनों के घर वालों ने एकदूसरे का घरबार देखने के बाद शादी के लिए हामी भर दी थी.

मनोज हरियाणा के जिला कैथल के थाना कुंडली के गांव पाई का निवासी था जबकि मेघा चौधरी उत्तर प्रदेश के जिला मुजफ्फरनगर के थाना तितली के गांव खेड़ी की रहने वाली थी.

अलगअलग थानों में दोनों का ट्रांसफर हो जाने के बाद उन की मुलाकात पहले की तरह तो नहीं हो पाती थी, लेकिन दोनों फोन पर खूब बातें करते थे. लेकिन इस से मनोज का दिल नहीं भरता था. वह चाहता था कि जल्दी से जल्दी मेघा से उस की शादी हो जाए.

मनोज मेघा पर शादी करने का दबाव बना रहा था, लेकिन मेघा उसे यह कह कर टाल देती थी कि अभी उसे अपना कैरियर बनाना है. वह कैरियर बनाने के बाद ही शादी करेगी, क्योंकि सिपाही की नौकरी से वह संतुष्ट नहीं है.

मनोज ने उस से कहा, ''शादी के बाद भी तुम परीक्षा की तैयारी कर सकती हो.''

तब मेघा ने कहा, ''शादी के बाद घरगृहस्थी के तमाम काम होते हैं, जिस की वजह से तैयारी ढंग से नहीं हो पाएगी. इस समय मेरी तैयारी बहुत अच्छी चल रही है और इसी तरह चलती रही तो साल भर के अंदर मुझे कहीं न कहीं अच्छी नौकरी जरूर मिल जाएगी. इसलिए अभी मैं शादी के बंधन में फंसना नहीं चाहती.''

इस बात को मनोज भी अच्छी तरह जानता था कि मेघा बहुत मेहनत से परीक्षा की तैयारी में जुटी है. लेकिन उसे इस बात की भी आशंका थी कि यदि मेघा की कहीं अच्छी जगह नौकरी लग गई तो जरूरी नहीं कि वह उस के साथ ही शादी करे. क्योंकि औफिसर बन जाने के बाद वह एक मामूली सिपाही से शादी नहीं करेगी. इसी आशंका को देखते हुए मनोज उस पर लगातार शादी का दबाव बना रहा था.

शादी की बात को ले कर उन दोनों के बीच अकसर कहासुनी भी हो जाया करती थी. रोज के झगड़ों से तंग आ कर मेघा ने

मनोज से फोन पर बात करनी भी कम कर दी थी. वह अपना सारा ध्यान कंपटीशन की तैयारी में लगा रही थी.

उधर मनोज के दिमाग में फितूर बैठ चुका था कि अच्छी जगह नौकरी लग जाने के बाद वह उस से शादी से इनकार कर देगी. इसी आशंका को ले कर वह अकसर खोयाखोया सा रहने लगा था.

एक दिन उस ने मेघा से कह भी दिया कि यदि तुम मुझे नहीं मिली तो मैं तुम्हारे साथसाथ अपने आप को भी खत्म कर दूंगा. मेघा ने उसे बहुत समझाया कि ऐसी कोई बात नहीं है. बस, एग्जाम क्लियर कर लेने दो, फिर सब ठीक हो जाएगा. पर मनोज को सब्र कहां था.

मनोज जब उसे बारबार फोन करता रहा तो तंग आ कर मेघा ने उस का फोन रिसीव करना बंद कर दिया. इस पर मनोज उस से मिल ने उस के कमरे पर पहुंच जाता. उस की एक ही जिद थी कि मेघा जल्द शादी कर ले. मेघा उस से फिलहाल शादी को मना कर देती तो वह उस से लड़झगड़ कर लौट आता था.

मेघा के व्यवहार में आए बदलाव को देख कर मनोज के मन में एक दूसरा शक यह पैदा हो गया कि कहीं मेघा का किसी और से चक्कर तो नहीं चल रहा, जिस की वजह से वह उसे लगातार इग्नोर कर रही है. वह यही सोचता कि दाल में जरूर कुछ काला है. सच्चाई जाने बिना ही वह मेघा के बारे में गलत सोचने लगा.

इसी दरम्यान उस ने तय कर लिया कि वह मेघा को एक बार और समझाने की कोशिश करेगा. यदि वह शादी के लिए तैयार नहीं हुई तो फिर वही करेगा जो उस ने तय कर रखा है. इस के लिए मनोज ने एक भयंकर योजना तैयार कर ली थी.

सिपाही होने की वजह से वह कई क्रिमिनलों को जानता था. एक क्रिमिनल के सहयोग से उस ने .315 बोर का एक तमंचा और कारतूसों का इंतजाम कर लिया.

मनोज से मेघा की बेवफाई बरदाश्त नहीं हो रही थी. हर समय वह उस के बारे में ही सोचता रहता था.

घटना से 3 दिन पहले मनोज ने मेघा को फोन किया तो मेघा ने उस का फोन रिसीव नहीं किया. तब वह और ज्यादा परेशान हो गया. 30 जनवरी, 2021 की रात्रि ड्यूटी करने के बाद सुबह को उस ने 2 दिन का अपना रेस्ट मंजूर करा लिया. उस के दिमाग में मेघा के अलावा और कुछ नहीं था.

31 जनवरी को जब मेघा ने उस का फोन रिसीव नहीं किया तो वह शाम करीब 6 बजे मेघा के कमरे पर पहुंच गया.

मनोज ने मेघा का दरवाजा खटखटाया तो उस ने गुस्से में दरवाजा नहीं खोला. वह उस समय किचन में थी. इस के बाद वह कमरे में चली गई. तब मनोज दरवाजे के बाहर से ही जोरजोर से अनापशनाप बकने लगा. मेघा के कमरे के बराबर में ही उस का किचन था. किचन का दरवाजा खुला हुआ था.

आईजी (मुरादाबाद रेंज) रमित शर्मा, एसपी (अमरोहा) सुनीति और एसएसआई प्रमोद पाठक

मेघा ने कमरे का दरवाजा नहीं खोला तो मनोज किचन में पहुंच गया. किचन से एक खिड़की मेघा के कमरे में खुलती थी. उसी खिड़की के रास्ते वह मेघा के कमरे में दाखिल हो गया.

उसे देख कर मेघा भड़क गई. उस ने कहा, ''तुम्हें इस तरह से खिड़की के रास्ते से नहीं आना चाहिए था.'' मनोज तो वैसे ही गुस्से से भरा हुआ था. उस ने कहा, ''मेघा, मैं आज तुम से साफसाफ यह पूछना चाहता हूं कि तुम अभी शादी करोगी या नहीं क्योंकि मैं अब ज्यादा दिनों तक शादी के लिए नहीं रुक सकता.''

इस पर मेघा ने कहा, ''कुछ दिन और रुक जाओ. जब मेरा कैरियर बन जाएगा तब मैं शादी करूंगी.''

मगर मनोज को तसल्ली कहां थी. वह तेज आवाज में झगड़ने लगा. मेघा उस की योजना से अनजान थी. वह भी गुस्से में उस से झगड़ने लगी. दोनों के चीखनेचिल्लाने की आवाजें कमरे से बाहर जाने लगीं.

मेघा के पास में रहने वाली प्रिया जानती थी कि मनोज मेघा का प्रेमी है. उस ने उन के झगड़े में दखल देना उचित नहीं समझा. सोचा थोड़ी देर में दोनों सामान्य हो जाएंगे. लेकिन उसे क्या पता था कि वहां कुछ देर में खून बहने वाला है.

झगड़े के दौरान मनोज को गुस्सा आया तो उस ने अपनी अंटी में खोंसा हुआ तमंचा निकाल कर मेघा के ऊपर फायर कर दिया. मेघा के सीने में गोली लगी. गोली लगते ही वह फर्श पर गिर पड़ी. तभी खुद को भी मिटाने के लिए मनोज ने दूसरी गोली अपने पेट पर मार ली.

गोलियों की आवाज सुनते ही मकान मालकिन और बराबर में रह रही सिपाही प्रिया मेघा के कमरे पर पहुंच गईं. फिर इस की सूचना पुलिस को दे दी गई.

मनोज के गिरफ्तार होने के बाद एसपी सुनीति भी थाने पहुंच गई थीं. उन्होंने भी करीब डेढ़ घंटे तक मनोज से पूछताछ की. इस के बाद थानाप्रभारी ने हत्या के आरोप में गिरफ्तार मनोज को 3 फरवरी, 2021 को कोर्ट में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया.

उसी दिन एसपी सुनीति ने कांस्टेबल मनोज ढल को बरखास्त कर दिया. अब मामले की जांच थानाप्रभारी आर.पी. शर्मा कर रहे हैं.●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

सुधार के लिए दुनिया की बेहतरीन जेलें

जेलें दंड देने के लिए बनाई जाती हैं, लेकिन असल मकसद कैदी को सुधारना होता है. सुधार सख्ती से भी हो सकता है और सुविधाओं से भी. इसीलिए दुनिया में कुछ जेलें अलग तरह का सुधारवादी तरीका अपनाने के लिए 5 स्टार होटलों की सुविधाओं जैसी बनाई गई हैं. जानें कुछ ऐसी ही जेलों के बारे में...

❑ पुष्कर पुष्प

हमारे यहां जेलों और सजा काटने वाले कैदियों को अच्छी नजरों से नहीं देखा जाता, लोग डरते हैं जेल जाने से. यह स्वाभाविक भी है क्योंकि न तो जेलों में खाना अच्छा मिलता है और न रहने को जगह. ऊपर से गुंडागर्दी, मारपीट. एक तरह से यह ठीक भी है, क्योंकि जेलें किए गए अपराध का दंड देने के लिए होती हैं. वैसे जेलों को सुधार गृह कहा जाता है, लेकिन ज्यादातर मामलों में ये बिगाड़ गृह ज्यादा साबित होती हैं. इस के अलावा हमारे यहां जेलों का एक पहलू और भी है. दरअसल, पैसे वालों, पावरफुल लोगों या माफियाओं के लिए ये जेल नहीं आरामगाह होती हैं, जहां पैसे और जेल प्रशासन की घूसखोरी की वजह से उन्हें हर चीज उपलब्ध होती है. लड़कियां औरतें तक.

वैसे तो ज्यादातर देशों में जेलों का यही हाल है, लेकिन दुनिया के कुछ देश ऐसे भी हैं जहां की जेलें 5 स्टार होटलों से कम नहीं हैं. इन जेलों में कैदियों को जो सुविधाएं मिलती हैं, उन्हें जान कर आप दंग रह जाएंगे. फिर भी जेल तो जेल ही होती है.

आइए सब से पहले बात करते हैं नार्वे की बस्तोय जेल की. इस जेल को दुनिया की सबसे बेहतरीन जेल माना जाता है. इस में करीब 100 कैदी रहते हैं. यहां रहने वाले कैदियों को हौर्स राइडिंग, फिशिंग, टेनिस, सन बाथिंग और प्रिजन कौंप्लैक्स जैसी सुविधाएं मिलती हैं. केवल इतना ही नहीं, कैदियों को खेती करने और रहने के लिए

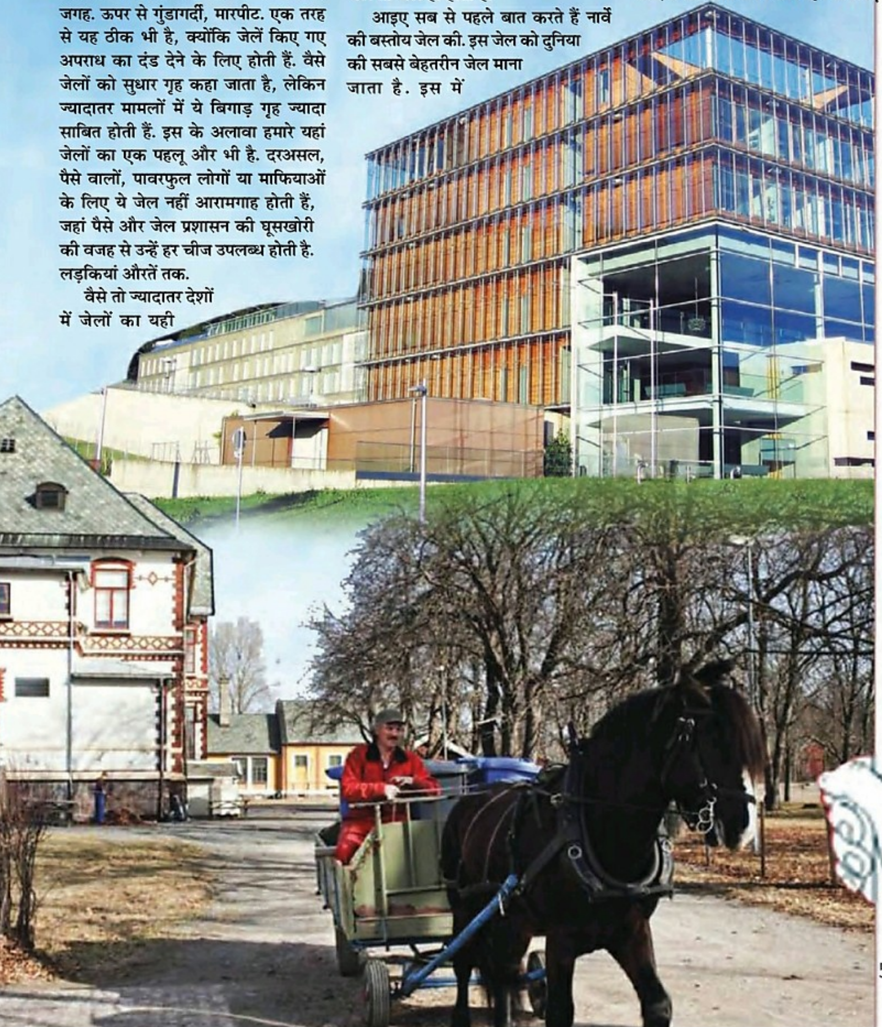

Honor Bound To Defend Freedom
Camp America
Guantanamo Bay, Cuba

कौटेज जैसी सुविधाएं भी दी जाती हैं. इस जेल में रहने वाले कैदियों को लगता ही नहीं कि वे जेल में हैं. ओसलोफजौर्ड में बैस्टौय द्वीप पर स्थित इस जेल के कैदी खुली और मनभावन जगह पर धूप ही नहीं सेंक सकते बल्कि गरमी में देवदार के जंगल की छाया में दूरदूर तक सैर भी कर सकते हैं. द्वीप की नौका का भी आनंद ले सकते हैं.

यहां आने के लिए कैदियों को आवेदन करना पड़ता है, साथ ही परंपरागत जेलों में सेवा करते हुए बदलने की इच्छा का भी प्रदर्शन करना होता है.

बस्तोय जेल काफी बड़ी है, लेकिन यहां सुरक्षा बहुत कम है. हालांकि यहां हिंसक अपराध करने वाले कैदियों को रखा जाता है. कुछ के तो बहुत गंभीर अपराध होते हैं, लेकिन किसी का यहां से जाने का मन नहीं होता क्योंकि ये कैदी नहीं, एक समुदाय के रूप में रहते हैं. हर चीज साझा करते हैं, बैडरूम तक. खुद लजीज खाना बना सकते हैं. अकेले भी और सामूहिक रूप से भी. एकदूसरे के कपड़े पहन सकते हैं. जेल की दुकान, पुस्तकालय या चर्च में जा सकते हैं.

सप्ताह में यहां म्यूजिकल प्रोग्राम और व्याख्यान होते हैं. पाठ्यक्रम चलते हैं जिन में इच्छानुसार बदलाव किया जा सकता है. यानी हर तरह की आजादी. यहां ऐसा लगता है जैसे छुट्टी में पिकनिक मनाने आए हों.

यहां दौरा करने आए नार्वेजियन अधिकारियों के अनुसार, कैदियों के लिए यह नर्म दृष्टिकोण ज्यादा प्रभावी है. जेल के कैदियों और यहां के कर्मियों के बीच सम्मानजनक संबंध हैं. अधिकांश जेल अधिकारी रात में द्वीप छोड़ कर चले जाते हैं. कैदियों से अपेक्षा की जाती है कि वहां की जिम्मेदारी वे खुद उठाएं.

नार्वे इस जेल को पारिस्थितिक जेल कहता है. यहां के कैदी आराम के अलावा रोजाना काम करते हैं. भेड़ों और घोड़ों को चराते हैं, खेतों में काम करते हैं. पेड़ों से लकड़ियां काटते हैं. तरहतरह के प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लेते हैं.

नार्वे मिनिस्ट्री औफ जस्टिस का कहना है, 'जेल के अंदर के जीवन को बाहर की जिंदगी की जरूरत होती है. कैदियों को भी अपने कार्यों की जिम्मेदारी लेने की आवश्यकता है. अतीत, वर्तमान और भविष्य की आवश्यकता होती है.

हमारा मानना है कि यह किसी व्यक्ति के लिए अपराध से दूर रहने के लिए अधिक प्रभावी है, ताकि सिस्टम उसे डराने की कोशिश न कर सके. वह इन्हें जुड़ना सिखाता है कि उन के पड़ोसी के रूप में कौन और कैसा व्यक्ति होगा और उस के साथ किस तरह व्यवहारिक बना जाएगा.

नार्वे में उम्रकैद जैसी कोई सजा नहीं है. सब से लंबी सजा 21 साल है. जबकि नरसंहार जैसे अपराधों के लिए 30 साल की अधिकतम सजा का प्रावधान है. क्योंकि इसे मानवता के प्रति युद्ध माना जाता है.

औसत सजा 8 महीने है. बिना शर्त जेल की 60 प्रतिशत से अधिक सजा महज 3 महीने होती है और 90 प्रतिशत एक साल से कम. बड़े मामलों में सजा पूरी होने से पहले 18 महीने नौकरी करनी होती है, जिस में कैदी स्वतंत्र भी होता है और नहीं भी.

गुआंतानमों बे जेल

इस के बाद बात करते हैं गुआंतानमो बे जेल की, जो क्यूबा में है. जेल का यह नाम इसलिए है क्योंकि ये गुआंतानमो घाटी के तट पर स्थित है. इस जेल में कुल 40 कैदी हैं और हर कैदी पर सालाना 93 करोड़ रुपए खर्च होते हैं. गुआंतानमो बे जेल में करीब 1800 सैनिक हैं यानी एक कैदी पर 45 सैनिक. सोचने वाली बात यह है कि कैदियों को इतनी

सुरक्षा क्यों दी जाती है. दरअसल, यहां कई ऐसे अपराधी कैद हैं जो बेहद खतरनाक हैं. इन में एक 9/11 को अमेरिका के ट्विन टावर पर हुए हमले का मास्टरमाइंड खालिद शेख मोहम्मद भी है. यह हमला अल कायदा ने किया था, जिस में 2971 लोगों की जानें गई थीं और 25 हजार लोग घायल हुए थे.

गुआंतानमो बे जेल में 3 इमारतें, 2 खुफिया विभाग के मुख्यालय और 3 अस्पताल हैं. वकीलों के लिए अलगअलग कंपाउंड बनाए गए हैं, जहां कैदी उन से बात कर सकते हैं. इस जेल में कैदियों और जेल के स्टाफ को होटल जैसी सुविधाएं मिलती हैं. कैदियों के लिए जेल में चर्च, जिम, प्ले स्टेशन और सिनेमाहाल हैं.

इस जेल में पहले अमेरिका का नेवी बेस था, लेकिन बाद में इसे डिटेंशन सेंटर (हिरासत केंद्र) बना दिया गया. अमेरिका के भूतपूर्व राष्ट्रपति जौर्ज डब्ल्यू बुश ने यहां एक कंपाउंड बनवाया था, जहां आतंकियों को रखा जाता था. इसे कैंप एक्सरे नाम दिया गया था.

सोलन टूना जेल, स्वीडन

स्वीडन की सोलन टूना जेल किसी फाइवस्टार होटल से कम नहीं है. इस जेल से छूट कर आए अपराधियों का कहना है कि इस जेल में उन्हें पूरी आजादी दी जाती है. अपना खाना खुद बनाना होता है, वह भी मनमर्जी से. शानदार सोफे पर बैठ कर किताबें पढ़ सकते हैं. कैदियों के सेल्स में किचन, टीवी, फ्रिज और बाथरूम की सुविधाएं भी दी गई हैं, जो किसी उत्कृष्ट एयरलाइंस की फ्लाइट जैसी हैं.

जस्टिस फौर लियोबेन

आस्ट्रिया की इस खूबसूरत जेल में कैदियों को उचित सम्मान के साथ रखा जाता है. इस फाइवस्टार जेल में करीब 250 कैदी हैं. यहां सभी कैदियों के लिए इनडोर गेम से ले कर जिम तक की सभी सुविधाएं हैं. यहां रहना शाही जिंदगी जीने जैसा है. यहां कैदियों को जेल के कपड़े नहीं, बल्कि अपने खुद के कपड़े पहनने की आजादी है. कैदियों के लिए अलगअलग प्राइवेट बाथरूम और किचन है. इस जेल को दुनिया की खूबसूरत जेलों में गिना जाता है.

अरेंजबेज जेल

ज्यादातर जेलों में बच्चों के पैदा होने के तुरंत बाद उन के परिवार के हवाले कर दिया जाता है और अगर कोई परिवार बच्चे की जिम्मेदारी नहीं लेता तो उसे किसी एनजीओ को सौंप दिया जाता है. लेकिन स्पेन की यह जेल दुनिया की एकलौती जेल है, जहां कैदियों के परिवारों के लिए कमरे मौजूद हैं.

यहां 3 साल का होने तक उन के बच्चे उन के साथ रह सकते हैं. बच्चों के लिए खूबसूरत कमरे ही नहीं, हर तरह के खिलौने भी मौजूद हैं, और कमरे की दीवारों पर उन की रुचि की क्रिब्स और डिज्नी के पात्रों की पेंटिंग बनी हैं.

जेवीए फुलस्वटल जेल

जर्मनी के हैंबर्ग शहर स्थित यह जेल भी दुनिया की खूबसूरत जेलों में गिनी जाती है. किले की तरह नजर आने वाली इस जेल में कैदियों को काफी बड़े और आरामदायक कमरे दिए जाते हैं, जिन में लिविंग रूम, डेस्क, टीवी और शौवर लगे हुए हैं. प्राइवेट बाथरूम भी हैं. कपड़े धोने की सुविधा के लिए सामूहिक वाशिंग मशीनें हैं. जेल में कौन्फ्रेंस रूम और मनोरंजन कक्ष भी हैं.

पोडोंक बंबू जेल, इंडोनेशिया

महिलाओं के लिए बनाई गई यह जेल पुनर्वास के उद्देश्य से बनाई गई है, जो पूरी तरह एयरकंडीशंड है. खूबसूरत बगीचों और मूर्तियों से भरे इस परिसर में ब्यूटीशियन और सौंदर्य उपचार के कोर्स कराए जाते हैं. मनोरंजन के साधनों के साथसाथ यहां जीवन को सुखमय बनाने के सभी साधन हैं. ●

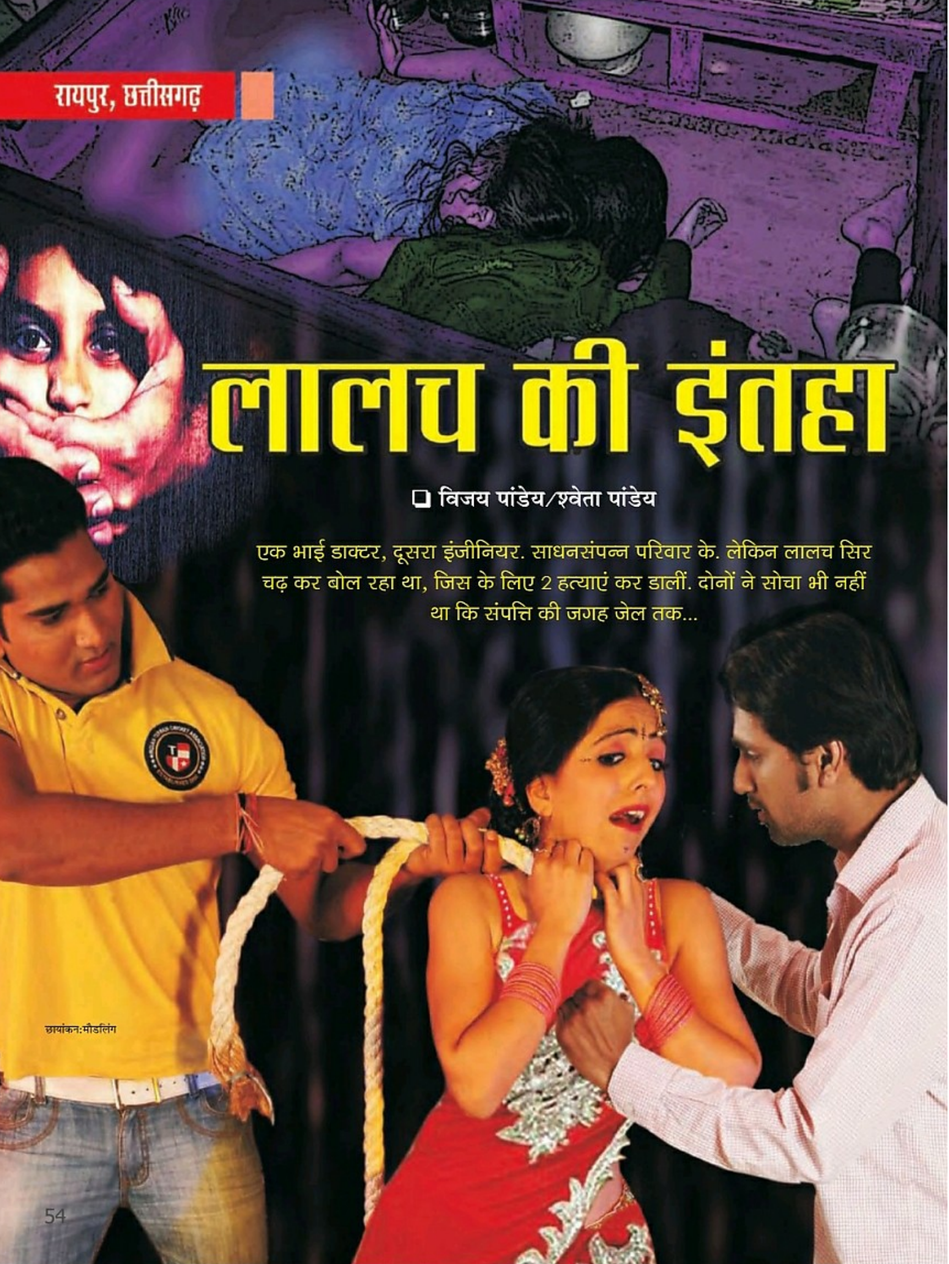

लालच की इंतहा

❑ विजय पांडेय/श्वेता पांडेय

एक भाई डाक्टर, दूसरा इंजीनियर. साधनसंपन्न परिवार के. लेकिन लालच सिर चढ़ कर बोल रहा था, जिस के लिए 2 हत्याएं कर डालीं. दोनों ने सोचा भी नहीं था कि संपत्ति की जगह जेल तक...

छायांकन:मौडलिंग

बेटी अनन्या के साथ नेहा
(फाइल फोटो)

करीब 10 साल पहले नेहा की शादी छत्तीसगढ़ के पूर्व वन मंत्री डी.पी. घृतलहरे के बेटे तरुण के साथ हुई थी. 30 जनवरी, 2021 को रात करीब साढ़े 9 बजे आकाश ने बहन नेहा को फोन लगाया. नेहा के फोन की घंटी तो बज रही थी, लेकिन वह काल रिसीव नहीं कर रही थी.

आकाश ने कई बार ट्राई किया, लेकिन उस के फोन की घंटी तो बजती रही, लेकिन नेहा ने फोन रिसीव नहीं किया. आकाश परेशान हो गया कि पता नहीं नेहा इस समय कहां है जो फोन नहीं उठा रही. तब आकाश ने अपने बहनोई तरुण को फोन मिलाया.

तरुण ने आकाश को बताया कि वह तो अपने गांव आया है और उस का छोटा भाई इंद्रजीत कहीं बाहर गया हुआ है. घर पर इस समय नेहा और अनन्या ही हैं. 9 वर्षीय अनन्या उर्फ पिहू नेहा की बेटी थी.

आकाश ने सोचा कि जब नेहा घर पर है तो वह फोन क्यों नहीं उठा रही. आकाश ने कोई एकदो बार नहीं बल्कि कई बार फोन किया था पर उस के फोन की घंटी तो बज रही थी लेकिन वह फोन उठा नहीं रही थी. यह बात उस ने अपने घर वालों को बताई तो घर के सभी लोग परेशान हो गए.

आकाश का घर रायपुर जिले के खरोड़ा गांव में था, जबकि उस की बहन की ससुराल रायपुर के ही खम्हारडी कस्बे में थी. खम्हारडी उस के घर से कोई 40 किलोमीटर दूर था.

आकाश ने तय किया कि वह अभी नेहा की ससुराल जाएगा. वह अपनी छोटी बहन को कार में बिठा कर खम्हारडी के लिए रवाना हो गया. करीब एक घंटे में वह नेहा की ससुराल पहुंच गया.

नेहा ऊंचा राजनीतिक रसूख वाले परिवार में ब्याही थी, उन का वहां आलीशान बंगला था. आकाश जब बंगले पर पहुंचा तो मेनगेट का ताला बंद था. उस ने मन ही मन सोचा कि बंगले के गेट का ताला क्यों बंद है, उस ने बंगले के बाहर से नेहा के फोन पर फिर से काल की. अब भी उस के फोन की घंटी बज रही थी लेकिन उस ने काल रिसीव नहीं की.

आकाश को उस के बहनोई तरुण ने बता दिया था कि बंगले पर केवल नेहा और अनन्या ही हैं. लेकिन गेट पर लगे ताले से लग रहा था कि बंगले में कोई नहीं है. आकाश ने आसपास रहने वाले लोगों से मालूम किया कि नेहा कहीं गई हुई है क्या? लेकिन पड़ोसियों ने अनभिज्ञता जाहिर की.

आकाश ने उन्हें बताया कि वह साढ़े 9 बजे से नेहा को फोन लगा रहा है, फोन की घंटी तो जा रही है पर वह फोन रिसीव नहीं कर रही. पता नहीं इस समय वह कहां है.

पड़ोसियों ने भी बताया कि नेहा इस तरह बंगले से अकेली कभी नहीं जाती. जब वह फोन नहीं उठा रही तो जरूर कुछ न कुछ गड़बड़ है.

कुछ ही देर में बंगले के बाहर तमाम लोग जमा हो गए. आकाश को समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे. तभी कुछ लोगों ने सलाह दी कि क्यों न गेट का ताला तोड़ कर बंगले के अंदर देखा जाए. तब आकाश ने लोगों के सहयोग से बंगले के मेनगेट का ताला तोड़ दिया.

लोगों के साथ जब वह बंगले में पहुंचा तो उसे नेहा के बैडरूम का भी ताला बंद मिला. यह देख कर वह आश्चर्यचकित रह गया कि बंगले के बाकी सब कमरे खुले हुए हैं तो नेहा के कमरे का ही ताला क्यों बंद है. आकाश ने नेहा के कमरे का ताला भी तोड़ दिया.

ताला तोड़ कर जैसे ही आकाश और अन्य लोग कमरे में घुसे तो वहां पर 2 लोग बैठे हुए मिले. उन में से एक नेहा का ननदोई डा. आनंद राय था. उस के साथ एक और व्यक्ति था. आकाश और अन्य लोग उस व्यक्ति को नहीं जानते थे.

यह बात किसी की समझ में नहीं आई कि 2 तालों में बंद हो कर लोग नेहा के बैडरूम में क्यों बैठे हैं. आकाश और अन्य लोगों को देख कर आनंद राय और उस के साथी के चेहरे का रंग उड़ गया.

आकाश ने जब उन से कमरे में बंद रहने की वजह पूछी तो वे कुछ जवाब नहीं दे पाए, बल्कि वहां से भागने की कोशिश करने लगे. शक होने पर लोगों ने दोनों को पकड़ लिया. उन्हें शक होने लगा कि जरूर कुछ न कुछ गड़बड़ है. उन्होंने कमरे की तलाशी लेनी शुरू कर दी. जब उन्होंने बैड का बौक्स खोला तो बौक्स में नेहा और उस की बेटी अनन्या की लाशें औंधे मुंह पड़ी मिलीं.

दोनों की लाशें देखने के बाद लोग समझ गए कि जरूर दोनों के मर्डर के पीछे इन का ही हाथ है. लिहाजा लोगों ने उन्हें पकड़ लिया. इसी दौरान किसी ने खम्हारडी थाने में फोन कर के बता दिया कि किसी ने बंगले में पूर्व मंत्री डी.पी. घृतलहरे की बहू और नातिन की हत्या कर दी है.

स्व. डी.पी. घृतलहरे का वह बंगला जिस के लिए उन की बहू का उन के दामादों ने ही कत्ल कर दिया

मामला एक हाईप्रोफाइल परिवार से जुड़ा हुआ था, इसलिए सूचना पाते ही थानाप्रभारी ममता शर्मा हैडकांस्टेबल वेदव्यास दीवान, बच्चन सिंह ठाकुर, टीकम सिंह आदि को साथ ले कर घटनास्थल की तरफ रवाना हो गईं. थाने से घटनास्थल करीब एक किलोमीटर दूर था इसलिए वह कुछ देर में ही वहां पहुंच गईं.

इस दोहरे हत्याकांड की जानकारी उन्होंने एसपी अजय यादव को भी दे दी. थानाप्रभारी जब मौके पर पहुंचीं तो देखा कि कुछ लोग 2 लोगों को पकड़े हुए थे और नेहा व उस की बेटी की लाश बैड के बौक्स में पड़ी थीं. लोगों ने पुलिस को बताया कि जब उन्होंने इस कमरे का ताला तोड़ा था तो ये दोनों इन लाशों के पास ही बैठे मिले थे. ये ही इन के कातिल हैं.

पति भी संदेह के दायरे में

पुलिस को पूछताछ में पता चला कि उन दोनों में से एक मृतका का सगा ननदोई डा. आनंद राय है. इस के बाद पुलिस के सामने ही लोग उन दोनों की पिटाई करने लगे. लोगों में आक्रोश भरा हुआ था. गुस्से में लोग कहीं दोनों को मार न डालें, इसलिए थानाप्रभारी ने बड़ी मुश्किल से उन्हें भीड़ के चंगुल से छुड़ा कर अपने कब्जे में लिया और उन्हें तुरंत थाने भिजवा दिया.

कुछ ही देर में फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट, पुलिस फोटोग्राफर और एसपी अजय यादव भी वहां पहुंच गए. आक्रोशित लोगों को एसपी साहब ने समझाया. मौकामुआयना करने से यह स्पष्ट पता चल रहा था कि मृत्यु से पहले नेहा ने अपने बचाव में जीजान लगा कर संघर्ष किया था. क्योंकि उस के चेहरे व शरीर पर खरोंचों के निशान थे. फिंगरप्रिंट एक्सपर्ट ने मौके से सुबूत जुटाए. पुलिस अधिकारियों ने भी मौके का बारीकी से मुआयना किया.

पुलिस अधिकारियों ने वहां मौजूद आकाश से बात की तो उस ने बताया कि जब वह यहां आया तो बंगले के बाहर वाले गेट

घटना की जानकारी मिलने के बाद घटनास्थल पर पहुंची पुलिस

पुलिस हिरासत में नेहा की हत्या का आरोपी ननदोई आनंद राय

पर ताला लगा हुआ था. जब वह ताला तोड़ कर अंदर आया तो नेहा के बैडरूम का ताला भी बाहर से बंद था. कमरे का ताला तोड़ा तो कमरे में नेहा का ननदोई डा. आनंद राय और उस के साथ एक अन्य व्यक्ति बैठा हुआ मिला. उसे शक है कि बहन और भांजी की हत्या में इन दोनों का हाथ है.

उस समय मृतका नेहा का पति तरुण घर पर नहीं था, इसलिए पुलिस को इस बात का शक था कि कहीं पत्नी की हत्या में उस का हाथ तो नहीं है. आकाश इस दोहरे हत्याकांड की जानकारी अपने बहनोई तरुण को फोन द्वारा दे चुका था. वह थोड़ी देर में घर आ गया.

जब तरुण को पता चला कि नेहा की लाश के पास आनंद राय और एक अन्य व्यक्ति बैठा मिला था, तो उसे भी विश्वास हो गया कि उस की पत्नी और बेटी की हत्या जरूर आनंद राय ने ही की होगी. यह शक उस ने पुलिस के सामने जाहिर भी कर दिया.

तरुण भले ही पत्नी की हत्या का आरोप अपने बहनोई आनंद राय पर लगा रहा था, लेकिन पुलिस की नजरों में तरुण भी संदिग्ध था. इसलिए एसपी अजय यादव ने थानाप्रभारी को आदेश दिया कि वह है तरुण पर नजर रखें, वह फरार न होने पाए.

पूर्व वन मंत्री की बहू और नातिन की हत्या की खबर थोड़ी ही देर में रायपुर शहर में फैल गई. लोग तरुण के बंगले के बाहर पहुंच गए. ऐहतियात के तौर पर पुलिस ने वहां भारी सुरक्षा व्यवस्था का इंतजाम कर दिया.

दोनों लाशों के गले पर पड़े निशानों को देख कर लग रहा था कि दोनों की हत्या गला घोंट कर की गई है. हत्या किस ने और क्यों की, यह बात तो जांच के बाद ही पता चल सकती थी.

मौके की जरूरी काररवाई पूरी कर के पुलिस ने दोनों लाशें पोस्टमार्टम के लिए अस्पताल भिजवा दीं. इस के बाद पुलिस पूछताछ के लिए उन दोनों व्यक्तियों सहित मृतका के पति तरुण को भी अपने साथ थाने ले गई.

पुलिस ने लोगों के चंगुल से छुड़ा कर जिन 2 लोगों को कस्टडी में लिया था, उन में से एक मृतका का ननदोई डा. आनंद राय था जबकि दूसरा युवक आनंद राय का भतीजा दीपक सायतोडे था.

तलाश अजय राय की

इन दोनों से पुलिस ने नेहा और उस की बेटी की हत्या के बारे में पूछताछ की तो दोनों खुद को बेकसूर बताते रहे, लेकिन पुलिस की सख्ती के आगे उन्होंने स्वीकार कर लिया कि उन दोनों की हत्या उन्होंने नहीं बल्कि अजय राय ने की है.

अजय राय तरुण का दूसरा बहनोई था, आनंद राय का सगा भाई. पेशे से वह इंजीनियर था. पुलिस ने जब उसे तलाशा तो अजय घर पर नहीं मिला.

एसपी अजय यादव के निर्देशन में पुलिस टीमें अपनेअपने स्तर से उसे तलाशने में जुट गईं. डा. आनंद राय और दीपक सायतोडे पूछताछ में पुलिस को बारबार यही बयान देते रहे कि वह तो अजय राय के कहने पर साथ आए थे. इन दोनों की हत्या तो इंजीनियर अजय राय ने की है.

पुलिस को लग रहा था कि वे दोनों अभी भी झूठ बोल रहे हैं. उन से विस्तार से पूछताछ के लिए पुलिस ने दोनों को पहली फरवरी, 2021 को कोर्ट में पेश कर के 5 दिन के लिए पुलिस रिमांड पर ले लिया.

उधर पुलिस की कई टीमें फरार इंजीनियर अजय राय की तलाश में जुटी हुई थीं. सर्विलांस टीम भी अपने स्तर से जांच कर रही थी. इसी बीच जांच टीम को पता चला कि अजय ने उत्तर प्रदेश के शहर प्रयागराज से पहले बाईपास के नजदीक अपना मोबाइल फोन औन किया था. इसी क्लू के आधार पर क्राइम ब्रांच की एक टीम रायपुर से प्रयागराज पहुंच गई.

जिस जगह पर अजय के फोन की लोकेशन मिली थी, वहां हाइवे पर एक पंक्चर वाले की दुकान थी. पुलिस ने उसे अजय का फोटो दिखा कर उस से पूछताछ की.

फोटो देखते ही पंक्चर वाला पहचान गया. क्योंकि 1-2 दिन पहले उसी शक्ल के एक व्यक्ति ने उस के फोन से किसी को फोन किया था. इस से रायपुर पुलिस को जांच में सफलता के कुछ आसार दिखाई देने लगे. पंक्चर वाले ने अपने मोबाइल में देख कर पुलिस को वह नंबर बता दिया, जिस पर उस ने बात की थी. पुलिस ने जांच की तो वह नंबर उत्तर प्रदेश के जिला अयोध्या स्थित सुलतानगंज के रहने वाले शिवप्रकाश का निकला.

पुलिस टीम वहां से अयोध्या की तरफ रवाना हो गई. स्थानीय पुलिस के सहयोग से रायपुर पुलिस अयोध्या के सुलतानगंज में रहने वाले शिवप्रकाश के घर पहुंच गई. वहां से पुलिस ने अजय राय को गिरफ्तार कर लिया.

पता चला कि शिवप्रकाश अजय राय का गहरा दोस्त था. शिवप्रकाश आपराधिक प्रवृत्ति

का था. कुछ दिनों पहले ही वह गांजे की तसकरी में जेल की सजा काट कर घर आया था. शिवप्रकाश घर पर नहीं मिला. यह बात 4 फरवरी, 2021 की है.

इंजीनियर अजय राय को गिरफ्तार कर पुलिस रायपुर लौट आई. वहां उस ने अपने भाई डा. आनंद राय और भतीजे दीपक को पुलिस हिरासत में देखा तो समझ गया कि दोनों ने पुलिस को सब कुछ बता दिया होगा. पुलिस ने जब अजय राय से नेहा और उस की बेटी अनन्या की हत्या के बारे में पूछताछ की तो उस ने हत्या का आरोप अपने भाई आनंद व भतीजे दीपक पर लगाया.

कुछ देर तक वे एकदूसरे पर हत्या का आरोप मढ़ते रहे. लेकिन जब उन के साथ थोड़ी सख्ती बरती गई तो सभी सच बोलने लगे. पता चला कि इन तीनों ने ही सुनियोजित योजना के तहत नेहा और उस की बेटी की हत्याएं की थीं. उन तीनों से पूछताछ के बाद इस दोहरे हत्याकांड की जो कहानी सामने आई, वह चौंकाने वाली थी—

छत्तीसगढ़ के रायपुर जिले का कस्बा खम्हारडी. इसी कस्बे के सतनाम चौक के पास एक बड़े राजनीतिज्ञ डी.पी. घृतलहरे का बंगला है. डी.पी. घृतलहरे छत्तीसगढ़ सरकार में वन मंत्री थे. वह जानीमानी शख्सियत थे. उन की 2 बीवियां थीं. पहली पत्नी वसंता से एक बेटी थी शशिप्रभा और दूसरी पत्नी प्रभादेवी से 4 बच्चे थे. जिन में 2 बेटियां थीं और 2 बेटे तरुण व इंद्रजीत.

दोनों बेटियों की वह शादी कर चुके थे. एक बेटी की शादी उन्होंने शहर के ही जानेमाने डाक्टर आनंद राय से की थी और दूसरी बेटी की शादी उन्होंने आनंद राय के भाई अजय राय के साथ की थी.

अजय राय इंजीनियर था. दोनों बेटियां संपन्न परिवार में ब्याही थीं, इसलिए दोनों ही खुश थीं. बेटा तरुण शादी के योग्य हुआ तो उन्होंने उस की शादी जिले के ही खरोरागांव की रहने वाली नेहा से कर दी.

नेहा भी एक संपन्न परिवार से थी. उस के पिता जमींदार थे. नेहा उच्चशिक्षित और समझदार थी. ससुराल आते ही उस ने घर की सारी जिम्मेदारियां संभाल ली थीं.

डी.पी. घृतलहरे के दोनों दामाद उच्चशिक्षित और संपन्न जरूर थे, लेकिन वे लालची प्रवृत्ति के थे. किसी न किसी बहाने वे ससुराल से पैसे या अन्य महंगा सामान ऐंठते रहते थे. मंत्रीजी के पास अकूत संपत्ति थी इसलिए दोनों दामादों की नजर उन की संपत्ति पर लगी रहती थी.

इसी दौरान 19 अप्रैल, 2020 को डी.पी. घृतलहरे का देहांत हो गया. उन की मौत के बाद घर के सभी लोग तो दुखी थे ही, लेकिन सब से ज्यादा परेशान तरुण की बुआ कुन्नीबाई थीं. इस की वजह यह थी कि तरुण के दोनों बहनोइयों की गिद्धदृष्टि उन की संपत्ति पर थी.

नेहा और तरुण (फाइल फोटो)

कुन्नीबाई को यह आशंका लगी रहती थी कि दोनों दामाद भाई की जुटाई संपत्ति को नोचखसोट न लें. कुन्नीबाई के पास खेती की करीब 17 एकड़ जमीन थी. उन्होंने इस संपत्ति का मुख्तियार तरुण को बना दिया था.

तरुण की पत्नी नेहा अपनी दोनों ननदों और ननदोइयों की बहुत सेवा करती थी. जितना उस से बन पड़ता, वह उन्हें गिफ्ट आदि दिया करती थी. लेकिन वे लोग उस के द्वारा दिए गए सामान से कभी खुश नहीं होते थे.

लालची जीजाओं का जाल

डा. आनंद राय और इंजीनियर अजय राय इस की चर्चा अकसर अपनी पत्नियों से करते थे. दोनों उलाहना देते हुए कहा करते थे कि तुम्हारे पिता के घर में इतना सब कुछ होने के बावजूद तुम्हारे भाई और भाभी हम लोगों के बारे में तनिक भी नहीं सोचते.

यह तो सभी जानते हैं कि पिता की संपत्ति में बेटियों का भी अधिकार होता है. फिर तुम्हारे साथ यह दोहरा बरताव क्यों होता है.

दोनों बहनें भी समझती थीं कि उन के पति जो कह रहे हैं वह बिलकुल सही है. एक तरह से वे अपनेअपने पतियों को मूक समर्थन देती थीं. संपत्ति को ले कर आनंद राय और अजय राय के मन में लालच ने अपना घर बना लिया था.

नेहा अपने दोनों ननदोई की लालची नीयत से वाकिफ थी. अजय और आनंद ने कई बार नेहा को अपनी बातों के जाल में फंसाने की कोशिश की, लेकिन नेहा उन की बातों में नहीं आई. वह अपनी बुआ कुन्नीबाई को सारी बात बता देती थी. नेहा ने तय कर लिया था कि वह अपने ननदोइयों को संपत्ति हड़पने की चाल में नहीं फंसेगी.

नेहा और अनन्या की हत्या के आरोपी डा. आनंद राय, दीपक और इंजीनियर अजय राय

नेहा के साथ दाल न गलने पर आनंद और अजय परेशान हो गए. तब उन के मन में खयाल आया कि जब नेहा नहीं फंस रही तो क्यों न तरुण को अपने जाल में फंसा कर इस संपत्ति को बेचने के लिए मजबूर किया जाए.

तरुण अपने दोनों बहनोइयों की चाल में फंस गया. उन के बहकावे में आ कर वह अपनी प्रौपर्टी का सौदा करने को तैयार हो गया. इस के बाद अजय राय, आनंद राय और तरुण तीनों की आपस में खूब पटने लगी तो नेहा समझ गई कि उन्होंने तरुण को अपने जाल में फंसा लिया है. लिहाजा वह उन पर नजर रखने लगी.

एक दिन कमरे में बैठे तीनों जब संपत्ति को बेचने के बारे में बातें कर रहे थे, तब नेहा परदे की ओट में उन की बातें सुन रही थी. नेहा को लगा कि यदि अब वह खामोश रही तो सारी संपत्ति हाथ से निकल जाएगी. वह उसी समय दरवाजे की ओट से निकल कर ड्राइंगरूम में पहुंच गई. उन तीनों के सामने अचानक नेहा के पहुंचते ही ड्राइंगरूम में सन्नाटा छा गया.

नेहा को देखते ही अजय राय ने तुरंत टौपिक बदल दिया, लेकिन उन तीनों के चेहरों पर जो हवाइयां उड़ रही थीं, उस से नेहा समझ गई. फिर भी अनजान बनते हुए वह बोली, ''आप तीनों के चेहरों पर हवाइयां कैसे उड़ रही हैं. आजकल तरुण से आप लोगों की बहुत ज्यादा पट रही है, आखिर इस की वजह क्या है?''

''ऐसी कोई बात नहीं है. दरअसल, काफी दिनों बाद साले साहब से रूबरू हुए तो घुलमिल कर बातें कर रहे थे.'' आनंद राय बोला.

''लेकिन मुझे तो बात कुछ और ही नजर आ रही है. मेरे आने से पहले आप लोग प्रौपर्टी बेचने के बारे में कुछ बातें कर रहे थे,'' नेहा कहा, ''यदि मेरी बात गलत हो तो आप लोग बता दीजिए.''

नेहा की बात सुन कर तीनों समझ गए कि उसे पूरी बात पता चल गई है. इसलिए वह हक्केबक्के हो कर एकदूसरे की तरफ देखने लगे. तभी अजय बोला, ''दरअसल नेहा, जब तुम पूछ रही हो तो बताए देता हूं कि हमें बड़ी मुश्किल से इस बंगले का खरीदार मिला है, जो बंगले की अच्छी कीमत देने को तैयार है.

''बारबार हमें ऐसा मौका नहीं मिलेगा. समझदारी इसी में है कि हम इसे बेच दें. हम लोग सोच रहे हैं कि इस बंगले को बेच कर जो रकम मिलेगी, उस से हम जमीन खरीद कर उस पर आलीशान फ्लैट्स बना कर उन्हें बेच देंगे. इस से हमें करोड़ों रुपए का फायदा होगा.''

''जीजाजी, नेक सलाह के लिए हम आप के शुक्रगुजार हैं. लेकिन एक सलाह मेरी भी है कि आप दोनों जो स्कीम बता रहे हैं, उस की जगह अपनीअपनी संपत्ति बेच कर खुद कर लें. आप को लाखोंकरोड़ों का फायदा मिल जाएगा.'' नेहा ने दोनों ननदोइयों से कहा.

''देखो दामाद होने के नाते मैं आप दोनों का बड़ा सम्मान करती हूं लेकिन भविष्य में इस तरह की स्कीम और संपत्ति खरीदनेबेचने की बातें यहां कहने मत आना. आप मेरे पति को भी अपनी बातों में ले कर अपना उल्लू सीधा करने में लगे हुए हैं.'' नेहा ने कहा और अपने पति से वहां से उठने का इशारा किया.

नेहा की बात सुन कर आनंद राय और अजय के चेहरे सुर्ख हो गए. इस से उन्हें अपमान महसूस हुआ. उस समय रात हो गई थी. उन्होंने दीवार घड़ी की ओर देखा फिर दोनों भाई बंगले से बाहर निकल गए. तरुण या नेहा ने उन दोनों को रोकने की कोशिश नहीं की.

घर पहुंच कर दोनों भाइयों ने इस की शिकायत अपनीअपनी पत्नियों से की कि उन की भाभी नेहा ने किस तरह से उन का अनादर किया है. दोनों बहनों ने इस की शिकायत नेहा भाभी से की. जवाब में नेहा ने ननदों को पूरी बात बता दी.

पर इतनी बेइज्जती होने के बाद भी अजय राय और आनंद राय ने तरुण के बंगले पर जाना बंद नहीं किया. सपत्ति का विवाद दिन प्रतिदिन बढ़ता गया. लालच में अंधे हो कर वे अपमान की गठरी सिर पर लिए घूमते रहे. जब बात नहीं बनी तो दोनों भाइयों ने एक दिन यहां तक कह दिया कि पिता की संपत्ति में बेटियों का भी हक होता है

इस पर नेहा बोली, ''मैं कब मना कर रही हूं कि संपत्ति में बेटियों का हक नहीं होता, लेकिन जो संपत्ति ससुर की है वह उसी में से हिस्सा ले सकती हैं. पर तुम तो सास और बुआ की संपत्ति पर अपनी नजरें गड़ाए बैठे हो. यह बात सरासर गलत है. ऐसा मैं हरगिज नहीं होने दूंगी. बताओ, कानून की कौन सी किताब में यह बात लिखी है कि बुआ की संपत्ति पर दामादों का हिस्सा बनता है.

''जब कुन्नीबाई बुआ ने अपनी मरजी से 17 एकड़ भूमि का मुख्तियार तरुण को बनाया है तो आप लोगों को क्यों जलन हो रही है. आप को हिस्सा लेना ही था तो ससुर के सामने मांग लेते. उस समय तो आप लोग नहीं बोले. अब वह नहीं हैं तो उन की संपत्ति पर नजरें गड़ाए हुए हो.''

नेहा अपने दोनों ननदोइयों को इसी तरह बेइज्जत कर दिया करती थी. जिस से दोनों भाई नेहा से नफरत करने लगे थे. लालच में अंधा हुआ इंसान विवेकशून्य हो जाता है. दोनों भाइयों डा. आनंद राय और इंजीनियर अजय राय का भी यही हाल था. कोई रास्ता नहीं मिला तो अपनी मंशा पूरी करने के लिए उन्होंने एक आपराधिक योजना तैयार कर ली.

उन्होंने सोचा कि क्यों न तरुण को ही रास्ते से हटा दिया जाए. लेकिन इस योजना पर उन्होंने विराम लगा दिया.

इस की वजह यह थी कि तरुण की पत्नी नेहा साधनसंपन्न और दबंग परिवार से थी. उन्होंने सोचा कि तरुण के साथ कुछ भी किया तो वह उन्हें जीने नहीं देगी. वह कोई दूसरी योजना बनाने लगे.

नेहा ने अपने पति तरुण को भी समझा दिया था कि दोनों बहनोई लालची प्रवृत्ति के हैं. वे लालच में कुछ अहित भी कर सकते हैं. तरुण पत्नी की बात अच्छी तरह समझ गया था. लिहाजा उस ने अपनी बहनोइयों की बातों पर तवज्जो देनी बंद कर दी. जब कभी नेहा के ननदोई प्रौपर्टी को ले कर तरुण से बात करते तो नेहा खुद ही बीच में आ जाती और पति के बोलने से पहले ननदोइयों की बात काट देती थी. वह उन लोगों की निगाह में पति को अच्छा इंसान बनाना चाहती थी.

मृतका के पति तरुण से जानकारी लेते पुलिस अधिकारी

आनंद और अजय का लालच विकराल होता गया. नेहा उन के रास्ते का पत्थर बन गई थी. इस पत्थर को हटाए बिना उन्हें अपनी चाहत पूरी होती दिखाई नहीं दे रही थी.

नेहा को रास्ते से हटाने के लिए ये लोग उचित अवसर की तलाश में रहने लगे. सोचविचार कर दोनों भाइयों ने एक खौफनाक साजिश रच डाली. इस साजिश में उन्होंने अपने भतीजे दीपक सायतोडे को भी शामिल कर लिया.

योजना को दिया अंजाम

आखिरकार 30 जनवरी, 2021 को उन्हें सही मौका मिल गया. इस के लिए उन्होंने कुछ दिनों तक रेकी भी की. जब उन लोगों को पता चला कि तरुण अपने गांव गया है और उस का छोटा भाई इंद्रजीत भी घर पर नहीं है, तो मौका पा कर आनंद और अजय दीपक को ले कर खम्हारडी स्थित उन के बंगले पर पहुंच गए.

उस समय रात के करीब साढ़े 9 बजे थे. तीनों बेरोकटोक बंगले के मुख्य दरवाजे पर पहुंच गए. उस वक्त नेहा अपनी 9 साल की बेटी अनन्या उर्फ पीहू के साथ खेल रही थी. घंटी बजी तो अनन्या बोली, ''देखो मम्मी, लगता है पापा आ गए हैं.''

नेहा दरवाजा खोलने के लिए चली, तभी दोबारा घंटी बजी तो नेहा बोली, ''रुको, आ रही हूं.''

नेहा ने जैसे ही दरवाजा खोला. दोनों ननदोई और एक अपरिचित व्यक्ति सामने खड़े थे. उन्हें देखते ही वह बोली, ''इस वक्त, खैरियत तो हैं?''

''हां, सब ठीक हैं. क्या हमें अंदर आने को नहीं कहोगी,'' आनंद बोला.

नेहा एक तरफ होती हुई बोली, ''आइए.''

तीनों को वह ड्राइंगरूम में ले गई. तीनों सोफे पर बैठ गए. कुछ देर वह उन से औपचारिक बातें करती रही. फिर उन लोगों ने बातचीत का रुख संपत्ति और रुपयों की ओर मोड़ दिया. नेहा ने उस वक्त संयम से काम लिया, लेकिन वे तीनों योजना के तहत उस से झगड़ा करने लगे.

नेहा गुस्से में ड्राइंगरूप से उठ कर अपने बैडरूम में चली गई. उस के पीछेपीछे अजय राय, आनंद राय और दीपक भी पहुंच गए. उन तीनों को अपने पीछे आया देख कर नेहा बोली, ''मैं इस समय आप लोगों से कोई बात नहीं करना चाहती. इस बारे में जो कुछ कहना हो तरुण से कहना.''

तभी अजय दांत पीसते हुए बोला, ''वह हमारी सुनता कहां है.''

''तो मैं क्या करूं. मेहरबानी कर के आप लोग यहां से चले जाइए.''

यह सुन कर उन तीनों ने आंखों ही आंखों में इशारा किया. तभी दीपक ने पास बैठी अनन्या को उठा लिया और जूते का फीता निकाल कर उस के गले में कसने लगा.

बेटी की जान बचाने के लिए नेहा उन से भिड़ गई. यह देख अजय और आनंद ने नेहा को काबू में करने का प्रयास किया. उन के बीच 15 मिनट तक हाथापाई होती रही.

मौका पा कर आनंद ने नेहा के पैर जकड़ लिए और अजय ने अपने दोनों हाथों से नेहा का गला घोंट दिया. कुछ ही देर में उस की मौत हो गई.

उधर दीपक ने अनन्या के गले को जूतों के फीते से कस दिया. बच्ची की भी मौत हो गई. दीपक ने अपनी संतुष्टि के लिए उसी फीते से एक बार फिर नेहा के गले को जोर से कसा. वे लोग पूरी तसल्ली चाहते थे कि उन दोनों में से कोई जिंदा न रहे. इस की पुष्टि के लिए उन्होंने दोनों लाशों को उठा कर बाथरूम के टब में डाल कर यह देखा कि नाक या मुंह से पानी में बुलबुले तो नहीं निकल रहे.

एसपी अजय कुमार यादव, थानाप्रभारी ममता शर्मा और एसआई वेदव्यास दीवान

5 मिनट तक पानी में कोई बुलबुला नहीं उठा तो उन्हें संतुष्टि हो गई कि दोनों की मौत हो चुकी है. इस के बाद तीनों ने चैन की सांस ली.

फिर वे लाशों को उठा कर नेहा के बैडरूम में ले गए और दोनों लाशें औंधे मुंह दीवान के बौक्स में डाल दीं. इस के बाद तीनों ने सलाह की कि इन्हें ठिकाने कैसे लगाया जाए. कुछ देर विचार करने के बाद उन्होंने तय किया कि दोनों लाशों को मंदिर हसौद नया रायपुर के सुनसान इलाके में ले जा कर ठिकाने लगा दिया जाए.

अजय राय यह कहता हुआ वहां से अपनी कार से चला गया कि वह उपयुक्त जगह ढूंढ कर आता है. तब तक रात भी गहरा जाएगी. वह नेहा के बैडरूम और बंगले का ताला बंद कर के चला गया. आनंद राय और दीपक दोनों ताले में बंद लाशों के पास ही बैठे रहे.

उधर नेहा के भाई आकाश ने नेहा को फोन किया तो नेहा के फोन की घंटी तो बजती रही, लेकिन वह फोन नहीं उठा रही थी. कई बार काल करने के बाद भी जब नेहा ने फोन नहीं उठाया तो वह अपनी छोटी बहन को साथ ले कर कार से रात करीब साढ़े 11 बजे नेहा के बंगले पर पहुंच गया.

दोनों लाशों को ठिकाने लगाने के लिए अजय राय भी एक सुनसान जगह देख कर लौट आया था. जब वह बंगले के पास पहुंचा तो उसे वहां भीड़ दिखाई दी. उस का माथा ठनका. उसे समझते देर नहीं लगी कि बंगले के बाहर लोगों का हुजूम क्यों लगा है.

भाग गया अजय राय

उस समय उस की कार बंगले से करीब आधा फर्लांग दूर थी. माजरा समझते ही उस ने यू टर्न लिया और वहां से निकल गया. वह समझ गया कि हत्या का मामला खुल चुका है और पुलिस उस तक पहुंच जाएगी. ऐसे में उस ने शहर से बाहर भागने में ही अपनी भलाई समझी.

वह कार से भंडारपुरी, कसडोल, बिलाईगढ़ होता हुआ बिलासपुर बसस्टैंड पहुंचा. उस ने अपनी कार लौक कर के एक जगह छोड़ दी और फिर बस से प्रयागराज के लिए निकल गया. प्रयागराज में वह अपने एक परिचित के यहां रुका.

कुछ दिन प्रयागराज में रुकने के बाद वह अयोध्या चला गया. अयोध्या में उस का एक दोस्त शिवप्रकाश रहता था. वह आपराधिक प्रवृत्ति का था. अयोध्या जाने से पहले उस ने प्रयागराज हाइवे पर पहुंच कर शिवप्रकाश से फोन पर बात करनी चाही. इस के लिए उस ने अपना मोबाइल औन किया.

तभी उसे ध्यान आया कि अगर उस ने अपने मोबाइल से बात की तो वह पुलिस की पकड़ में आ जाएगा. इसलिए उस ने वहां मौजूद एक पंक्चर बनाने वाले से बात की. अजय ने उस से कहा कि उस का मोबाइल खराब हो गया है और उसे किसी से अर्जेंट बात करनी है. यदि वह अपने फोन से उस की बात करा दे तो मेहरबानी होगी. बदले में वह 100 रुपए दे देगा. पंक्चर वाला तैयार हो गया और उस ने अपना मोबाइल अजय को दे दिया. अजय ने उस के मोबाइल से अपने दोस्त शिवप्रकाश से बात की. वह शिवप्रकाश का नंबर डिलीट करना भूल गया था.

इस के बाद अजय अयोध्या में अपने दोस्त शिवप्रकाश के पास चला गया और वहीं पर रहने लगा. लेकिन वह वहां भी सुरक्षित नहीं रह सका और रायपुर पुलिस के चंगुल में फंस गया. पुलिस उसे अयोध्या से गिरफ्तार कर के ले आई.

पुलिस ने बिलासपुर बसस्टैंड से उस की कार भी बरामद कर ली.

तीनों अभियुक्त पुलिस की गिरफ्त में आ चुके थे. पुलिस ने तीनों को 5 फरवरी, 2021 को कोर्ट में पेश कर 10 दिन की पुलिस रिमांड मांगी. पुलिस के अनुरोध पर कोर्ट ने तीनों आरोपियों को 15 फरवरी, 2021 तक के पुलिस रिमांड पर सौंप दिया.

रिमांड अवधि में विस्तृत पूछताछ के बाद पुलिस ने तीनों को अदालत पर पेश किया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

शाहजहांपुर, उत्तर प्रदेश

छायांकन:मौडलिंग

बेहाल प्रेमी

❑ नितिन कुमार शर्मा

आकाश से शादी हो जाने के बाद भी प्रीति अपने प्रेमी संजू मंसूरी को भुला नहीं पाई थी. आकाश को जब सच्चाई पता लगी तो उस ने प्रीति को तलाक देने की धमकी दी. तलाक की इस धमकी ने प्रीति के भाई गुड्डू को ऐसा कातिल बना दिया कि...

मृतक संजू मंसूरी
(फाइल फोटो)

''संजू, मेरी समझ में यह नहीं आ रहा कि तुम ने मुझ पर ऐसा कौन सा जादू कर दिया है, जो मेरा किसी भी काम में मन नहीं लगता. अब तो तुम्हारे बिना न दिन को चैन आता है और न रातों को नींद.'' प्रीति ने प्रेमी संजू से कहा.

''यह कोई जादू नहीं है बल्कि इसी को प्यार कहते हैं. सच कहूं, प्रीति ऐसा ही तो हाल मेरा है. तुम सामने होती हो तो सब कुछ सतरंगी सा लगता है और तुम से जुदा होते ही चारों ओर वीरानी नजर आती है.

''प्रीति, कभीकभी तो मैं यह सोच कर ही डरता हूं कि कहीं हमारे प्यार को किसी की नजर न लग जाए. क्योंकि मैं तुम्हारे बिना जिंदा नहीं रह सकता.'' प्रीति का हाथ अपने हाथों में लेते हुए संजू बोला.

''संजू, जुदाई की सोचते ही मेरी तो रूह कांप जाती है. मैं यही सोच कर परेशान हूं कि कहीं मेरे घरवालों को हम दोनों के प्यार के बारे में पता चल गया तो उन का मेरे प्रति व्यवहार कैसा होगा. क्योंकि हम दोनों नदी के दो किनारों की तरह हैं, जो कभी आपस में मिल नहीं सकते. बताओ, ऐसे में हमारे प्यार को मंजिल कैसे मिलेगी ?'' कहते हुए प्रीति के चेहरे पर गंभीरता छा गई.

वह एक पल रुक कर बोली, ''मेरी एक बात मानोगे, संजू ? क्यों न हम यहां से कहीं दूर जा कर अपने प्यार की नई दुनिया बसा लें, जहां हमें किसी का डर न हो. जब हम एकदूजे के हो जाएंगे तो किसी में इतनी ताकत नहीं होगी कि हमें अलग कर पाए.''

प्रीति ने कहा तो संजू भी सोच में डूब गया. उसे भी लगा कि प्रीति की सोच अपनी जगह ठीक है. प्यार के एक नहीं, लाखों दुश्मन होते हैं. वैसे भी प्रीति ने उस से जिंदगी भर साथ निभाने का वादा किया है. उसे अपना बनाने के लिए अगर हिम्मत कर के यह कदम उठा भी ले तो कौन सी बुराई है.

ईरिक्शा चालक 35 वर्षीय संजू मंसूरी जिला शाहजहांपुर के सिधौली थाना के गांव रामपुर में रहता था. उस के पिता का नाम शेर मोहम्मद था और मां का रजिया. पिता खेतीकिसानी करते थे. संजू की 2 बड़ी बहनें थीं और एक छोटा भाई इस्लामुद्दीन. दोनों बहनों का निकाह हो चुका था. इसी गांव में रामविलास परिवार सहित रहता था. परिवार में पत्नी सुधा, एक बेटा गुड्डू और 2 बेटियां प्रिया और प्रीति थीं. रामविलास खेती करता था, जिस की आय से घर का खर्च चलता था.

प्रिया का विवाह हो चुका था. प्रीति अभी अविवाहित थी. स्वभाव से वह काफी चंचल थी. घर के कामों में उस का मन नहीं रमता था. प्रीति हमेशा बनठन कर रहती और टीवी से चिपकी रहती थी.

मां की डांट के बावजूद प्रीति टीवी पर आने वाली फिल्में देखे बगैर नहीं रहती थी. प्रीति पर फिल्मों और फिल्मी गानों का इतना प्रभाव पड़ा कि वह खुद को फिल्मी हीरोइन से कम नहीं समझती थी.

चूंकि फिल्मों में प्यारमोहब्बत को महिमामंडित किया जाता है, इसलिए प्रीति को भी ऐसे युवक की तलाश थी, जो फिल्मी हीरो की तरह उस के सामने प्यारमोहब्बत का प्रस्ताव रखे. उसे चाहे और उसे सराहे. उस के हुस्न की तारीफ करे और उस की याद में तड़पे.

दूसरी ओर संजू अधिक पढ़लिख नहीं सका था, लेकिन वह अपने पहनावे से पढ़ालिखा और हैंडसम युवक नजर आता था. अपने शरीर पर वह विशेष ध्यान देता था. हमेशा आधुनिक फैशनेबल कपड़े पहनता था. संजू को भी पागलपन की हद तक फिल्में देखने का शौक था. उस का बात करने और चलने का स्टाइल भी फिल्मी था.

संजू अपनी उम्र के उस मोड़ पर था, जहां आशिकी स्वभाव में अपने आप आ कर शामिल हो जाती है. लव स्टोरी वाली फिल्में देखदेख कर संजू का मिजाज भी आशिकाना हो गया था. वह मोहल्ले की लड़कियों पर अकसर नजर रखने की कोशिश किया करता था. लेकिन कोई लड़की उस की तरफ आकर्षित नहीं हुई थी.

संजू की दोस्ती रामविलास के बेटे गुड्डू से थी. इस वजह से उस का उस के घर आनाजाना था. आनेजाने में उस की मुलाकात गुड्डू की बहन प्रीति से हो जाती थी.

प्रीति की सुंदरता संजू के मन को भा गई. बारबार आनेजाने से उन के

बीच बातचीत भी होने लगी. प्रीति संजू की निगाहों को भांप कर उस के दिल का हाल जान चुकी थी. उसे संजू पसंद था, इसलिए वह भी संजू से बात करने में गुरेज नहीं करती थी.

दोनों एक ही शौक के शिकार थे. उन के बीच अधिक बातचीत फिल्मों को ले कर ही होती थी. दोनों एकदूसरे के साथ काफी समय बिताते थे. इस के लिए वे घर के बाहर भी मिलते थे. क्योंकि घर में एक साथ बैठ कर ज्यादा देर तक बात नहीं कर सकते थे.

समय के साथसाथ दोनों को एकदूसरे का संग खूब भाने लगा. दोनों साथ में मोबाइल पर रोमांटिक मूवी भी देखते. फिर फिल्म के कलाकारों की नकल करते हुए दोनों उन के डायलौग बोलते और उसी अंदाज में एकदूसरे के पास आ कर बांहों में भर कर आंखों में आंखें डाल कर उसी तरह बात करते जैसे कलाकार फिल्म में करते थे. इस से दोनों एकदूसरे के काफी नजदीक आते चले गए.

दोनों दिल की धड़कनों की आवाज और सांसों की सरगम को भी बखूबी महसूस करते थे. ये नजदीकियां दोनों को अच्छी लगने लगी थीं. जब वे नजदीक होते तो अलग होने की बात दिमाग में लाने ही नहीं देते थे. लेकिन मजबूर हो कर उन को एकदूसरे से अलग होना ही पड़ता. फिल्मी कलाकारों के लव सीन की एक्टिंग करतेकरते वे दोनों भी एकदूसरे से प्यार कर बैठे. अब बस इजहार करना बाकी था.

एक दिन लव सीन की एक्टिंग करतेकरते संजू ने प्रीति को अपनी बांहों में लिया तो फिल्म के डायलौग न बोल कर उस ने अपने दिल की बात कहनी शुरू कर दी, ''प्रीति, देखता तो मैं तुम्हें बचपन से आया हूं. लेकिन जब से हम एक्टिंग के जरिए एकदूसरे के नजदीक आए हैं, जब से मैं ने तुम्हें बेहद करीब से देखा तब से ये नजरें तुम्हारे सिवा कुछ और देखना ही नहीं चाहतीं.

''तुम्हारी झील सी आंखों की गहराइयों में डूब कर तुम्हारे दिल का हाल जाना तो यही लगा कि तुम्हारा दिल भी मेरे पास आना चाहता है. इस बात की गवाही तुम्हारे दिल की धड़कनें देती हैं. मैं तो तुम्हें दिलोजान से चाहता हूं. मुझे अपने प्यार पर भी पूरा भरोसा है कि वह भी मुझे बेइंतहा चाहता है, बस देर है तो उसे तुम्हारे द्वारा जुबां से कुबूल करने की.''

प्रीति तो जैसे उस के प्रेम से सराबोर हो गई और उस की आंखों में देखती हुई फिल्मी स्टाइल में बेसाख्ता बोली, ''कुबूल है...कुबूल है...कुबूल है मेरे महबूब.''

यह सुनते ही संजू की खुशी का ठिकाना न रहा. उस ने प्रीति को अपने सीने से लगा लिया और बोल उठा, ''आई लव यू...आई लव यू प्रीति.''

उस के प्यार भरे शब्द प्रीति के कानों में रस घोल रहे थे. उसे मीठा सा सुखद एहसास हुआ तो उस ने अपनी आंखें बंद कर लीं और संजू के कंधे पर अपना सिर रख दिया. काफी देर तक दोनों उसी स्थिति में रहे. उस के बाद जब अलग हुए तो उन के चेहरे खिले हुए थे.

इस के बाद तो प्रीति और संजू की तूफानी मोहब्बत बड़ी तेजी के साथ अपनी बुलंदियों की तरफ बढ़ने लगी. दोनों रोज ज्यादा से ज्यादा वह एकदूसरे के पास रहने की कोशिश करते. कभी घर पर, कभी खेत पर. इस चक्कर में संजू अपने काम से जी चुराने लगा था.

उसे घर में रोज डांट पड़ती थी. लेकिन संजू पर तो प्रीति की मोहब्बत का भूत सवार था. वह प्रीति के लिए हर किसी से बगावत करने को तैयार था.

दरअसल ग्रामीण परिवेश में प्यारमोहब्बत के मामले अधिक दिनों तक छिप नहीं पाते. प्रीति और संजू की मोहब्बत के साथ भी यही हुआ. उन दोनों की अपनी दीवानगी की वजह से पूरा गांव इस प्रेम प्रकरण के बारे में जान गया था.

उधर उन दोनों प्रेमियों की हालत ऐसी हो गई थी कि उन्हें एकदूसरे को देखे बिना करार नहीं आता था. लोगों को पता लग जाने के बाद दोनों हर समय चोरीछिपे की मुलाकातों का जुगाड़ बैठाने की जुगत में लगे रहते थे. गांव के बाहर एक खंडहरनुमा मकान उन की मिलनस्थली बन गया था. इसी दौरान दोनों के बीच शारीरिक संबंध भी बन गए.

एक दिन गांव के बिरादरी के कुछ लोगों ने प्रीति के पिता रामविलास को बताया कि उस की लड़की गलत रास्ते पर जा रही है. यह सुन कर रामविलास आगबबूला हो उठा. उस ने अपनी पत्नी सुधा को हड़काया कि वह प्रीति को खेतों और बाजार में न जाने दे.

इसी दौरान सुधा ने अपनी आंखों से एक ऐसा नजारा देखा, जिसे देखने के बाद उस ने प्रीति की खूब पिटाई की. दरअसल, संजू प्रीति के घर के सामने से निकल रहा था तो प्रीति दरवाजे पर खड़ी थी. संजू को देख प्रीति उसे बारबार फ्लाइंग किस देने लगी.

संजू उस किस को अपने हाथ में लेने का प्रयत्न कर रहा था. यह सब सुधा ने अपनी आंखों से देख लिया था. यह सब देख सुधा ने प्रीति की पिटाई की. इस दृश्य को देखने के बाद सुधा ने पति रामविलास से स्पष्ट शब्दों में कह दिया था कि वह अपनी लाडली के हाथ पीले कर दें, वरना किसी दिन वह इस परिवार की नाक कटवा देगी.

रामविलास इस मामले में गंभीर हो गया. उस ने उसी रोज से प्रीति के लिए बिरादरी में कोई लड़का ढूंढना शुरू कर दिया. अंततः उस की मेहनत रंग लाई. उसे शाहजहांपुर के ही जसनपुर गांव निवासी रामवीर का बेटा आकाश प्रीति के लिए उपयुक्त लगा. वह खेती करता था.

आकाश देखने में सुंदर और अच्छी कदकाठी का था और खेती भी अच्छीखासी थी. सब कुछ देखजान कर रामविलास ने रिश्ते की बात चलाई तो जल्द ही बात बन गई. प्रीति ने विरोध करना चाहा, लेकिन पिता का गुस्सा देख कर वह कुछ न कर पाई. उसे धमकी भी मिली थी कि अगर वह शादी के लिए तैयार न हुई तो वह उसे जिंदा मार देंगे. प्रीति बेबस हो गई.

वह तो संजू के साथ भाग जाने की सोच रही थी, लेकिन पिता को संबंधों का पता चलने के बाद मारने की धमकी देने पर वह कुछ न कर पाई.

एक साल पहले प्रीति का विवाह आकाश से हो गया. वह मायके से ससुराल आ गई. यहां आ कर वह किसी तरह संजू को भूलने की कोशिश करने लगी, लेकिन वह जितना उसे भूलने की कोशिश करती, उतना ही वह ज्यादा उसे याद आता. आकाश ने उसे अपनी तरफ से भरपूर प्यार दिया, उस का खयाल रखा.

दूसरी ओर संजू अपने आप को प्रीति से दूर

पुलिस हिरासत में संजू की हत्या का आरोपी गुड्डू और उस का बहनोई आकाश

होने के बाद संभाल नहीं पा रहा था. रहरह कर उठतेबैठते उस के खयालों में प्रीति ही छाई रहती थी. जब बरदाश्त की हद पार हुई तो वह एक दिन प्रीति की ससुराल पहुंच गया. प्रीति उस की हिम्मत देख कर चौंक गई. लेकिन काफी अरसे बाद उसे देख कर उस के दिल को सुकून भी पहुंचा. उस से मिलने के बाद फोन पर बात करने की बात कह कर वापस आ गया.

इस के बाद उन दोनों की चोरीछिपे फोन पर बातें होने लगीं. जब भी प्रीति मायके आती तो संजू के साथ खूब समय बिताती.

एक दिन आकाश ने अपनी पत्नी प्रीति को संजू से बातें करते पकड़ लिया. आकाश ने प्रीति को जम कर पीटा. उस के बाद वह प्रीति पर नजर रखने लगा.

16 नवंबर, 2020 की रात संजू ने खाना खाया. उस के बाद वह घर से निकल गया. वह काफी देर तक नहीं लौटा तो उसे तलाशा गया लेकिन उस का कोई पता नहीं चला. 17 नवंबर की सुबह फिर संजू की तलाश शुरू हुई तो गांव के बाहर सेठपाल के खेत में पराली के ढेर के पास संजू की चप्पलें पड़ी मिलीं.

पराली हटाने पर उस के नीचे संजू की लाश मिली. लाश मिलते ही कोहराम मच गया. घरवाले वहां पहुंच कर रोनेपीटने लगे. संजू के भाई इस्लामुद्दीन को गांव के लोगों से पता चला कि रात में उन लोगों ने संजू को गुड्डू के साथ जाते देखा था.

संजू की लाश मिलने पर गुड्डू वहां नहीं पहुंचा, न ही वह घर पर था, इसलिए पूरा शक गुड्डू पर गया.

स्थानीय सिधौली थाने की पुलिस को घटना की सूचना दे दी गई. थाने के इंसपेक्टर जगनारायण पांडेय सूचना मिलते ही पुलिस टीम के साथ वहां पहुंच गए. मृतक के गले पर गहरे निशान थे. शरीर पर और किसी प्रकार के निशान नहीं थे. संभवतः गला दबा कर हत्या की गई थी. इस के बाद इंसपेक्टर पांडेय ने इस्लामुद्दीन से आवश्यक पूछताछ की.

इसी बीच एसपी (ग्रामीण) अपर्णा गौतम भी मौके पर पहुंच गईं. उन्होंने घटनास्थल का निरीक्षण कर के पूछताछ की फिर आवश्यक दिशानिर्देश दे कर चली गईं. चूंकि मामला 2 संप्रदायों से जुड़ा था. इस वजह से उपजे तनाव को देखते हुए गांव में पीएसी तैनात कर दी गई. लाश को पोस्टमार्टम के लिए मोर्चरी भेजने के बाद इंसपेक्टर जगनारायण पांडेय इस्लामुद्दीन को साथ ले कर थाने आ गए.

इस्लामुद्दीन की तहरीर पर इंसपेक्टर पांडेय ने गुड्डू, सेठपाल, विमल, अंगद और एक अज्ञात के खिलाफ भादंवि की धारा 147/302/201 के तहत मुकदमा दर्ज करा दिया. इस्लामुद्दीन ने इन लोगों पर संजू के मोबाइल और 80 हजार रुपए के लालच में हत्या करने का आरोप लगाया था.

21 नवंबर, 2020 को सुबह 10 बजे इंसपेक्टर पांडेय ने गुड्डू और उस के बहनोई आकाश को नियामतपुर मोड़ से गिरफ्तार कर लिया. उन के पास से संजू का वीवो कंपनी का मोबाइल फोन भी बरामद हो गया. थाने ला कर जब दोनों से कड़ाई से पूछताछ की गई तो उन्होंने अपना जुर्म स्वीकार कर लिया और हत्या की वजह बता दी.

उन्होंने बताया कि प्रीति संजू से बात करना बंद नहीं कर रही थी. इस वजह से आकाश और उस के बीच विवाद हो जाता था. आकाश अपनी पत्नी की चरित्रहीनता बरदाश्त नहीं कर पा रहा था.

इसी साल भैयादूज पर वह प्रीति को ले कर उस के मायके आया. प्रीति के भाई गुड्डू से कहा कि उस की बहन प्रीति का चरित्र ठीक नहीं है. उस के संजू से अवैध संबंध हैं. अब वह प्रीति को अपने साथ नहीं रखेगा, उस से तलाक ले लेगा. इस पर गुड्डू ने उसे समझाया कि ऐसा कुछ करने की जरूरत ही नहीं पड़ेगी. हम लोग संजू को ही ठिकाने लगा देते हैं. आकाश ने भी आवेश में उस की हां में हां मिला दी.

16 नवंबर की शाम को संजू खाना खा कर घर से निकला तो उसे निकलता देख गुड्डू उस के पास आ गया और बातोंबातों में उसे गांव के बाहर सेठपाल के खेत पर ले गया. वहां आकाश पहले से मौजूद था.

दोनों ने मिल कर संजू को दबोच लिया और हाथों से गला दबा कर उस की हत्या कर दी. गुड्डू ने संजू की पैंट की जेब से उस का मोबाइल निकाल लिया. फिर संजू की लाश को पराली के ढेर में दबा दिया.

लेकिन दोनों पुलिस के हत्थे चढ़ ही गए. आवश्यक कानूनी औपचारिकताएं पूरी करने के बाद पुलिस ने दोनों हत्याभियुक्तों को न्यायालय में पेश करने के बाद जेल भेज दिया. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

बेंगलुरु, कर्नाटक

रवि पुजारी एक बड़बोला डौन

करीब 20 सालों से फरार रंगदारी, हत्या समेत लगभग 200 मामलों में वांटेड फिल्मी हस्तियों, बिल्डरों, नेताओं और बिजनैसमैनों को धमकी दे कर पैसे की उगाही करने वाला कुख्यात गैंगस्टर रवि पुजारी आखिर पकड़ा ही गया. कर्नाटक पुलिस उसे पश्चिमी अफ्रीकी देश सेनेगल से भारत ले तो आई, पर क्या उस का अंजाम भी छोटा राजन जैसा ही...

❑ वीरेंद्र बहादुर सिंह

अंडरवर्ल्ड डौन रवि पुजारी करीब 2 साल के अथक प्रयास के बाद आखिर पश्चिमी अफ्रीकी देश सेनेगल की राजधानी डकार से नाटकीय ढंग से एक नाई की दुकान से पुलिस के हाथ लग ही गया. डौन रवि पुजारी 90 के दशक का मुंबई का सक्रिय अपराधी रह चुका था.

उस के खिलाफ ही नहीं, उस की पत्नी के खिलाफ भी इंटरपोल का रेड कार्नर नोटिस जारी था. लेकिन वह लंबे समय से फरार चल रहा था. वह बहुत ही चालाक अपराधी था, इसलिए उसे पकड़ने के लिए काफी सतर्कता बरती गई थी.

रवि पुजारी कई बार पुलिस के हाथों से निकल चुका था. उसे पकड़ने के लिए सेनेगल पुलिस 3 बसों में भर कर पहुंची थी और उसे चारों तरफ से घेर लिया था.

क्रिकेट मैच का आनंद लेता रवि पुजारी उर्फ एंथोनी फर्नांडीज

रवि पुजारी की कहानी भी वैसी ही है, जैसी आम बदमाशों या अंडरवर्ल्ड डौन की होती है. मूलरूप से वह मंगलुरु का रहने वाला था. मंगलुरु में एक जगह है माल्पे, जहां वह 1968 में पैदा हुआ था.

उस के पिता शिपिंग फर्म में काम करते थे. रवि पढ़ाई में काफी कमजोर था. लगातार फेल होने की वजह से उसे स्कूल से निकाल दिया गया. बचपन से ही उसे फिल्मों का बहुत शौक था. स्कूल से निकाले जाने के बाद अपने इसी शौक की वजह से रवि मुंबई आ गया था. मुंबई में रोजीरोटी के लिए यह अंधेरी में एक चाय की दुकान पर काम करने लगा, जहां वह लोगों को चाय सर्व करता था.

रवि पुजारी की मुंबई में यह शुरुआत थी. यह उस समय की बात है, जब मुंबई के पुराने डौन खत्म हो रहे थे और नएनए डौन उभर रहे थे. उन में दाऊद इब्राहीम और छोटा राजन मुख्य थे. रवि पुजारी जिस चाय की दुकान पर काम करता था, उस दुकान पर इलाके के तमाम मवाली और गुंडे चाय पीने आते थे. उन का रौबदाब और शाही रहनसहन देख कर रवि पुजारी उन मवालीगुंडों से काफी प्रभावित था.

फलस्वरूप रवि पुजारी भी जुर्म की दुनिया में अपना नाम कमाने के बारे में सोचने लगा. संबंध बनाने के लिए वह ऐसे लोगों की खूब आवभगत करता था. उन्हें बढ़िया से बढ़िया चाय बना कर पिलाता था. उन से दोस्ती करने की कोशिश करता था.

उस दुकान पर आनेजाने वाले मवालीगुंडों में रोहित वर्मा और विनोद मटकर नाम के 2 गुंडे भी थे. ये दोनों छोटा राजन के लिए काम करते थे. एक तरह से ये छोटा राजन के शूटर थे. उस समय छोटा राजन दाऊद इब्राहीम के लिए काम करता था. यह 80 के दशक यानी सन 90 के पहले की बात है.

उसी इलाके में एक गैंगस्टर और था, जिस का नाम था बाला जाल्टे. बाला जाल्टे और रोहित वर्मा के बीच किसी बात को ले कर ठनी हुई थी. एक दिन रोहित वर्मा अपने साथियों के साथ वहां पहुंचा और बाला जाल्टे की गोली मार कर हत्या कर दी. कहा जाता है कि बाला जाल्टे की हत्या करने के लिए हथियार रवि पुजारी ने ही ला कर दिया था.

इस के बाद रोहित वर्मा की रवि पुजारी से दोस्ती हो गई. रवि पुजारी शूटर बनना चाहता ही था, इसलिए जल्दी ही वह रोहित वर्मा के करीब आ गया. रोहित वर्मा ने उस से वादा किया कि वह उसे छोटा राजन से मिलवा देगा.

करीब आने के बाद रोहित वर्मा उस से छोटेमोटे काम कराने के साथसाथ उसे ट्रेनिंग दे कर शूटर बनाने लगा, जो वह जल्दी ही बन भी गया. उस का नाम भी छोटा राजन के शूटरों में जुड़ गया और धमकी दे कर उस के पास पैसा आने लगा. उस का निशाना होते थे फिल्म वाले, बिल्डर, नेता, होटल मालिक और बिजनैसमैन. जरूरत होती तो वह बात न मानने पर किसी की हत्या भी करा देता था.

हथियार हाथ में आया तो रवि का ठिकाना मुंबई ही नहीं, कर्नाटक भी बन गया. जान से मारने की धमकी दे कर वह बिल्डरों, बिजनैसमैनों और नेताओं से लाखोंकरोड़ों वसूलता था.

जल्दी ही कर्नाटक में उस के खिलाफ 90 केस दर्ज हो गए. इन में से 37 केस बेंगलुरु में और 36 मेंगलुरु में दर्ज हुए. सरकार तक बात पहुंची तो उसे पकड़ने के लिए स्पैशल टीम बनाई गई. जो कर्नाटक, मुंबई में उसे सब जगह ढूंढ रही थी.

पैसा आया तो रवि पुजारी दुबई चला गया और वहीं से अपने टारगेट को धमकी दे कर वसूली करने लगा. रवि पुजारी से लोग काफी परेशान हो चुके थे. वह देश में भले नहीं था, लेकिन उस की दहशत काफी थी. इसी वजह से उसे ले कर कर्नाटक पुलिस काफी परेशान थी. अंततः कर्नाटक सरकार ने पुलिस टीम से कहा कि रवि पुजारी नाम की इस आफत का किसी भी तरह पता लगाओ और उसे गिरफ्तार कर के भारत ले आओ.

2 मार्च, 2018 को कर्नाटक के एडीजीपी अमर कुमार पांडेय की अगुवाई में पुलिस की एक टीम बना कर रवि पुजारी को गिरफ्तार करने की जिम्मेदारी सौंपी गई. पुलिस को रवि पुजारी की गिरफ्तारी की जिम्मेदारी तो सौंप दी गई, लेकिन उस के बारे में किसी को कोई जानकारी नहीं थी.

सिर्फ इतना पता था कि 20 साल पहले 1990 में वह मुंबई से दुबई गया था और वहां से वह लोगों को धमका कर पैसे मांगता था. कर्नाटक और मुंबई में उस के कई शूटर थे. पुलिस टीम ने पता लगाना शुरू किया तो जानकारी मिली कि रवि दुबई से युगांडा गया और वहां से केन्या. कुछ समय वह आस्ट्रेलिया में भी रहा. आस्ट्रेलिया छोड़ कर अब वह साउथ अफ्रीका में कहीं रह रहा है. रवि का टैरर गुजरात में भी था. वहां उस के कई साथी भी थे. गुजरात की एसटीएफ को भी उस की तलाश थी.

रवि पुजारी के बारे में पुलिस के पास कोई निश्चित जानकारी नहीं थी. काफी कोशिश के बाद भी उस का पता नहीं चल पा रहा था. इस की एक वजह यह भी थी कि रवि पुजारी थोड़ा अलग किस्म का डौन था. वह टेक्नोलौजी का उपयोग बहुत कम करता था, जिस से किसी को उस का सुराग नहीं मिल पा रहा था.

इस के बावजूद उस का वसूली का धंधा धड़ल्ले से चल रहा था. वह मुंबई में ही नहीं, कर्नाटक, केरल, उत्तर प्रदेश और गुजरात तक लोगों को धमकी दे कर वसूली कर रहा था.

रवि पुजारी को गिरफ्तार करने के लिए एडीजीपी अमर कुमार पांडेय की अगुवाई में टीम बन गई थी. उसे गिरफ्तार करने के लिए टीम ने अपने मुखबिर लगा दिए. क्योंकि उस के आदमी तो भारत में थे ही, जिन के माध्यम से वह वसूली कर रहा था.

उन्हीं मुखबिरों से पुलिस टीम को पता चला कि मंगलुरु में एक ऐसा आदमी है, जिसे रवि पुजारी के बारे में हर छोटी से छोटी जानकारी है. दबिश दे कर पुलिस ने उस आदमी को उठा लिया.

दबाव में आ कर वह आदमी वादामाफ गवाह बन कर रवि पुजारी की हर छोटी से छोटी जानकारी देने लगा. लेकिन उस आदमी द्वारा दी गई जानकारी से भी पुलिस को कोई खास सफलता नहीं मिली.

उसी दौरान पुलिस को कर्नाटक के एक और डौन बन्नाजी राजा के बारे में पता चला. वह मोरक्को में रह रहा था. सन 2015 में उसे मोरक्को से पकड़ कर भारत लाया गया.

पुलिस को लगा था कि बन्नाजी राजा और मंगलुरु से पकड़े गए आदमी से रवि पुजारी के बारे में कुछ इस तरह की जानकारी मिल जाएगी कि उस तक पहुंचा जा सके. पर दोनों से ही इस तरह की कोई जानकारी नहीं मिली.

फिर भी पुलिस दोनों से लगातार बातचीत करती रही. इस बातचीत में रवि पुजारी के साथी ने पुलिस टीम को बताया कि वह रेस्टोरेंट की चेन खोलना चाहता था. चूंकि वह इंडिया में मोस्टवांटेड था, इसलिए उस ने अपना नाम भी बदल लिया था. उसे एक नाम बहुत पसंद था और वह था एंथोनी फर्नांडीज.

रवि का परिवार भी नहीं लगा हाथ

पुलिस को रवि पुजारी का नाम तो पता चल गया था, पर इतनी बड़ी दुनिया में किसी को सिर्फ नाम के सहारे तो नहीं ढूंढा जा सकता था. फिर भी पुलिस उस के पीछे लगी रही. रवि पुजारी की पत्नी पद्मा दिल्ली में अपनी सास, 2 बेटियों और बेटे के साथ रह रही थी.

> मुखबिरों और स्थानीय पुलिस से कर्नाटक पुलिस को पता चला कि 'नमस्ते इंडिया' रेस्टोरेंट की चेन का मालिक एंथोनी फर्नांडीज बुर्कीना फासो के कंबोडिया इंटरनैशनल स्कूल के पास रहता है. पुलिस अब उस घर की निगरानी करने लगी थी कि शायद रवि पुजारी के बारे में और कोई पुख्ता जानकारी मिल जाए.

सन 2005 में वह फरजी पासपोर्ट बनवाने के आरोप में गिरफ्तार हुई थी. लेकिन जमानत होते ही अपनी बेटियों और बेटे के साथ अचानक फरजी पासपोर्ट के सहारे गायब हो गई थी. पुलिस ने जब उस के बारे में पता लगाया तो पता चला कि वह भाग कर अपने पति रवि पुजारी के पास पहुंच गई है.

इस के बाद पुलिस रवि की खोज में और जोरशोर से लग गई. आखिर पुलिस की कोशिश रंग लाई और इस बार एक अहम जानकारी यह मिली कि रवि को अफ्रीका के एक पश्चिमी अफ्रीकी देश सेनेगल की राजधानी डकार में देखा गया है.

पुलिस ने अपने मुखबिरों से उस के बारे में पता किया, पर कोई पुख्ता जानकारी नहीं मिली. इसी बीच पुलिस को अपने सूत्रों से पता चला कि रवि पुजारी पश्चिमी अफ्रीकी देश बुर्कीना फासो में देखा गया है. लेकिन वह वहां से निकल गया.

उसी दौरान पुलिस को कुछ फोटो मिले, जिन्हें रवि पुजारी के 20 साल पुराने फोटो से मिलाया गया. वे फोटो पूरी तरह तो नहीं मिल रहे थे, फिर भी ऐसा लग रहा था कि फोटो उसी के हैं.

इस के बाद कर्नाटक पुलिस ने अपने मुखबिरों को सतर्क कर दिया. स्थानीय पुलिस की भी मदद ली गई. तब पुलिस को पता चला कि बुर्कीना फासो में एंथोनी फर्नांडीज नाम का एक आदमी रह रहा है. वहां पर एक रेस्टोरेंट की चेन चल रही है, जिस का नाम है नमस्ते इंडिया.

रवि पुजारी भी इंडिया का था और रेस्टोरेंट की चेन का भी नाम नमस्ते इंडिया था. उस के इंडिया वाले साथी ने पुलिस को बताया भी था कि वह रेस्टोरेंट की चेन खोलना चाहता था. इस से लगा कि हो न हो ये नमस्ते इंडिया नाम के जो रेस्टोरेंट हैं, वे रवि पुजारी के ही हों. इस का मतलब था कि इन का मालिक एंथोनी फर्नांडीज ही रवि पुजारी है.

मुखबिरों और स्थानीय पुलिस से कर्नाटक पुलिस को पता चला कि नमस्ते इंडिया रेस्टोरेंट की चेन का मालिक एंथोनी फर्नांडीज बुर्कीना फासो के कंबोडिया इंटरनैशनल स्कूल के पास रहता है. इस के बाद पुलिस ने उस घर के जरिए काफी जानकारियां जुटाईं.

पुलिस अब उस घर की निगरानी करने लगी थी कि शायद रवि पुजारी के बारे में और कोई पुख्ता जानकारी मिल जाए.

उसी दौरान अक्तूबर, 2018 में पुलिस को पता चला कि सेनेगल में नमस्ते इंडिया रेस्टोरेंट की जो चेन चल रही है, उस का मालिक डांडिया नाइट करा रहा है. उस डांडिया नाइट में वही सब होगा, जो इंडिया में डांडिया नाइट में होता है. इस के बाद पुलिस ने मुखबिर के जरिए उस डांडिया नाइट की वीडियो और

तस्वीरें हासिल कीं. उस वीडियो में पुलिस ने देखा कि एंथोनी फर्नांडीज वहां के लड़कों से हाथ मिला रहा है और डांस कर रहा है. पुलिस ने उन तसवीरों को गौर से देखा तो 20 साल पहले के रवि पुजारी से एंथोनी फर्नांडीज की शक्ल काफी मिलतीजुलती लगी.

लेकिन पुलिस के लिए इतना काफी नहीं था. पुलिस और सबूत जुटाती, उस के पहले ही एंथोनी फर्नांडीज बुर्कीना फासो से गायब हो गया. लेकिन वहां स्थित पुलिस के मुखबिर उस के बारे में पता करने में लगे थे. पुलिस को उन मुखबिरों से पता चला कि डकार में भी नमस्ते इंडिया रेस्टोरेंट की चेन है.

पुलिस मुखबिरों की मदद से डकार में नमस्ते इंडिया नाम के रेस्टोरेंट्स पर नजर रखने लगी.

पुलिस इस चक्कर में थी कि शायद यहां से भी उस की कुछ तसवीरें मिल जाएं. तभी पता चला कि डकार में नमस्ते इंडिया रेस्टोरेंट की ओर से वहां एक क्रिकेट मैच कराया जा रहा है, जिस का नाम है इंडियन क्रिकेट क्लब सेनेगल.

इस क्रिकेट मैच के आर्गनाइजरों में जो नाम थे, उन में एक नाम एंथोनी फर्नांडीज का भी था. इनविटेशन कार्ड में जो फोन नंबर थे, उन में एक नंबर बुर्कीना फासो स्थित एंथोनी फर्नांडीज के घर का था, इस से पुलिस को लगा कि यह वही आदमी है.

जहां मैच हो रहा था, पुलिस ने मुखबिर के जरिए उस पर नजर रखी. जिस समय क्रिकेट खेला जा रहा था, उसे इंडियन जर्सी में मैच देखते पाया गया. मुखबिर द्वारा पुलिस को उस की फोटो भी मिल गई. इस बार टेक्नोलौजी के जरिए रवि पुजारी की 20 साल पहले की फोटो से मिलाई गई तो साफ हो गया कि एंथोनी फर्नांडीज ही रवि पुजारी है.

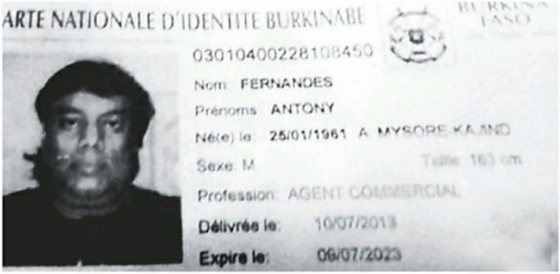
ARTE NATIONALE D'IDENTITE BURKINABE

BURKINA FASO

03010400228108450

Nom: FERNANDES

Prénoms: ANTONY

Né(e) le: 25/01/1961 A MYSORE-KA.IND

Sexe: M

Taille: 163 cm

Profession: AGENT COMMERCIAL

Délivrée le: 10/07/2013

Expire le: 06/07/2023

रवि पुजारी उर्फ एंथोनी फर्नांडीज का बुर्कीना फासो का पासपोर्ट

बहुत चालाक निकला रवि पुजारी

नाम, रेस्टोरेंट की चेन और फोटो से यह बात जाहिर हो गई कि एंथोनी फर्नांडीज ही रवि पुजारी है तो कर्नाटक पुलिस ने कर्नाटक सरकार की मदद से सेनेगल सरकार से संपर्क किया. कहा जाता है कि सेनेगल के राष्ट्रपति मैकी शाल अपराध और अपराधी से बहुत नफरत करते हैं.

उन्होंने कई देशों के गैंगस्टरों को पकड़वा कर उन के देश भेजा भी था. इस से उम्मीद जागी कि वह रवि पुजारी को भी गिरफ्तार कराने में जरूर मदद करेंगे.

भारत सरकार ने इंटरपोल के जरिए इस बात के सारे दस्तावेज सेनेगल की सरकार को सौंपे कि भारत को रवि पुजारी की 100 से ज्यादा मामलों में तलाश है तो वहां के राष्ट्रपति ने मदद करने का वादा ही नहीं किया, बल्कि अपनी पुलिस और इंटेलिजेंस को नमस्ते इंडिया रेस्टोरेंट पर नजर रखने के लिए लगा दिया.

महीनों की कोशिश के बाद जब निश्चित हो गया कि एंथोनी फर्नांडीज नाम का आदमी ही रवि पुजारी है तो रविवार के दिन जब वह सैलून गया तो सेनेगल की पुलिस ने उसे दबोच लिया.

इस के बाद कर्नाटक पुलिस को सूचना दी गई. पुलिस को पूरा विश्वास था कि अब रवि पुजारी को उन्हें सौंप दिया जाएगा. लेकिन रवि पुजारी कर्नाटक पुलिस से भी ज्यादा होशियार निकला.

उस ने पुलिस वालों, कुछ माफियाओं और अपने लोगों के जरिए बुर्कीना फासो में अपने खिलाफ धोखाधड़ी का एक पुराना मामला दर्ज करा दिया. सेनेगल का यह कानून है कि किसी भी आदमी के खिलाफ अगर वहां कोई मामला दर्ज है, तो जब तक उस का निपटारा नहीं हो जाता, उसे किसी भी देश को नहीं सौंपा जा सकता.

रवि पुजारी के मामले में भी यही हुआ. उस के खिलाफ मामला दर्ज होते ही वहां की सरकार ने फैसला आने तक उसे सौंपने से मना कर दिया. इस तरह रवि पुजारी पुलिस के हाथ आतेआते रह गया.

धोखाधड़ी का मामला बहुत गंभीर नहीं था, इसलिए पुलिस को लगा कि यह जल्दी ही निपट जाएगा. परंतु मामला गंभीर न होने की वजह से रवि पुजारी को जमानत मिल गई. जमानत इस शर्त पर मिली थी कि वह सेनेगल छोड़ कर कहीं नहीं जाएगा. जबकि रवि पुजारी को इसी का इंतजार था.

वह जनवरी, 2019 में पकड़ा गया था, फरवरी में जमानत मिली. जमानत इस शर्त पर मिली थी कि वह सेनेगल से बाहर नहीं जाएगा, परंतु जमानत मिलते ही वह गायब हो गया. इस के बाद एक बार फिर उस की तलाश शुरू हुई.

8-9 महीने बाद फिर उस का पता चला. इस बार वह साउथ अफ्रीका में मिला. वहां से भारत लाने में काफी दिक्कतें पेश आतीं, इसलिए भारत के अनुरोध पर साउथ अफ्रीका से गिरफ्तार कर के उसे सेनेगल ले जाया गया.

सेनेगल में धोखाधड़ी का एक मुकदमा उस पर पहले से ही था, दूसरा जमानत तोड़ने का हो गया था. लेकिन दोनों ही मामले ज्यादा गंभीर नहीं थे, इसलिए दोनों मामलों में उसे जल्दी ही सजा सुना दी गई. जिसे पूरा करतेकरते सन 2019 बीत गया.

फरवरी, 2020 में सजा पूरी होते ही सेनेगल सरकार ने उसे भारत की कर्नाटक पुलिस के हवाले कर दिया. उस के बाद कर्नाटक पुलिस

उसे 22 फरवरी, 2020 को भारत ले आई.

कैसे बना छोटा राजन का खास

1993 में जब मुंबई में बम धमाके हुए तो दाऊद इब्राहीम और छोटा राजन के बीच दुश्मनी हो गई. दोनों ने अपनेअपने अलग गैंग बना लिए. दाऊद से अलग होने के बाद छोटा राजन बैंकाक चला गया और वहीं से अपना गैंग चलाने लगा.

रवि पुजारी भी बैंकाक में छोटा राजन से मिलने गया. पहली बार बैंकाक में उस की मुलाकात छोटा राजन से हुई. इस के बाद छोटा राजन से उस की बातचीत होने लगी. जबकि अभी तक वह छोटा राजन के लिए रोहित वर्मा के माध्यम से काम करता था. अब वह उस के लिए सीधे काम करने लगा था.

रवि पुजारी अब छोटा राजन के कहने पर मुंबई में बिल्डरों, नंबर दो का बिजनैस करने वालों और फिल्मी दुनिया से जुड़े लोगों से उगाही करने लगा. इस के बाद रवि पुजारी की छोटा राजन से अच्छी दोस्ती हो गई. वह उसे काफी इज्जत देने लगा. लेकिन अभी भी वह रोहित वर्मा को ज्यादा महत्त्व देता था.

रवि पुजारी के साथ ही एक और शूटर था गुरु साटम. दोनों में अच्छी बनती थी. इन्हें एक बात खटकती थी कि मोटी रकम वसूल कर के तो वे दोनों छोटा राजन को देते हैं, जबकि छोटा राजन उन दोनों के बजाय रोहित वर्मा पर ज्यादा विश्वास ही नहीं करता, बल्कि ज्यादा महत्त्व भी देता है.

इसी बात को ले कर दोनों के मन में छोटा राजन के प्रति खटास पैदा होने लगी. वे दोनों उस से अलग हो कर अपना गैंग बनाना चाहते थे. तभी दाऊद के खास छोटा शकील ने बैंकाक में छोटा राजन पर हमला करा दिया, जिस में वह बालबाल बच गया, लेकिन रोहित वर्मा उस हमले में मारा गया.

इस के बाद हालात काफी बदल गए. छोटा राजन को अपनी जान बचाने के लिए ठिकाना ढूंढना पड़ा, तो रवि पुजारी ने अपना खुद का गैंग बना लिया. गुरु साटम उस के साथ था ही. बैंकाक में ही रह कर उस ने उगाही का काम शुरू भी कर दिया. उस का एक ही लक्ष्य था बहुत बड़ा डौन बनना और खूब पैसा कमाना.

जान सब को प्यारी होती है, लोग डर के मारे रवि पुजारी को पैसे देने लगे. जिस ने उसे पैसे नहीं दिए, उन पर उस ने हमला भी करवाया.

उस समय मुंबई में अंडरवर्ल्ड के 2 ही बड़े गैंग थे. एक दाऊद इब्राहीम का और दूसरा छोटा राजन का. छोटा राजन पर हमले के बाद उस का गैंग थोड़ा कमजोर पड़ गया था. इसी का फायदा उठा कर रवि पुजारी ने अपना गैंग बनाया और लोगों को धमका कर वसूली शुरू कर दी.

इस के लिए उस ने उगाही का अपना अलग ही रास्ता अपनाया. वह उन लोगों की लिस्ट पहले ही बना लेता था, जिन से वसूली करनी होती थी, साथ ही यह भी तय कर लेता था कि किस से किस तरह और कितना पैसा लेना है.

उस ने अपनी उस लिस्ट में कुछ नेताओं, बिल्डरों, फिल्मी दुनिया से जुड़े लोगों, होटल मालिकों के अलावा 2 नंबर का काम करने वाले इस तरह के लोगों को शामिल किया, जिन से उगाही की जा सकती थी.

अपनी इस लिस्ट में उस ने नेताओं और फिल्मी हस्तियों का नाम इसलिए शामिल किया, क्योंकि उन से पैसे भले न मिलें, पर पब्लिसिटी जरूर मिले. वह किसी को भी फोन कर के पैसे देने के लिए कह कर वादा करता था कि अगर वे उसे पैसे देंगे तो वह सुरक्षित तो रहेंगे ही, साथ ही वह उन्हें दूसरे अंडरवर्ल्ड के लोगों से भी बचाएगा.

जान सब को प्यारी होती है, लोग डर के मारे रवि पुजारी को पैसे देने लगे. जिस ने उसे पैसे नहीं दिए, उन पर उस ने हमला भी करवाया. अपनी दहशत फैलाने के लिए उस ने 1990 में चेंबूर में कुकरेजा बिल्डर के मालिक ओमप्रकाश कुकरेजा की हत्या करवा दी थी.

इस के बाद उस ने नवी मुंबई के बिल्डर सुरेंद्र बाधवा पर भी हमला कर के उन की हत्या करानी चाही, पर उन्होंने भाग कर किसी तरह अपनी जान बचा ली थी.

रवि पुजारी ने भारत में रहना ठीक नहीं समझा. क्योंकि वह जानता था कि भारत में रहने पर वह कभी भी पकड़ा जा सकता था. इसलिए वह पहले आस्ट्रेलिया गया और फिर वहां से अफ्रीकी देश सेनेगल पहुंच गया और वहीं पर अपना स्थाई ठिकाना बना लिया.

क्योंकि अभी तक वहां भारत के किसी अन्य डौन की पहुंच नहीं थी. वह वहां से मुंबई पुलिस को फोन कर के कहता था कि पुलिस के वे लोग भी उस के निशाने पर हैं, जो दाऊद की मदद करते हैं.

धीरेधीरे उस ने अपना वसूली का काम बढ़ा दिया. इसी के साथ उस ने रेस्टोरेंट की चेन नमस्ते इंडिया नाम से सेनेगल के शहरों में रेस्टोरेंट खोलने शुरू कर दिए. उसी बीच उस ने अपना नाम ही नहीं बदला, बल्कि एंथोनी फर्नांडीज नाम से अपना पासपोर्ट भी बनवा लिया. अब वह बुर्कीना फासो का निवासी बन गया.

रवि पुजारी लोगों को इंटरनेट के जरिए फोन करता था, जिस की वजह से पता नहीं चल पाता था कि फोन कहां से किया गया है. वह फोन कर के लोगों से पैसे मांगता और कहता कि अगर पैसे नहीं दिए तो जान से जाओगे. वह उन्हें ज्यादा से ज्यादा तीन दिनों का समय देता था.

रवि पुजारी ने कुछ ऐसे लोगों को भी फोन कर के धमकियां दीं, जिन से उसे कुछ मिला

तो नहीं, पर उस की पब्लिसिटी जरूर हुई. ऐसे लोगों में गुजरात के विधायक जिग्नेश मेमानी और केरल के विधायक पी. जार्ज भी शामिल थे. पुलिस का कहना है कि वह ऐसा जानबूझ कर करता था.

पब्लिसिटी का भूखा था रवि

उस ने उत्तर प्रदेश के एक ब्लौक प्रमुख अरुण सिंह को भी फोन कर के 5 करोड़ रुपए मांगे थे. उस ने कहा था कि अगर उन्होंने उसे पैसे नहीं दिए तो वह उन्हें ठोक देगा. अरुण सिंह अपनी सुरक्षा के लिए एसएसपी के पास पहुंच गए. यहां स्पष्ट कर दें कि नाम के आगे पुजारी लगा होने से लोग उसे उत्तर प्रदेश का रहने वाला समझते थे.

फरवरी, 2020 में सेनेगल सरकार ने उसे भारत की कर्नाटक पुलिस के हवाले कर दिया. उस के बाद कर्नाटक पुलिस उसे 22 फरवरी, 2020 को भारत ले आई

रवि पुजारी को अरुण सिंह से मिला तो कुछ नहीं, पर यह धमकी खबर बन गई. उत्तर प्रदेश के अखबारों में भी उस के बारे में खूब छपा. इस के बाद उत्तर प्रदेश के लोग भी उस के बारे में जान गए.

दरअसल उसे मीडिया में अपनी पब्लिसिटी का बहुत शौक था. इसीलिए वह इस तरह के नेताओं, बड़ीबड़ी फिल्मी हस्तियों को फोन कर के धमकाता था.

वह जानता था कि इस तरह के लोगों को फोन करने से उस की बात मीडिया वालों तक पहुंचेगी और मीडिया वाले उस की खबर छापेंगे या टीवी पर दिखाएंगे तो आम लोगों में उस की दहशत फैलेगी और उसे उगाही करने में आसानी रहेगी.

उस ने फिल्मी हस्तियों सलमान खान, शाहरुख खान, अक्षय कुमार, महेश भट्ट, प्रीति जिंटा, नेस वाडिया, करन जौहर, फरहान अख्तर आदि को फोन कर के मोटी रकम मांगी थी. करिश्मा कपूर के पूर्व पति को भी उस ने पैसों के लिए ईमेल भेजा था. उन से उस ने 50 करोड़ रुपए मांगे थे. उस ने महेश भट्ट को धमकी देने के बाद अपने लड़कों को भेज कर उन के घर के बाहर गोलियां भी चलवाई थीं.

प्रीति जिंटा और नेस वाडिया को फोन करने के बाद उस ने प्रैस वालों को फोन कर के सफाई दी थी कि वह प्रीति जिंटा की बड़ी इज्जत करता है, वह बड़ी एक्ट्रैस हैं. उन का तो वह फैन है. उन के साथ भला वह ऐसा कैसे कर सकता है. वह गलत कह रही हैं. इसी तरह नेस वाडिया के बारे में भी उस ने कहा था कि उसे किसी वाडिया का नंबर चाहिए था, इसलिए फोन किया था.

अलग तरह का डौन

रवि पुजारी के बारे में यह भी कहा जाता है कि रंगदारी वसूली की जो प्रोफेशनल रूपरेखा है, वह इसी की देन है. ऐसे तमाम लोग हैं, जिन्होंने उसे मोटी रकम दी है. क्योंकि उसने जिस तरह सेनेगल में रेस्टोरेंट बनवाए हैं, उस से साफ लगता है कि वह इसी तरह की गई उगाही के पैसों से बने हैं.

कहा जाता है कि उस ने गुजरात के एक बिल्डर से करोड़ों रुपए वसूले थे. लेकिन इस तरह पैसे देने वाले जल्दी सामने नहीं आते. इसलिए इस मामले में कोई शिकायत नहीं दर्ज कराई गई थी.

रवि पुजारी के बारे में एक बात यह भी कही जाती है कि अगर कोई दूसरा अंडरवर्ल्ड डौन भी इस तरह पैसों के लिए धमकी देता था तो अपनी पब्लिसिटी के लिए रवि मीडिया वालों को फोन कर के कहता था कि वह धमकी उसी ने दी थी. मुंबई के जानेमाने दीपा बार के मालिक को भी उस ने पैसों के लिए धमकी दी थी. यही नहीं, उस ने दीपा बार के बाहर अपने गुर्गों को भेज कर गोली भी चलवाई थी.

मुंबई के एक जानेमाने वकील हैं माजिद मेमन. सन 2004-5 में उन्हें भी उस ने धमका कर पैसे ही नहीं मांगे, बल्कि उन की हत्या कराने की कोशिश भी की थी. उस का कहना था कि मेमन के संबंध अंडरवर्ल्ड डौन दाऊद इब्राहीम से हैं, इसलिए वह उन्हें जिंदा नहीं छोड़ेगा. वह खुद को हिंदू डौन कहता था. इसीलिए दाऊद इब्राहीम और छोटा शकील भी उस के निशाने पर थे.

13 फरवरी, 2016 को उस ने कट्टरपंथी हुर्रियत नेता सैय्यद अली शाह गिलानी को भी खत्म करने की धमकी दी थी. रवि पुजारी का कहना था कि वह उन सभी लोगों को खत्म कर देना चाहता है, जिन का दाऊद या छोटा शकील से किसी भी तरह का संबंध है. दाऊद इब्राहीम भारत विरोधी है और उस का संबंध आईएसआई से है.

मुबई, कर्नाटक ही नहीं, पूरे देश में दहशत फैलाने वाले रवि पुजारी को आखिर सेनेगल से गिरफ्तार कर लिया गया और 22 फरवरी, 2020 को भारत लाया गया, जहां उसे अदालत में पेश किया गया. उसे रिमांड पर ले कर उस से विस्तारपूर्वक पूछताछ की गई. फिलहाल वह बेंगलुरु की जेल में बंद है. अलगअलग राज्यों की पुलिस उस से पूछताछ करने का प्रयास कर रही है. ●

समयपुर बादली, दिल्ली

सीमा ढाका
दिल्ली की साइलैंट सिंघम

❑ सुनील वर्मा

कुछ देर के लिए जिगर का टुकड़ा दूर हो जाए तो कैसी छटपटाहट होती है, सभी जानते हैं. उस परिवार के लोगों पर क्या बीतती है जिन के बच्चों को कोई चुरा ले जाए या अपहरण हो जाए. उम्मीदों के आंसू हर पल दरवाजे पर टिके रहते हैं. ऐसे ही परिवारों के लिए उम्मीद बनी हैं दिल्ली पुलिस की सीमा ढाका. जिन्होंने एकदो नहीं बल्कि 76 परिवारों की खुशियां लौटाई हैं.

उन के परिवार में त्यौहार का माहौल सा बना दिया है. महज ढाई माह में 76 बच्चों की बरामदगी सीमा के लिए आसान नहीं थी. वो भी अलगअलग राज्यों उत्तर प्रदेश, बिहार, पश्चिम बंगाल, हरियाणा से. अधिकांश मामले भी अपहरण के थे.

दिल्ली के समयपुर बादली थाने में तैनात 33 वर्षीय सीमा ढाका दिनरात बच्चों की तलाश में लगी रहती थीं. उन्होंने 2013 से 2020 के बीच हुए सभी थानों से बच्चों के अपहरण की सूची तैयार की. एफआइआर के जरीए उन परिवारों की तलाश कर उन से बात की, बच्चों के बारे में जानकारी जुटाई.

फिर साइलैंट सिंघम बनीं सीमा ने एकएक कर हर एफआइआर के आधार पर अलगअलग तरीके से बच्चों की बरामदगी के लिए योजनाबद्ध तरीके से काम किया.

सीमा चूंकि दिल्ली पुलिस आयुक्त के गुमशुदा बच्चों को तलाशने के लिए मिशन के तहत काम कर रही थीं. इसलिए उन के वरिष्ठ अधिकारियों का भी उन्हें पूरा सहयोग मिला.

स्टाफ उन के लिए हर समय उपलब्ध रहता था. रात बे रात कई बार दूसरे राज्यों में जाना पड़ता था.

बच्चों के अपहरणकर्ता तक पहुंचने के लिए, जिन राज्यों में बच्चों की लोकेशन मिलती, वहां पहुंच कर उस क्षेत्र की पुलिस के सहयोग से आरोपितों को पकड़ना और उन के चंगुल से बच्चों को छुड़ाने के लिए पूरा जाल बुनना आसान नहीं होता था.

कहीं फोन पर आधारकार्ड अपडेट करने के बहाने जैसी काल कर जाल में फंसाया तो कहीं बगैर वर्दी के पहुंच पुलिस की भूमिका निभाई. पश्चिम बंगाल के डेबरा थानाप्रभारी और उत्तर प्रदेश के कई जिलों में पुलिस का भरपूर सहयोग मिला. यहां आरोपितों के चंगुल को तोड़ कर किशोर को निकालना कड़ी चुनौती था.

सीमा ने चुनौतियों का सामना करना और दूसरों की मदद के लिए हमेशा तत्पर रहना स्कूल के समय से ही सीखा था. मूल रूप से उत्तर प्रदेश के शामली में भाज्जू गांव निवासी सीमा ने पढ़ाई भी वहीं से की. स्कूल और कालेज में सिर्फ पढ़ाई में ही अव्वल नहीं रहीं बल्कि खेलकूद, ज्ञानविज्ञान, वादविवाद की हर प्रतियोगिता में वह सब से आगे रहती थीं. गांव में घरों में इन के कौशल की मिसाल दी जाती तो किसान पिता का सिर फख्र से ऊंचा हो जाता और खुशी से आंखें भर आती थीं.

वर्ष 2006 में सीमा जब दिल्ली पुलिस में भर्ती हुईं तो उस समय उन के आसपास के गांव से भी कोई लड़की दिल्ली पुलिस में नहीं थी. हां, बाद में गांव की अन्य लड़कियों को जरूर प्रेरणा मिली, बाहर पढ़ने के लिए निकलीं और पुलिस में भी भर्ती हुईं.

पति अनीत ढाका भी दिल्ली पुलिस में

SEEMA DHAKA

एएसआई
सीमा ढाका

हेडकांस्टेबल हैं, वह उत्तरी रोहिणी थाने में तैनात हैं. कई बार रात में जब कहीं किसी बच्चे की बरामदगी के लिए अचानक ही मिशन पर निकलना पड़ता था तो अनीत को ले कर ही निकल जाती थीं.

सुबह अपने समय से दोनों ड्यूटी पर भी मुस्तैद हो जाते थे. सीमा को परिवार के अन्य सदस्यों और सासससुर का पूरा सहयोग मिलता. जब काम का बहुत दबाव रहता तो मां जैसी सास थाने तक ब्रेकफास्ट या लंच पहुंचा देतीं. सीमा भी अपनी जिम्मेदारियों का ध्यान रखती थीं. वर्दी और सामाजिक कर्तव्यों के बीच परिवार के लिए कुछ समय जरूर निकालती हैं.

33 वर्षीय सीमा ढाका को दिल्ली पुलिस में हेडकांस्टेबल से पदोन्नत कर एएसआई बनाया गया है. दरअसल दिल्ली पुलिस आयुक्त ने 15 बच्चों को ढूंढने वाले पुलिसकर्मियों को असाधारण कार्य पुरस्कार और 14 वर्ष तक के 50 लापता बच्चों को उन के परिजनों को सौंपने पर पुलिसकर्मियों को समय से पहले पदोन्नति देने की घोषणा की थी.

लेकिन दिल्ली पुलिस में तैनात महिला हेड कांस्टेबल सीमा ढाका ने तो अपनी बहादुरी के दम पर तकरीबन 3 महीने के दौरान 76 बच्चों को तलाश करने में कामयाबी हासिल की. इस उपलब्धि के बाद सीमा ढाका को आउट औफ टर्न प्रमोशन दिया गया है. उन्होंने जिन 76 बच्चों को खोज निकाला उन में 56 की उम्र 14 साल से भी कम है.

हैडकांस्टेबल सीमा ढाका को आउट औफ टर्न प्रमोशन दे कर एएसआई का बैज लगाते दिल्ली पुलिस कमिश्नर एस.एन. श्रीवास्तव

सीमा ढाका मूलरूप से शामली की रहने वाली हैं. शामली वही जिला है, जहां पर कुछ वर्ष पहले लड़कियों के जींस पहनने और मोबाइल फोन रखने जैसी बातों पर कई फरमान जारी हुए थे. पेशे से किसान पिता की संतान सीमा का भाई निजी क्षेत्र में जौब करता है.

सीमा के गांव में उन के रिश्तेदार और परिवार में काफी लोग टीचिंग प्रोफेशन से जुड़े हैं. वो कहती हैं कि मैं बचपन से ही सुनती आ रही थी कि महिलाओं के लिए टीचिंग प्रोफेशन सब से बढ़िया है. यही वजह थी कि उन्होंने भी शिक्षक बनने का निर्णय लिया था, इतना ही नहीं उन्होंने तो ऐसे विषय पढ़ाई के लिए चुने, जिस से शिक्षक बन सकें.

इसी दौरान दिल्ली पुलिस की भर्ती का फार्म भर दिया. संयोग से उन का चयन भी हो गया. इस तरह 2006 से वह दिल्ली पुलिस से जुड़ गईं.

सीमा का कहना है कि पढ़ाई के प्रति लगाव और जुनून ही था कि गांव से कालेज की दूरी करीब 6 किलोमीटर थी, लेकिन साइकिल से रोजाना आतीजाती थी. सीमा के पति अनीत ढाका बड़ौत के रहने वाले हैं. आउट औफ टर्न प्रमोशन पाने वालीं सीमा ढाका की उपलब्धि पर उत्तर प्रदेश के 2-2 जिलों में जश्न का माहौल है.

सीमा बेहद भावुक महिला हैं. कहा जाता है कि पुलिस काफी सख्त होती है, लेकिन सीमा को देख कर ऐसा नहीं लगता. 8 साल के बच्चे की मां सीमा की मानें तो जब भी बच्चों की गुमशुदगी की बात आती थी तो गुस्सा आता था.

यही वजह थी कि पुलिस टीम के साथ बैठक में उन्होंने खुद गुमशुदा बच्चों को तलाशने वाली सेल में काम करने की इच्छा जाहिर की थी. अधिकारियों ने भी सीमा ढाका की कमिटमेंट पर भरोसा किया और नतीजा सामने है. अब महकमा अपनी हेड कांस्टेबल सीमा ढाका पर गर्व कर रहा है.

समयपुर बादली पुलिस थाने में तैनात महिला हेड कांस्टेबल सीमा ढाका को खुद दिल्ली पुलिस कमिश्नर एसएन श्रीवास्तव ने आउट आफ टर्न प्रमोशन देते हुए एएसआई का बैज लगाया. आउट औफ टर्न प्रमोशन पाने वाली सीमा दिल्ली पुलिस की पहली महिला कर्मचारी बन गई.

सीमा ढाका ने दिल्ली, पश्चिम बंगाल, उत्तर प्रदेश, बिहार, हरियाणा और पंजाब के बच्चों को बचाया है. उन के लिए हर बच्चे को अपहर्ताओं के चंगुल से छुड़ाना एक नई तरह की चुनौती से कम नहीं था.

पिछले साल अक्तूबर में पश्चिम बंगाल से एक नाबालिग को छुड़ाना था. पुलिस दल ने नावों में यात्रा की और बच्चे को खोजने के लिए बाढ़ के दौरान दो नदियों को पार किया. लड़के की मां ने साल भर पहले शिकायत दर्ज की थी, लेकिन बाद में अपना पता और मोबाइल नंबर बदल दिया था.

सीमा उसे ट्रेस नहीं कर सकीं. लेकिन वे जानती थीं कि वे पश्चिम बंगाल से ही हैं. तलाशी अभियान शुरू किया गया. वे एक छोटे से गांव पहुंचीं, जहां बाढ़ के दौरान 2 नदियों को पार किया. किसी तरह वह बच्चे को उस के रिश्तेदार के पास से छुड़ाने में कामयाब रहीं. ●

> सीमा ढाका पुलिस में जरूर हैं, लेकिन मां भी हैं. उन की संवेदनशीलता और बहादुरी ही उन्हें खास बनाती है, जिस के चलते उन्होंने 76 ऐसे बच्चों को उन के परिवारों तक पहुंचाया जो अपने जिगर के टुकड़ों के लिए तरस रहे थे. सीमा का यह सफर कतई...

कांदिवली, मुंबई

छायांकनः मॉडलिंग

कलेजे की कील

❑ अशोक शर्मा

बेटे की शादी में दहेज न मिलने की जो कील कमल राय के मन में चुभी थी, उसे निकालने के लिए उसे 3 साल इंतजार करना पड़ा. उस ने अपनी संतुष्टि के लिए कील तो निकाल दी, लेकिन...

मृतका नंदिनी
(फाइल फोटो)

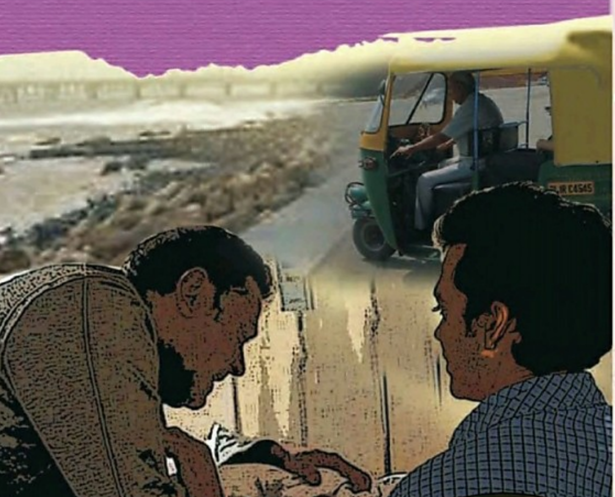

पुत्रवधू की हत्या का
आरोपी ससुर कमल राय

बिहार के मधुबनी जिले की गौरीगंज तालुका के गांव लालापुर के रहने वाले 50 वर्षीय सुधीर ठाकुर करीब 22-23 साल पहले मुंबई के उपनगर अंधेरी में आ बसे थे. उन्होंने यहीं कामधंधा शुरू कर दिया था. परिवार गांव में रहता था, जिस में उन की पत्नी के अलावा एक जवान बेटी नंदिनी और 2 बेटे थे.

अपनी कमाई का ज्यादातर हिस्सा वह गांव परिवार भेज दिया करते थे. परिवार खुशहाल था. गांव में मानसम्मान की कमी नहीं थी. उन के मानसम्मान को धक्का तब लगा जब उन की बेटी नंदिनी ने गांव के ही एक अलग बिरादरी के लड़के से लव मैरिज कर ली और मुंबई आ कर रहने लगी. घरपरिवार की इज्जत के मद्देनजर उन्होंने अपना पूरा परिवार मुंबई बुला लिया था.

यह सच है कि वक्त बड़े से बड़ा घाव भर देता है. विवाह भले ही अंतरजातीय हो, अगर बेटी सुखी हो तो परिवार उस का बड़े से बड़ा गुनाह माफ कर देता है. नंदिनी के साथ भी यही हुआ. परिवार ने उसे माफ कर गले लगा लिया. जबतब उस से फोन पर बात होने लगी.

यह सिलसिला 2 सालों से चलता आ रहा था. लेकिन फिर अचानक नंदिनी का फोन आना बंद हो गया. 7 दिनों तक लगातार फोन करने के बाद भी जब नंदिनी से उन का संपर्क नहीं हो पाया तो पूरा परिवार किसी अनहोनी के डर से परेशान हो उठा.

नंदिनी ने अपने ससुराल वालों के विरुद्ध जा कर पंकज राय से अंतरजातीय विवाह किया था. जिस की वजह से वह अपने ससुर के दिल में जगह नहीं बना पाई थी. यह बात पूरे परिवार को मालूम थी.

नंदिनी के ससुर कमल राय उसी गांव के रहने वाले थे, जिस गांव की नंदिनी थी. वह अपने पूरे परिवार के साथ मुंबई में कांदिवली (पूर्व) के भाजीपाड़ा मार्केट पोयसर में रहते थे और कांदिवली (पश्चिम) से डोखरा खरीद कर मुंबई के कई इलाकों की दुकानों में सप्लाई करते थे.

बेटा पंकज राय कांदिवली की ही ड्राईफ्रूट्स की एक दुकान पर सेल्समैन था. कुल मिला कर परिवार की आर्थिक स्थिति ठीकठाक थी.

11 दिसंबर, 2020 को करीब 10 बजे सुधीर ठाकुर ने कांदिवली, समतानगर पुलिस थाने आ कर थानाप्रभारी राजू कसबे से मुलाकात की. उन्होंने उन्हें अपनी बेटी नंदिनी के बारे में सारी बातें बता कर उस की गुमशुदगी की शिकायत दर्ज करवा दी. उन्होंने नंदिनी के ससुराल वालों पर संदेह जाहिर किया.

सुधीर ने बताया कि उन की बेटी नंदिनी का 4 दिसंबर, 2020 से फोन बंद है. तब से वह उस से लगातार संपर्क करने की कोशिश कर रहे हैं. लेकिन उन्हें उस के बारे में कोई जानकारी नहीं मिल रही है. जब मैं नंदिनी की ससुराल गया तो पता चला उस की ससुराल के सभी लोग गांव गए हैं. घर में ताला लटक रहा है.

जब आसपास के लोगों से पूछताछ की तो उन्हें नंदिनी के बारे में कोई जानकारी नहीं थी. बेटी कहां है, किस स्थिति में है, आप उस का पता लगा कर मेरी मदद करें.

नंदिनी की संदिग्ध गुमशुदगी का मामला दर्ज होते ही राजू कसबे ने इस की जानकारी थानाप्रभारी अपने वरिष्ठ अधिकारियों डीसीपी डा. स्वामी, एसीपी जाधव को देने के बाद जांच की जिम्मेदारी इंसपेक्टर रविंद्र पडवल को सौंप दी. साथ ही उन के सहयोग के लिए असिस्टैंट इंसपेक्टर सीधाराम मेहेत्रे, विजय ससकर, एसआई खर्डे, कांस्टेबल किरन सालुंके और पाटने की एक टीम भी बना दी.

चूंकि मामला संदेहपूर्ण था, इसलिए इंसपेक्टर रविंद्र पडवल ने अपने सहायकों के साथ तेजी से जांच शुरू कर दी. उन्होंने नंदिनी के ससुराल वालों को बिहार से बुला कर पूछताछ शुरू की.

नंदिनी के ससुर कमल राय ने नंदिनी की गुमशुदगी के बारे में अनभिज्ञता जाहिर करते

हुए कहा कि वह तो नंदिनी को सकुशल घर पर छोड़ कर गांव गए थे.

वह कहां चली गई, इस बारे में उन्हें कोई जानकारी नहीं है. वैसे भी वह एक कैरेक्टरलैस लड़की थी, उस का चालचलन ठीक नहीं था. अपने किसी यार के साथ भाग गई होगी.

हालांकि नंदिनी का ससुर कमल राय अपने आप को नंदिनी के विषय में पाकसाफ बता रहा था, लेकिन इंसपेक्टर रविंद्र पडवल और उन के सहायकों को उस के कथन पर विश्वास नहीं था. नंदिनी के मामले की जांच की कोई और रूपरेखा तैयार कर के वह उस की तह में जाने की कोशिश करते, उस के पहले ही उन्हें जो जानकारी मिली उस से उन की सोच बदल गई.

पुलिस हिरासत में नंदिनी की हत्या के आरोपी कमल राय, कृष्णा सिंह और प्रदीप गुप्ता

24 दिसंबर, 2020 को लगभग 8 बजे पुलिस कंट्रोलरूम से जो खबर प्रसारित हुई, उसे समतानगर पुलिस थाना पुलिस ने भी सुना. मुंबई उपनगर मलाड मालोनी थाने की पुलिस को मलाड अक्सा बीच समुद्र के किनारे एक युवती की लाश मिली थी, जिसे एक सफेद चादर में लपेटने के बाद बोरी में भर कर किसी नाले में फेंका गया था, जो बह कर समुद्र के किनारे पहुंच गई थी.

शव बुरी तरह से सड़ गया था. उम्र और हुलिया कुछ वैसा ही था, जैसा कि नंदिनी की शिकायत में दर्ज था.

मलाड अक्सा बीच पिकनिक पौइंट है. वहां सुबहसुबह घूमने गए किसी व्यक्ति ने इस मामले की जानकारी मलाड मलोनी पुलिस थाने को दे दी थी, जिस समय मलोनी पुलिस टीम घटनास्थल पर पहुंची, तब तक वहां काफी लोगों की भीड़ एकत्र हो गई थी. पुलिस ने उन्हें हटा कर जांच शुरू कर दी.

शव की स्थिति देख कर पुलिस जांच टीम और वरिष्ठ अधिकारियों को यकीन हो गया था कि उस महिला का शव कई दिनों से पानी में पड़े होने की वजह से बुरी तरह विकृत हो गया है, जिस की शिनाख्त करना मुश्किल था. शव कहीं दूर से बह कर आया था.

मलाड मलोनी पुलिस ने आवश्यक कारगवाई करने के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए बोरीवली के भगवती अस्पताल भेज दिया. शव के पास कोई ऐसी चीज नहीं मिली थी, जिस से उस की शिनाख्त हो पाती और जांच को कोई दिशा मिलती.

पुलिस के पास इस मामले को सुलझाने का एक ही रास्ता था, जिसे पुलिस हमेशा अपनाती है, उन्होंने भी वही किया. यह खबर पुलिस कंट्रोलरूम से वायरलैस द्वारा शहर के सभी थानों में प्रसारित करा दी और यह जानने की कोशिश की कि पिछले हफ्ते मृतका की किसी पुलिस थाने में गुमशुदगी तो दर्ज नहीं हुई है.

इस से मलाड़ मलोनी पुलिस की समस्याओं का हल तो निकला ही नंदिनी की गुमशुदगी का रहस्य भी खुल गया.

सूचना मिलते ही समता नगर पुलिस थाने की जांच टीम मलाड़ मलोनी पुलिस थाने के अधिकारियों से संपर्क कर नंदिनी के पिता को शव की पहचान के लिए मलाड़ मलोनी पुलिस थाने ले गए, जहां से उन्हें बोरीवली के भगवती अस्पताल ले जाया गया.

अस्पताल में नंदिनी के पिता शव को देख कर अपनी छाती पीटपीट कर रोने लगे. साथ गई पुलिस टीम ने राहत की सांस ली और मामले की जांच तेजी से शुरू कर दी. अभी तक जहां नंदिनी का ससुर कमल राय सिर्फ संदेह के घेरे में था, अब जांच के रडार पर आ गया. इसलिए बिना किसी विलंब के समतानगर पुलिस ने उसे हिरासत में ले लिया.

पुलिस के वरिष्ठ अधिकारियों ने दोनों पुलिस थानों के अधिकारियों को इस मामले की जांच समानांतर रूप से करने का आदेश दिया.

दहेजलोभी ससुर की करतूत

अब तक नंदिनी की हत्या से अनजान बने उस के ससुर कमल राय पर जब पुलिस का शिकंजा कसा तो उस ने घुटने टेक दिए. पुलिस के सवालों की बौछार के आगे बचने का कोई रास्ता न पा कर उस ने अपना गुनाह स्वीकार करते हुए नंदिनी हत्याकांड और उस में शामिल अपने दोनों साथियों के नाम बता दिए.

55 वर्षीय कमल राय का अपने गांव और अपने समाज में अहम स्थान था, काफी इज्जत और मानसम्मान था. उस के परिवार में पत्नी के अलावा बेटा पंकज राय था. पंकज राय उन की एकलौती संतान था, जिसे उन का पूरा परिवार प्यार करता था.

क्योंकि बिहार में अच्छे घरों के लड़कों की शादी के लिए अच्छी मांग होती है. शादी में उन्हें लड़की वालों की तरफ से काफी मानसम्मान और लाखों रुपए का दानदहेज भी दिया जाता है. मगर कमल राय का यह सपना पूरा नहीं हुआ. उन के बेटे पंकज राय ने नंदिनी ठाकुर से लवमैरिज कर कमल राय के सारे सपने तोड़ दिए.

22 वर्षीय नंदिनी ठाकुर देखने में स्वस्थ और सुंदर थी, सौम्य स्वभाव की. उस का परिवार उसी गांव में रहता था, जिस गांव में

कमल राय का परिवार रहता था. ब्राह्मण होने के नाते उस के परिवार की भी गांव में खूब इज्जत थी.

23 वर्षीय पंकज राय भरीपूरी कदकाठी का युवक होने के साथसाथ तेजतर्रार और महत्त्वाकांक्षी युवक था. नंदिनी और पंकज की दोस्ती उस समय शुरू हुई थी, जब दोनों पढ़ते थे, स्कूल साथसाथ जाते और आते थे. मौका मिलने पर दोनों साथ खेलतेकूदते थे.

पढ़ाई में एक साल सीनियर होने के नाते पंकज नंदिनी की मदद किया करता था. कभी पंकज तो कभी नंदिनी अपनी पढ़ाई को ले कर एकदूसरे के घर भी आयाजाया करते थे. दोनों कम उम्र थे, इसलिए उन के घर आनेजाने पर कोई रोकटोक नहीं थी और न इस पर किसी को कोई ऐतराज था.

लेकिन जैसेजैसे उन की उम्र बढ़ी, वैसेवैसे उन की सोच में बदलाव आने लगा था. उन का मन पढ़ाईलिखाई में कम प्यारमोहब्बत की तरफ अधिक खिंचने लगा. नतीजा यह हुआ कि यह बात कमल राय तक पहुंच गई. उस ने बेटे को मुंबई बुला कर नौकरी पर लगा दिया.

पंकज के मुंबई जाने के बाद नंदिनी भी पढ़ाई छोड़ कर घर बैठ गई और घर के कामों में मां का हाथ बंटाने लगा. लेकिन इस के बावजूद पंकज और नंदिनी के दिलों की नजदीकियां कम नहीं हुईं.

दोनों का इश्क मोबाइल के जरिए फलताफूलता और जवान होता रहा. दोनों एकदूसरे के दिल में कुछ इस तरह उतर गए थे कि एकदूसरे को अपना जीवनसाथी बनाने का फैसला कर लिया था.

जब यह बात उन के परिवार वालों तक पहुंची तो उन्होंने इस पर ऐतराज जताया.

मगर इस का उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा. जैसेजैसे समय बीतता रहा, वैसेवैसे उन का प्यार और परिपक्व होता रहा. मौका देख कर कमल राय ने जब पंकज को समझाया तो उस ने बिना किसी डर के अपने मन की बात पिता से कह दी कि वह नंदिनी से प्यार करता है और उसी से शादी करेगा.

''लेकिन यह संभव नहीं है.'' पिता कमल राय ने गंभीर हो कर कहा.

''क्यों पापा, आखिरी नंदिनी में क्या बुराई है. अच्छीखासी होने के साथसाथ सुंदर है. वह भी मुझे उतना ही प्यार करती है जितना कि मैं. अगर मेरी शादी उस से नहीं हुई तो मैं किसी और से शादी नहीं करूंगा.''

पंकज अटल रहा अपने फैसले पर

पंकज के इस फैसले से कमल राय को लाखों के दहेज का ख्वाब टूटता नजर आया. उस ने बेटे को आड़े हाथों लेते हुए कहा, ''प्यार तो तुम्हें वह लड़की भी करेगी जिसे मैं ने पसंद किया है. लड़की भी सुंदर सभ्य है. उस से शादी करोगे तो मानसम्मान तो बढ़ेगा ही, साथ में अच्छाखासा दानदहेज भी मिलेगा. समझे.''

जांच अधिकारी इंसपेक्टर रविंद्र पडवल

''कुछ भी हो, मुझे नंदिनी पसंद है. मैं उसी से शादी करूंगा.'' पंकज ने साफसाफ पिता का विरोध किया.

उस की बात सुन कर कमल राय गुस्से में बोले, ''यह ठीक नहीं है. वह हमारे गांव के ब्राह्मण की बेटी है. उस से तुम शादी करोगे तो हमारी और उस की समाज में क्या इज्जत रहेगी? बदनामी होगी अलग से. इसलिए तुम्हें उस लड़की को भूलना होगा.''

यही बात नंदिनी के परिवार वालों ने भी उस से कही और उसे समझाया. लेकिन उस पर कोई असर नहीं हुआ. और अपने परिवार वालों के खिलाफ जा कर दोनों ने 2017 में लवमैरिज कर ली. अब नंदिनी पंकज राय बन कर पंकज के परिवार में शामिल हो गई. शादी के बाद पंकज नंदिनी को मुंबई ले आया था.

समय के साथ नंदिनी के परिवार वालों ने उसे माफ कर के अपना लिया. पंकज ने भी अपने परिवार वालों को मना लिया था. मगर पंकज के पिता कमल ने उन्हें माफ नहीं किया था. उस के मन में प्रतिष्ठा को लेकर जो कील चुभी थी, वह उसे निकाल फेंकने का मौका खोज रहा था.

और यह मौका उसे 3 साल बाद मिला. लौकडाउन में जब पंकज अपनी मां को ले कर छठ पूजा में बिहार गया तो चाहते हुए भी वह नंदिनी को अपने साथ नहीं ले जा सका. उस ने नंदिनी को अपने पिता के पास छोड़ दिया, ताकि उसे खाने वगैरह की परेशानी न हो.

खुद को घर में अकेला देख कमल राय ने नंदिनी के प्रति एक खतरनाक फैसला ले लिया. इस फैसले में उस ने अपने दोस्तों कृष्णा सिंह और प्रदीप गुप्ता को डेढ़ लाख रुपए का लालच दे कर अपनी योजना में शामिल कर लिया. कृष्णा और प्रदीप पेशे से आटो ड्राइवर थे औरउस के दोस्त.

कृष्णा सिंह और प्रदीप गुप्ता उसी बस्ती में रहते थे, जिस में कमल राय रहता था. कमल राय उन के आटो से अकसर अपना माल कस्टमरों तक पहुंचाता था. दोनों को अपनी योजना में शामिल करने के लिए कमल ने कृष्णा सिंह को 68 हजार रुपए काम होने के पहले दे दिए. बाकी काम होने पर देने का वादा किया.

4 दिसंबर, 2020 की रात कमल राय ने मौका देख कर पहले से ही उस रूम का लौक खराब कर दिया, जिस में नंदिनी सोती थी. उस के बाद कमल राय ने अपने दोनों दोस्तों के साथ रात 12 बजे तकिए से नंदिनी का मुंह दबा कर उस की हत्या कर दी और बोरी व चादर में लपेट कर उस के शव को आटो से ले जा कर भाजी वाड़व के नाले में फेंक आए. नंदिनी के शव को ठिकाने लगाने के बाद कमल और प्रदीप गुप्ता अपनेअपने गांव चले गए.

कमल राय के बयान और निशानदेही पर प्रदीप गुप्ता को उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर जिले से तो कृष्णा सिंह को उस के घर पोयसर मुंबई से गिरफ्तार कर लिया गया.

उन से विस्तार से पूछताछ करने केबाद उन का अपराध भादंवि की धारा 302, 201, 34, 120बी के अंतर्गत दर्ज कर किया गया. आगे की जांच के लिए उन्हें मलाड़ मलोनी पुलिस थाने के अधिकारियों को सौंप दिया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया. ●

रिश्तों से बड़ी मोहब्बत

❑ सुरेशचंद्र मिश्र

छायांकन: मौडलिंग

विकास और आरती एक ही कुनबे के भाईबहन थे, इस के बावजूद वे रिश्ते को दरकिनार करते हुए शादी करना चाहते थे. लेकिन दोनों के घर वालों ने उन की मांग सिरे से ठुकरा दी तो...

कानपुर शहर से करीब 40 किलोमीटर दूर पश्चिम में थाना बिल्हौर के तहत एक गांव है अलौलापुर. ज्ञान सिंह कमल इसी गांव के रहने वाले थे. उन के परिवार में पत्नी गीता कमल के अलावा 2 बेटे विकास, आकाश तथा 2 बेटियां शोभा व विभा थीं. ज्ञान सिंह कमल किसान थे. उन के पास 10 बीघा उपजाऊ भूमि थी, जिस में अच्छी पैदावार होती थी. कृषि उपज से ही वह परिवार का भरणपोषण करते थे.

ज्ञान सिंह का बेटा विकास अपने भाईबहनों में सब से बड़ा था. इंटरमीडिएट पास करने के बाद उस ने नौकरी पाने के लिए दौड़धूप की. लेकिन जब नौकरी नहीं मिली तो वह पिता के कृषि कार्य में हाथ बंटाने लगा. उस ने ट्रैक्टर चलाना सीख लिया था. ट्रैक्टर से वह अपनी खेती तो करता ही था, दूसरे काम कर वह अतिरिक्त आमदनी भी

मोहब्बत की खातिर मौत को गले लगाने वाले प्रेमीप्रेमिका विकास और आरती (फाइल फोटो)

करता था. विकास किसानी का काम जरूर करता था, लेकिन ठाटबाट से रहता था.

ज्ञान सिंह के घर से चंद कदम दूर सुरेश कमल का घर था. उस के परिवार में पत्नी ममता के अलावा 2 बेटियां आरती, प्रीति तथा एक बेटा नंदू था. सुरेश और ज्ञान सिंह एक ही कुनबे के थे और रिश्ते में भाईभाई थे. सुरेश भी किसान था. उस की आर्थिक स्थिति कमजोर थी. लेकिन दोनों में खूब पटती थी.

दोनों का एकदूसरे के घर आनाजाना लगा रहता था और सुखदुख में एकदूसरे का साथ देते थे. दोनों परिवारों के बच्चों का बचपन भी साथसाथ खेलते बीता था.

विकास को बचपन से ही चाचा सुरेश कमल की बेटी आरती से बहुत लगाव था. आरती भी विकास के साथ ज्यादा खेलती थी. दोनों के इस लगाव पर घर वालों ने कभी ध्यान नहीं दिया, क्योंकि बच्चे अकसर इसी तरह खेलते हैं.

बचपन के दिन गुजर जाने के बाद विकास और आरती ने जवानी की दहलीज पर कदम रखा तो उन के बीच का लगाव पहले की ही तरह बना रहा. लेकिन उन के नजरिए में बदलाव जरूर आ गया था.

अब उन की चंचलता खामोशी के साथ दूसरा मुकाम अख्तियार कर चुकी थी. उन के दिल में प्यार के बीज अंकुरित हो चुके थे. इसलिए अब जब भी उन्हें मौका मिलता, वे प्यार भरी बातें करते.

आरती की आंखों के सामने जब भी विकास होता, वह उसी को देखा करती. उस पल उस के चेहरे पर जो खुशी होती थी, कोई भी देख कर भांप सकता था कि दोनों के बीच जरूर कुछ चल रहा है.

विकास को भी उस का इस तरह से देखना भाता था, क्योंकि उस का दिल भी तो आरती के प्यार का मरीज था. दोनों की आंखों में एकदूसरे के लिए प्यार साफ झलकता था. वे इस बात को महसूस भी करते थे. लेकिन दिल की बात एकदूसरे से कह नहीं पा रहे थे.

प्यार का किया इजहार

एक दिन विकास आरती के घर पहुंचा, तो उस समय वह घर में अकेली थी. आरती को देखते ही उस का दिल तेजी से धड़क उठा. उसे लगा कि दिल की बात कहने का उस के लिए यह सब से अच्छा मौका है. आरती उसे कमरे में बिठा कर फटाफट 2 कप चाय बना लाई. चाय की चुस्कियों के बीच दोनों बातें करने लगे. अचानक विकास गंभीर हो कर बोला, ''आरती मुझे तुम से एक बात कहनी है.''

''कहो, क्या कहना चाहते हो?'' आरती भी गंभीर हो गई.

''आरती, मैं तुम से प्यार करता हूं. यह प्यार आज का नहीं, बरसों का है, जो आज किसी तरह हिम्मत जुटा कर कह पाया हूं. ये आंखें सिर्फ तुम्हें देखना पसंद करती हैं. मैं तुम्हारे प्यार में इतना दीवाना हो चुका हूं कि अगर तुम ने मेरा प्यार स्वीकार नहीं किया, तो मैं पागल हो जाऊंगा.''

आखिर विकास ने दिल की बात कह ही दी, जिसे सुन कर आरती का चेहरा शरम से लाल हो गया, पलकें झुक गईं. होंठों ने कुछ कहना चाहा, लेकिन जुबान ने साथ नहीं दिया. आरती की हालत देख कर विकास बोला, ''कुछ तो कहो आरती, क्या मैं तुम से प्यार करने लायक नहीं हूं.''

''कहना जरूरी है क्या? तुम खुद को दीवाना कहते हो और मेरी आंखों में बसी चाहत को नहीं देख सकते. जो हाल तुम्हारा है, वही मेरा भी है. मैं ने भी तुम्हें बहुत पहले से दिल में बसा लिया है. डरती थी कि कहीं यह मेरा एकतरफा प्यार न हो.'' आरती ने भी चाहत का इजहार कर दिया.

आरती की बात सुन कर विकास खुशी से झूम उठा. उसे लगा कि सारी दुनिया की दौलत, आरती के रूप में उस की झोली में आ कर समा गई है.

दोनों के बीच प्यार का इजहार हो गया तो फिर एकांत में भी मिलनेजुलने का सिलसिला शुरू हो गया. दोनों गांव के बाहर सुनसान जगह पर मिलने लगे. वे एकदूसरे पर जम कर प्यार बरसाते और हमेशा एकदूसरे का साथ निभाने की कसमें खाते. जैसेजैसे समय बीतता गया, दोनों की चाहत बढ़ती और प्रगाढ़ होती गई.

घर वालों को उन पर किसी तरह का शक इसलिए नहीं हुआ, क्योंकि दोनों पारिवारिक रिश्ते में भाईबहन थे. इसी रिश्ते की आड़ में वे घर वालों को बेवकूफ बनाते रहे. उन के बीच जो प्यार उपजा था, वह भाईबहन के रिश्ते को भूल गया था. मर्यादाओं में रहते हुए वे जीवन के हसीन ख्वाब देखने लगे थे. लेकिन उन के

मृतक विकास की मां गीता

संबंध ज्यादा दिनों तक छिपे न रह सके. एक दिन आरती की मां ममता ने उस की और विकास की बातें सुन लीं. इस के बाद वह आरती और विकास के ज्यादा मिलने का मतलब समझ गई. शाम को उस ने इस बारे में बेटी से पूछा तो उस ने मुसकराते हुए कह दिया कि उस का विकास से इस तरह का कोई संबंध नहीं है.

ममता ने भी जमाना देखा था. वह समझ गई कि बेटी झूठ बोल रही है. इसलिए उस ने उस से सख्ती से पूछताछ की तो आरती को सच उगलना ही पड़ा. उस ने डरतेडरते कह दिया कि वह विकास से प्यार करती है.

इस के बाद ममता का गुस्सा फट पड़ा. वह आरती की पिटाई करते हुए बोली, ''कुलच्छिनी, तुझे शर्म नहीं आई. जानती है, वह तेरा क्या लगता है? कम से कम अपने रिश्ते का तो लिहाज किया होता.''

''मम्मी, वह कोई सगा भाई थोड़े ही है और जब प्यार होता है, तो वह रिश्ता नहीं देखता. हम दोनों ही एकदूसरे को चाहते हैं.'' आरती ने रोते हुए कहा.

''अच्छा, बहुत जुबान चल रही है, अभी खींचती हूं तेरी जुबान,'' कहते हुए ममता ने उस पर लात और थप्पड़ों की बरसात कर दी. लेकिन आरती यही कहती रही कि चाहे वह उसे कितना भी मार ले, वह विकास को नहीं छोड़ेगी.

आरती की पिटाई करतेकरते जब ममता हांफने लगी तो एक ओर बैठ कर उसे भलाबुरा कहने लगी. साथ ही उस ने धमकी दी, ''आने दे तेरे बाप को, वही तेरी ठीक से खबर लेंगे. बहुत उड़ने लगी है न तू. अब तेरे पर कतरने ही पड़ेंगे.''

आरती सुबकती रही. शाम को जब सुरेश आया तो ममता ने सारी बात उसे बता दी. सुरेश को गुस्सा तो बहुत आया, लेकिन उस ने समझदारी से काम लिया. उस ने उसे दूसरे कमरे में ले जा कर समझाया, उसे भाईबहन के रिश्ते की गहराई बताते हुए कहा कि उस के इस कदम से गांव में रहना दूभर हो जाएगा. किसी के सामने वह सिर तक नहीं उठा सकेगा.

पिता के समझाने का हुआ असर

पिता की बातें आरती को अच्छी तो लगीं, लेकिन उस के सामने समस्या यह थी कि वह विकास से उस के साथ जीनेमरने का वादा कर चुकी थी. अब उस के सामने एक ओर पिता की इज्जत थी तो दूसरी ओर वह प्यार था, जिस के लिए वह कुछ भी करने का वादा कर चुकी थी.

अंत में वह इस नतीजे पर पहुंची कि वह घर वालों की इज्जत के लिए अपने प्यार को एक सपने की तरह भुलाने की कोशिश करेगी. इसलिए उस ने पिता से वादा कर लिया कि अब वह विकास से नहीं मिलेगी. यह बात करीब एक साल पहले की है.

आरती की पिटाई वाली बात विकास को पता चल चुकी थी. उस के मन में इस बात का डर था कि कहीं चाचा सुरेश यह शिकायत उस की मां से न कर दें. इसी डर की वजह से उस ने आरती के घर जाना बंद कर दिया. दूसरी ओर आरती उसे भुलाने की कोशिश करने लगी थी. इसलिए उस ने भी विकास की देहरी नहीं लांघी.

लेकिन यह सिलसिला ज्यादा दिनों तक कायम नहीं रह सका. चूंकि दोनों लंबे समय से एकदूसरे को प्यार करते आ रहे थे, इसलिए उन की यादें जेहन में घूम रही थीं, जो उन्हें विचलित कर रही थीं. विकास का मन आरती से मिलने को विचलित था. लेकिन समस्या यह थी कि वह उस से कैसे मिले?

आरती का व्यवहार देख कर उस के घर वालों ने यही समझा कि वह विकास को भूल चुकी है. इसलिए उन्होंने उस पर निगरानी बंद कर दी. एक दिन आरती घर में अकेली थी तो विकास उस से मिलने पहुंच गया. अचानक घर में विकास को देख कर आरती

रोतेबिलखते विकास और आरती के घर वाले

बोली, ''तुम यहां क्यों आ गए? कोई आ गया तो मुसीबत खड़ी हो जाएगी.''

''मैं तुम से सिर्फ यह पूछने आया हूं कि तुम मुझे इतनी जल्दी भूल कैसे गई?'' विकास ने पूछा.

''भूली नही हूं, मजबूरी है. मेरी जगह तुम होते तो तुम भी यही करते.'' आरती ने कहा.

आरती की इस बात से विकास खुश हो गया और उस ने आरती को झट से अपने गले लगा कर कहा, ''तुम चिंता मत करो, मैं मुलाकात का कोई न कोई रास्ता निकाल लूंगा.''

प्रेमी से मिलने के बाद आरती अपने पिता से किए गए वादे को भूल गई. वह भी विकास से खूब बातें करना चाहती थी. लेकिन उसे इस बात का डर था कि कहीं उस की मां या पिता न आ जाएं. इसलिए उस ने विकास से कहा, ''विकास, इस से पहले कि यहां कोई आ जाए, तुम चले जाओ.''

आरती की पिटाई वाली बात विकास को पता चल चुकी थी. उस के मन में इस बात का डर था कि कहीं चाचा सुरेश यह शिकायत उस की मां से न कर दें. इसी डर की वजह से उस ने आरती के घर जाना बंद कर दिया. दूसरी ओर आरती उसे भुलाने की कोशिश करने लगी थी.

विकास वहां से चला गया. प्रेमिका से मिल कर उसे बड़ा सुकून मिला था. 2-3 दिन बाद उस ने एक मोबाइल फोन खरीद कर आरती को दे दिया. इस के बाद आरती चोरीछिपे विकास से बातें करने लगी. इस से उन के मिलने में आसानी हो गई.

इस तरह उन का प्यार पहले की तरह ही चलने लगा. लेकिन उन का चोरीछिपे मिलनेमिलाने का यह खेल ज्यादा दिनों तक नहीं चल सका.

एक रात अचानक आरती की मां ममता की आंखें खुलीं तो उस ने आरती को चारपाई से गायब पाया. बेटी की तलाश में वह छत पर पहुंची तो वह वहां उसे कुरसी पर बैठी देख कर चौंकी.

मां की आहट पाते ही आरती ने प्रेमी से चल रही बातचीत बंद कर दी और मोबाइल फोन छिपाने लगी. ममता ने उसे कुछ छिपाते देख तो लिया था, लेकिन उसे यह पता नहीं था कि उस ने क्या छिपाया है. उस ने आरती से इतनी रात को छत पर अकेली बैठने की वजह पूछी, तो वह सकपका गई. तब उस ने पूछा, ''तूने अभी क्या छिपाया है, दिखा?''

''कुछ नहीं छिपाया है मम्मी.'' आरती घबरा कर बोली.

ममता ने कोई चीज रखते हुए देखा था. बेटी की बात सुन कर ममता को लगा कि वह झूठ बोल रही है. उस ने आरती के सीने पर हाथ डाला, तो वहां मोबाइल देख कर पूछा, ''यह किस का मोबाइल है और किस से बातें कर रही थी?''

पत्रिकाओं
को दोस्त बनाएं
जिंदगी
को हसीन बनाएं
गृहशोभा
सरस सलिल
मुक्ता
सरिता
औन लाइन पढ़ें sarita.in
मनोहर कहानियां
सत्यकथा
चंपक
फार्म फूड
प्याज की व्यावसायिक खेती
दिल्ली प्रैस की पत्रिकाएं हरेक के लिए
दिल्ली प्रैस कार्यालय फोन नं. : 011-41398888, एक्सटेंशन नं. : 221, 119
ईमेल - subscription@delhipress.in / circulation@delhipressgroup.com

''किसी से नहीं मम्मी.'' आरती सकपका कर बोली.

बेटी के झूठ बोलने पर ममता समझ गई कि वह विकास से ही बातें कर रही थी. इस का मतलब वह जरूर हमारी आंखों में धूल झोंक कर उस से लगातार मिल रही है.

ममता ने रात में हंगामा करना उचित नहीं समझा. सुबह उस ने सारी सच्चाई पति को बता दी. सुरेश कमल समझ गया कि बेटी को कितना भी समझा ले, वह विकास से मिलना नहीं छोड़ेगी. इस से पहले कि समाज में उन की बदनामी हो, उस ने उस के हाथ पीले करने का फैसला कर लिया.

आरती की मां ममता ने भी अपनी जेठानी गीता से उस के बेटे विकास की शिकायत कर दी. ममता की शिकायत पर गीता को बेटे पर बहुत गुस्सा आया. उस ने ममता को भरोसा दिया कि वह विकास को समझाएगी.

गीता ने विकास से इस बाबत बात की तो डरने के बजाय उस ने बेबाक कह दिया कि वह आरती से प्यार करता है और शादी भी उसी से करेगा. विकास की दोटूक बात सुन कर गीता को आश्चर्य हुआ. तब गुस्से में उस ने उसे 2-3 थप्पड़ जड़ दिए और बोली, ''तुझे अपनी बहन के साथ शादी करने की बात कहते हुए शर्म नहीं आई?''

लेकिन विकास अपनी जिद पर अड़ा रहा. मां के गुस्से का उस पर कोई असर न पड़ा.

इधर सुरेश कमल अपनी इज्जत बचाने के लिए बेटी के लिए लड़का खोजने लगा तो आरती घबरा उठी. उस ने एक रोज किसी तरह विकास से मुलाकात की और बताया कि उस के घर वाले जल्द ही उस का रिश्ता तय करने वाले हैं. लेकिन वह किसी और की दुलहन बनने के बजाय मौत को गले लगाना पसंद करेगी. उस ने जो वादा किया है, वह जरूर निभाएगी.

आरती की शादी की बात सुन कर विकास भी घबरा गया. उस ने कहा, ''आरती, तुम्हारी जुदाई मैं बरदाश्त नहीं कर पाऊंगा. फिर तो एक ही रास्ता बचा है.''

''वह क्या?'' आरती ने पूछा.

''यही कि हम साथ जीनेमरने का वादा पूरा करें.''

''शायद, तुम ठीक कहते हो विकास.'' इस के बाद दोनों ने एक साथ आत्महत्या करने का निश्चय किया.

प्यार की विदाई

3 जनवरी, 2021 की रात 10 बजे जब घर के लोग सो गए, तब आरती ने विकास को फोन कर के बात की. विकास ने उसे बताया कि वह घर से निकल रहा है. वह गांव के बाहर अनिल के बाग में उस का इंतजार करेगा. जितनी जल्दी हो सके आ जाए.

आरती ने कमरे में सो रहे अपने मांबाप पर एक नजर डाली. फिर चुपके से दरवाजे की कुंडी खोल कर घर के बाहर आ गई और तेज कदमों से अनिल के बाग की ओर चल पड़ी.

कुछ देर बाद वह बगीचे में पहुंची तो आम के पेड़ के नीचे विकास उस का इंतजार कर रहा था. पेड़ के नीचे कुछ देर तक दोनों बातें करते रहे. उस के बाद विकास ने पेड़ की डाल में रस्सी बांध कर 2 फंदे बनाए. फिर एकएक फंदा गले में डाल कर दोनों फांसी के फंदे पर झूल गए.

एसपी (पश्चिमी) अनिल कुमार

इधर सुबह ममता की आंखें खुलीं तो आरती को चारपाई पर न पा कर उस का माथा ठनका. उस ने घरबाहर आरती की खोज की लेकिन कुछ पता न चला.

उस ने सोचा कहीं विकास आरती को बहलाफुसला कर भगा तो नहीं ले गया. वह विकास के घर जा पहुंची. विकास भी घर से गायब था. अब दोनों के घर वाले विकास और आरती की खोज करने लगे.

ज्ञान सिंह व सुरेश अपने साथियों के साथ दोनों की तलाश में गांव के बाहर अनिल के बाग में पहुंचे तो उन के मुंह से चीख निकल गई. विकास और आरती पेड़ की डाल से बंधी रस्सी के सहारे फांसी के फंदे पर झूल रहे थे. इस के बाद तो पूरे गांव में सनसनी फैल गई. देखते ही देखते सैकड़ों लोग घटनास्थल पर आ गए. ममता और गीता अपने बच्चों को फांसी के फंदे पर झूलता देख कर फफक कर रो पड़ीं.

इसी बीच गांव के किसी युवक ने थाना बिल्हौर पुलिस को सूचना दे दी. सूचना पाते ही थानाप्रभारी प्रेम नारायण बाजपेई घटनास्थल आ गए. उन की सूचना पर एसपी (पश्चिम) अनिल कुमार तथा सीओ अशोक कुमार सिंह भी आ गए.

पुलिस अधिकारियों ने घटनास्थल का बारीकी से निरीक्षण किया तथा दोनों के घर वालों से पूछताछ की.

मृतक विकास की उम्र 22 वर्ष के आसपास थी तथा मृतका आरती की उम्र 20 साल थी. निरीक्षण के बाद दोनों शवों को फांसी के फंदे से उतार कर पोस्टमार्टम के लिए हैलट अस्पताल भिजवा दिया गया.

डीएसपी अशोक कुमार सिंह

थानाप्रभारी प्रेम नारायण बाजपेई को पूछताछ से पता चला कि विकास और आरती प्रेमीप्रेमिका थे. घर वालों को उन का रिश्ता मंजूर न था. अत: दोनों ने आत्महत्या कर ली.

थानाप्रभारी बाजपेई ने आत्महत्या प्रकरण को थाने में दर्ज तो किया, लेकिन दोनों की मौत हो जाने से प्रकरण को बंद कर दिया गया. ●

—कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित

रोग प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाए

MultipreX™

Advanced Formula For
Strong Immunity

कैप्सूल, सिरप, ओरल ड्राप्स एवं पाउडर

200 ml
MULTIPREX Syrup
Multivitamin, Multimineral & Antioxidant Syrup
Multivitamin, Multiminerals & Antioxidant Soft Gelatin Capsules
MultipreX
Advanced Formula for Strong Immunity

प्रतिरक्षा में सुधार, विटामिन और
मिनरल की कमी को पूरा कर रोगो से बचाए

ZEE LABORATORIES LTD.

रोजाना सेवन करे
9896134500
हर प्रमुख दवा विक्रेता के यहां उपलब्ध

(Registered) RNI DELHI 64905/15/DL(C)-14/1391/19-21. P.O. SRT Nagar, ND-55. Posting Date 06-12. Published on 26/02/2021. Pgs. 84

PARLE
Krackjack अब दो नए रोमांचक फ्लेवर्स में
PARLE Krackjack THE ORIGINAL Sweet & Salty Crackers
PARLE Krackjack Jeera
जीरा
बटर मसाला
PARLE Krackjack Butter Masala